सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 200, नई दिल्ली, शनिवार 27 सितंबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आपकी कल्पना आपके पंख हैं, जिनके सहारे आप असंभव को भी पार कर सकते हैं।

03 कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मनेजमेंट की शिकायत भारत के ग्रह राज्य मंत्री से की

06 संतुलित विकास में हरा सोना है बांस

08 युवक सेवाएँ विभाग ने रेड रिबन क्लबों की एडवोकेसी मीटिंग आयोजित की

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

A team is

SCAN ME

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत

tolwaindia@gmail.com

www.tolwa.com

एमसीडी की संपत्ति कर माफी योजना 31 दिसंबर तक बढ़ाई गई

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) ने शुक्रवार को नागरिकों की भारी प्रतिक्रिया का हवाला देते हुए अपनी एकमुश्त संपत्ति कर माफी योजना 2025-26, संपत्तिकर निपटान योजना (सुनियो) को 31 दिसंबर तक बढ़ा दिया।

सदन की बैठक में इस फैसले की घोषणा करते हुए, महापौर राजा इकबाल सिंह ने कहा, ₹सुनियो योजना को करदाताओं से सराहना मिली है, इसलिए हम इसे तीन महीने और बढ़ा रहे हैं। इससे अधिक नागरिकों को अपना बकाया चुकाने का अवसर मिलेगा।"

हालांकि शर्तें अपरिवर्तित रहेंगी, 1 अक्टूबर से 31 दिसंबर के बीच चुकाए गए मूल कर पर अब 2% विलंब शुल्क लगेगा। यह योजना 2020-21 से पहले के लंबित संपत्ति कर बकाया पर ब्याज और जुर्माने से पूरी तरह छूट प्रदान करती है, बशर्ते करदाता चालू वर्ष (2025-26) के मूलधन के साथ-साथ 2020-21 से 2024-25 तक के बकाया का भुगतान कर दें।

जून में इसकी शुरुआत के बाद से, 1.16 लाख करदाताओं ने इस योजना का लाभ उठाया है। कुल मिलाकर, इस वित्तीय वर्ष में 23 सितंबर तक एमसीडी का संपत्ति कर संग्रह 11.63 लाख करदाताओं से ₹2,111.63 करोड़ तक पहुँच गया है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में राजस्व में 22.5% और करदाता आधार में 18% की वृद्धि है।

मलेरिया के मामलों में वृद्धि पर विरोध

इस बीच, आम आदमी पार्टी (आप) के पार्षद डेंगू और मलेरिया के मामलों में वृद्धि के विरोध में मच्छरदानी पहनकर बैठक में शामिल हुए। विपक्ष के नेता अंकुश नारंग ने कहा, ₹दिल्ली में पिछले हफ़्ते मलेरिया के 36 नए मामले दर्ज किए गए हैं, जिससे कुल संख्या 333 हो गई है, जो पिछले पाँच सालों में सबसे ज़्यादा है। डेंगू और चिकनगुनिया के मामले भी बढ़ रहे हैं, फिर भी भाजपा के पास कोई स्पष्ट रणनीति या अभियान नहीं है।"

इस दावे पर प्रतिक्रिया देते हुए, महापौर ने सदन को आश्वस्त किया कि दवाओं का भंडारण, फॉगिंग अभियान और सख़्त क्षेत्रीय निरीक्षण सहित निवारक उपाय बढ़ा दिए गए हैं। उन्होंने कहा, "हम नागरिकों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं और रोग नियंत्रण में लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेंगे।"

दिल्ली सरकार का बड़ा फैसला
पानी बिल पर अब लेट पेमेंट सरचार्ज होगा माफ

दिल्लीवालों के लिए एक अच्छी खबर है. अगर उन्होंने काफी समय से पानी का बिल नहीं भरा है और उसमें लेट पेमेंट सरचार्ज लगा हुआ है तो अगले महीने आपका बिल कम हो सकता है. दिल्ली सरकार ने क्या फैसला लिया है और उसका फायदा कैसे मिल सकता है जानने के लिए पढ़ें खबर...

नई दिल्ली. दिल्ली जल बोर्ड ने शुक्रवार को एक बड़ा निर्णय लेते हुए लंबित पानी के बिलों पर लेट पेमेंट सरचार्ज (LPSC) को माफ करने की व्यापक योजना को मंजूरी दी है. जल मंत्री प्रवेश साहिब सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में तय किया गया कि उपभोक्ताओं को वर्षों से ब्याज दर के कारण बढ़े हुए बिलों से राहत दी जाएगी. यह योजना अगले महीने से लागू होगी और 31 मार्च 2026 तक प्रभावी रहेगी.

उपभोक्ताओं को मिलेगी राहत

घरेलू श्रेणी के उपभोक्ताओं को 31 जनवरी 2026 तक 100% LPSC माफी का लाभ मिलेगा. योजना केवल सरचार्ज पर लागू होगी, मूल बिल की राशि उपभोक्ताओं को चुकानी होगी. दिल्ली जल बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, कुल 87,589 करोड़ के बकाए में से 80,463 करोड़ यानी 91% केवल LPSC है. पहले 5% मासिक कंपाउंडिंग ब्याज दर के कारण बिल लगातार बढ़ते रहे. अब इस ब्याज दर को घटाकर 2% कर दिया गया है, जिससे उपभोक्ताओं को वास्तविक खपत के अनुसार न्यायसंगत बिल मिल सकेगा.

जल मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि यह पहली और आखिरी माफी योजना है. वर्षों से उपभोक्ताओं को ब्याज की वजह से लाखों रुपये के बिल मिल रहे थे. अब ब्याज दर कम की गई है और 100% तक का सरचार्ज माफ किया जा रहा है. इससे जनता को पारदर्शिता और राहत दोनों मिलेगी.

अवैध कनेक्शनों का वैधीकरण

बैठक में अवैध पानी कनेक्शनों को वैध करने का भी फैसला लिया गया. घरेलू श्रेणी में शुल्क को 26,000 से घटाकर मात्र 1,000 और गैर-घरेलू श्रेणी में 61,000 से घटाकर 5,000 कर दिया गया है. यह योजना भी 31 मार्च 2026 तक लागू रहेगी. इससे न केवल लाखों परिवारों को सीधा लाभ मिलेगा, बल्कि राजस्व चोरी पर रोक लगेगी और यमुना प्रदूषण नियंत्रण में भी मदद मिलेगी.

नए कनेक्शन और संचालन में सुधार

वर्तमान में DJB के पास लगभग 1 लाख नए कनेक्शन के आवेदन लंबित हैं, जिससे सालाना 51 करोड़ का नुकसान हो रहा है. इस समस्या के समाधान के लिए अब 1,000 से अधिक लाइसेंसधारी प्लंबर उपलब्ध कराए जाएंगे, ताकि उपभोक्ताओं को शीघ्र कनेक्शन मिल सके.

वित्तीय अनुशासन और जवाबदेही

दिल्ली जल बोर्ड का कहना है कि पानी की सफाई और सप्लाई पर खर्च 101 प्रति लीटर तक पहुंचता है. ऐसे में संग्रहण क्षमता बढ़ाकर और सरचार्ज पर निर्भरता घटाकर बोर्ड को वित्तीय रूप से स्थिर और आत्मनिर्भर बनाया जाएगा.

जनता को भरोसा और नई शुरुआत

इस योजना से लाखों उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी. DJB की वसूली क्षमता मजबूत होगी और उपभोक्ता व बोर्ड के बीच बकाया विवाद घटेंगे. संपत्ति पंजीकरण के समय पानी का बिल अनिवार्य करने का फैसला भी लिया गया है, ताकि बकाए अनिश्चित काल तक न लटकें. जल मंत्री ने कहा कि यह योजना जनता और सरकार के बीच भरोसा बनाने की दिशा में कदम है. हम साफ करना चाहते हैं कि यह आखिरी मौका है. इसके बाद कोई नई योजना नहीं लाई जाएगी।

स्टॉल प्रस्ताव :

सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :

रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025

* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :

* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना

नवरात्रि में माताराणी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन

- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071

सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

"श्री श्री दुर्गा शरणम" तैंतीसवां सार्वजनिन दुर्गोत्सव

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके शहर उत्तम नगर में 'उत्तम नगर कालीबाड़ी द्वारा शनिवार दिनांक 27 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025 बृहस्पतिवार तक सी-50, मनसा राम पार्क, नई दिल्ली-59 में श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा एवम्-20 अक्टूबर, 2025 सोमवार श्री श्री काली माँ की पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सबसे हार्दिक निवेदन है कि आप सब इस विशाल आयोजन में सम्मिलित होकर माँ दुर्गा एवम्-काली माँ का आर्शीवाद प्राप्त करें और इस आयोजन को सफल बनायें।

प्रिय भक्तों!

हमें आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तम नगर कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा एवं काली पूजा समारोह का आयोजन कर रही है। हम आपके परिवार और मित्रों को 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक हमारे काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

भवदीय

उत्तम नगर कालीबाड़ी,
मलय डे (अध्यक्ष) 7217666618
जयंत डे (सचिव) 9654385888
पिंकी कुंडू (सदस्य)

पूजा कार्यक्रम-2025

27 सितंबर 2025, (शनिवार). बोधन

28 सितंबर 2025, (रविवार) षष्ठी आमंत्रण और अधिबास

29 सितंबर 2025, (सोमवार) सप्तमी पूजा

30 सितंबर 2025, (मंगलवार) अष्टमी और संधि पूजा

1 अक्टूबर 2025, (बुधवार) नवमी पूजा

2 अक्टूबर 2025, (गुरुवार) दशमी पूजा और विसर्जन

पुष्पांजलि 11.00 बजे से 1:00 बजे तक,
प्रसाद वितरण 1.00 बजे से 1:30 बजे तक,
भोग वितरण 1.30 बजे से 3.00 बजे तक।
संध्या आरती- 7.00 बजे

श्री श्री काली पूजा सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025

कार्यक्रम का स्थान:

कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

You're Invited!

Anandomela Food Fiesta 2025

Celebrate the spirit of Durga Puja with food, fun, and festivity!

Join us at our much-awaited Anandomela Food Fiesta, where the aroma of tradition meets the joy of celebration! Bring your favorite homemade delicacies, share your culinary skills, and enjoy a vibrant evening with your community.

Date: 28.09.2025
Venue: KALI BARI (uttam nagar)
Time: 7.00PM

Whether you're a seasoned cook or just love feeding people, we welcome your participation with open arms!

For stall bookings and participation details,
Please contact:
Mrs.Pinki Kundu- 7053533169
Mrs.Tithi Ghosh- 9013088489

Let's make this Durga Puja even more delicious and memorable!

Regards
Jayant Dey
General Secretary

विश्व पर्यटन दिवस आज

घूमना सिर्फ आपको नई जगहों को देखने का अवसर नहीं देता, बल्कि ये आपको नए लोगों से मिलने, उस जगह के रहन-सहन के बारे में जानने, वहां की संस्कृति को पहचानने का अवसर भी देता है। इसलिए पर्यटन यानी टूरिज्म को बढ़ावा देना बेहद जरूरी है। इसलिए हर साल विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है। विश्व पर्यटन दिवस हर साल 27 सितंबर को मनाया जाता है। यह एक ऐसा दिन है जब दुनिया भर में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने और इसके महत्व को समझने के लिए लोगों में जागरूकता फैलाई जाती है। इस दिन का उद्देश्य पर्यटन के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक फायदों को बढ़ावा देना है।

विश्व पर्यटन दिवस का इतिहास

==========

वर्ल्ड टूरिज्म डे की शुरुआत 1980 में हुई थी। यह संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के पहल के तहत शुरू किया गया था। इस दिन को मनाने के लिए 27 सितंबर का दिन इसलिए चुना गया, क्योंकि इसी दिन 1970 में संयुक्त राष्ट्र पर्यटन संगठन की स्थापना की गई थी। इस संगठन का उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना और इसके विकास को बढ़ावा देना है।

विश्व पर्यटन दिवस का महत्व

==========

वर्ल्ड टूरिज्म डे पर्यटन के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक लाभों को उजागर करता है। पर्यटन लोगों को अलग-अलग जगहों की संस्कृति का अनुभव लेने और उस बारे में और जागरुक बनाने में मदद करता है। ये लोगों के लिए रोजगार के अवसर खोजने और अर्थव्यवस्था को भी आगे बढ़ाने में मदद करता है। इस दिन कोशिश की जाती है कि पर्यटन उद्योग को बढ़ावा

मिले, ताकि इससे जुड़े लोगों को काम करने के अच्छे अवसर मिलें और उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर बने।

विश्व पर्यटन दिवस क्यों महत्वपूर्ण है?

==========

=

आर्थिक विकासः पर्यटन से लाखों नौकरियां पैदा होती हैं और वैश्विक स्तर पर स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदानः यह विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के बीच समझ, सम्मान और प्रशंसा को बढ़ावा देता है।

सामाजिक सशक्तिकरणः जिम्मेदार पर्यटन समुदायों को अपनी विरासत और परंपराओं को संरक्षित करने में मदद करता है।

पर्यावरण संरक्षणः टिकाऊ यात्रा पद्धतियां भविष्य के लिए प्रकृति और संसाधनों की रक्षा करने में मदद करती हैं।

शैक्षिक मूल्यः यात्रा दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है तथा इतिहास, भूगोल और वैश्विक मुद्दों पर सीखने को प्रेरित करती है।

शरणागति और परमात्मा अनुभव का सरल मार्ग

१. शरणागति का मूलः- शरणागति का अर्थ है पूर्ण स्वीकृति — यह न केवल मन से मानना है, बल्कि भीतर से यह स्वीकार कर लेना कि "मैं हमेशा से परमात्मा में हूँ, शरीर या मन नहीं हूँ।" यह मानना कोई क्रिया नहीं है; इसमें "मैं करता हूँ" या "मैं नहीं करता" जैसी इच्छाएँ और अहंकार का स्थान नहीं ।जब जीव इस चेतन निर्णय तक पहुँचता है, तो वही पूर्ण शरणागति है। कच्ची शरणागति तब होती है जब यह मान्यता मन और बुद्धि से आंशिक रूप से बनी रहती है, पर बाहरी परिस्थितियाँ और आदतें उसे बार-बार डोलाती हैं।

२. कच्ची और पक्की शरणागति

1. कच्ची शरणागति

१. मन और बुद्धि अभी पूर्ण रूप से स्थिर नहीं।

२. साधना, चिंतन, जप और ध्यान की आवश्यकता रहती है।

. साधना का कार्य हैः जड़ता, भ्रम और संसार की वास्तविकता को दिखाना।

४. वैराग्य अभ्यास और अनुभव से आता है — जब वास्तविकता समझ आती है कि जिसे हम अमृत मानते थे, वह विष का काम करता है, तब आकर्षण स्वतः घट जाता है।

2. पक्की शरणागति

१. यह स्वयं चेतन के निर्णय से होती है।

२. "मैं चेतन हूँ, शरीर नहीं" — यह स्वीकृति स्थायी और अटल हो जाती है।

. न करने का भाव और न न करने का भाव — दोनों समाप्त।

साधना, अभ्यास या गुरु का निर्देश अब केवल मार्गदर्शन के रूप में होते हैं; आवश्यकता नहीं। सभी क्रियाएँ शरीर से स्वतः होती हैं। उनके मूल में पर इच्छा (प्रकृति/प्रारब्ध) और ईश्वर इच्छा रहती है।

. साधना का स्थानः-

1. साधना केवल जड़ता और भ्रम को दिखाने का साधन है।

2. साधना क्रिया है; चेतन से संबंधित नहीं।

3. जब चेतन निर्णय ले लेता है, तब साधना अप्रासंगिक हो जाती है।

4. परंतु साधना तब तक आवश्यक है जब तक जीव कच्ची शरणागति में है, ताकि अहंकार और भ्रम धीरे-धीरे घटें।

४. वैराग्य और विवेकः- वैराग्य केवल अभ्यास से नहीं आता, बल्कि सच्ची समझ से आता है। समझ = संसार और जड़ की वास्तविकता का प्रत्यक्ष अनुभव। यह समझ अनुभव के साथ चलने से विवेक जागृत करती है। विवेक से झूठी मान्यताएँ हटती हैं, और आत्मा का अनुभव खुलकर सामने आता है।

५. क्रियाएँ और इच्छाः- शरीर अपनी क्रियाएँ करता है; यह स्वतः होता है। इन क्रियाओं के पीछे पर इच्छा और ईश्वर इच्छा रहती है।

1. पर इच्छा = प्रकृति का हिसाब-किताब, संचित और प्रारब्ध कर्म।

2. ईश्वर इच्छा = जो घट रहा है वह मेरे लिए हितकारी है।

3. इसलिए न करने का भाव और न न करने का भाव — कोई आवश्यक नहीं। केवल कर्तापन का त्याग और चेतन में स्थिरता पर्याप्त है।

६. गुरु और मार्गदर्शनः- सच्चा गुरु मिलना कठिन है परंतु निराकार गुरु तत्व हमारे भीतर सदैव है। शरणागति में गुरु की आवश्यकता केवल मार्गदर्शन के रूप में होती है; वास्तविक मार्गदर्शन चेतन का निर्णय स्वयं कर देता है। साधक को केवल शास्त्रों और संत वचन के माध्यम से आत्म-चिंतन करना चाहिए।

७. संपूर्ण निष्कर्ष

1. पूर्ण शरणागति = स्वयं चेतन का निर्णय, बिना किसी क्रिया या अहंकार के।

2. कच्ची शरणागति = मन-बुद्धि की अस्थिर मान्यता, जहाँ साधना और विवेक आवश्यक हैं।

3. साधना केवल जड़ की वास्तविकता दिखाने का साधन; चेतन को बदलने का नहीं।

4. वैराग्य और विवेक सच्ची समझ और अनुभव से जागृत होते हैं।

5. क्रियाएँ शरीर से स्वतः होती हैं, उनका नियंत्रण या इच्छा नहीं करना।

6. गुरु का मार्गदर्शन सहायक है, पर निर्णय स्वयं चेतन द्वारा लिया जाता है।

अंततः:

शरणागति का यह तरीका सबसे सरल, सीधे और शीघ्र मार्ग है। इसमें कोई जटिल साधना, कठोर अभ्यास या प्रदर्शन नहीं, केवल स्वयं चेतन का स्थिर निश्चय आवश्यक है।

अजवायन के चमत्कारिक गुण

अजवायन उष्ण, तीक्ष्ण, जठराग्निवर्धक, उत्तम वायु कफनाशक, आमपाचक व पित्तवर्धक है । वर्षा ऋतु में होने वाले पेट के विकारों, जोड़ों के दर्द, कृमि- रोग तथा कफजन्य विकारों में अजवायन खूब लाभदायी है ।

औषधीय प्रयोगः-

1. भोजन से आधे घंटे पहले अजवायन में थोड़ा-सा काला नमक मिलाकर गुनगुने पानी के साथ लेने से मंदाग्नि, अजीर्ण, अफरा (gas), पेट के दर्द एवं अम्लपित्त (hyperacidity) में राहत मिलती है।

2. भोजन के पहले कौर के साथ अजवायन खाने से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है,

3. अजवायन और तिल समभाग मिलाकर दिन में १-२ बार खाने से अधिक मात्रा में व बार-

बार पेशाब आने की समस्या में राहत मिलती है,

4. अजवायन और एक लौंग का चूर्ण शहद मिलाकर चाटने से उलटी में लाभ होता है,

5. १५ से ० दिनों तक भोजन के बाद या बीच में गुनगुने पानी के साथ अजवायन लेने से मासिक धर्म के समय होनेवाली पीड़ा में राहत मिलती है । (यदि मासिक अधिक आता हो, गर्मी अधिक हो तो उक्त प्रयोग न करें । सुबह खाली पेट २ से ४ गिलास पानी पीने से अनियमित मासिक स्राव में लाभ होता है ।)

उपरोक्त सभी प्रयोगों में अजवायन की सेवन मात्राः आधा से २ ग्राम ही करना है।

अजवायन का तेल

लाभः अजवायन के तेल की मालिश संधिवात (arthritis) और गठिया में खूब लाभदायी है।

तेल बनाने की विधि : २५० मि.ली. तिल के तेल को गरम करके नीचे उतार लें । इसमें १५ से २० ग्राम अजवायन डालकर कुछ देर ढक के रखें फिर छान लें । अजवायन का तेल तैयार ! इससे दिन में २ बार मालिश करें

सावधानी : ग्रीष्म व शरद ऋतु में तथा पित्त प्रकृति वालों को अजवायन का उपयोग अत्यल्प मात्रा में करना चाहिए ।

जीत के भी जीत नहीं सकता...!

100 रु 'रिश्वत' का 39 साल चला मुकदमा,
न्याय मिलने में होती देरी सबसे बड़ा सदमा।
तारीख पे तारीख लगती और लगता मजमा,
पारिवारिक आर्थिक स्थिति बिगडा हाजमा।

कभी लोकायुक्त के जाल में फंसे अवाधिया,
निचली अदालत दोषी ठहराया गज़ब हुआ।
जब स्वयं 'निर्दोष' मान परिवार सजग हुआ,
अब छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने उन्हें बरी किया।

अपर्याप्त सबूत एवं तमाम कानूनी खामियां,
समय के साथ तबाह हो गई ये जिंदगानिया।
खोए समय की भरपाई कोई ना कर सकता,
यूं कभी कोई जीत के भी जीत नहीं सकता।
(संदर्भ-खोखली जीत-83 की उम्र में मिला न्याय)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

उलझने की कोशिश न कर

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

ज़िंदगी को जी, उलझने की कोशिश न कर,
अपनी चाल चल,भागने की कोशिश न कर।
दिल खोलकर साँस ले, खुली हवा के साथ,
अंदर-ही-अंदर , घुटने की कोशिश न कर।
कुछ बातें छोड़ दे, समय के फैसले पर,
हर गुत्थी सुलझाने की, कोशिश न कर।
सादगी रख जीवन में, दिखावा क्या करना,
मन साफ रख, फंसाने की कोशिश न कर।
ज़िंदगी है बही खाता, जमा कर भले काम,
खाली थैली भरने की, नाहक कोशिश न कर।

गाजियाबाद पंचशील एनक्लेव वार्ड नंबर 29 में बंदरों के आतंक से कॉलोनी वासियों में डर इतना कि वनविभाग किसी बड़ी घटना इंतजार कर रहा है

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद में बंदरों से परेशानी होने पर सबसे पहले नगर निगम के हेल्पलाइन नंबर पर शिकायत करें. साथ ही, घरेलू उपायों जैसे मिर्च पाउडर, नींबू के छिलके और लहसुन का इस्तेमाल करके बंदरों को दूर भगा सकते हैं. तेज आवाज, फ्लैश लाइट या सफेद बोतल का उपयोग भी किया जा सकता है.

नगर निगम में शिकायत दर्ज करें

हेल्पलाइन नंबरः 1800 180 3012 आप नगर निगम को शिकायत करने के लिए हेल्पलाइन नंबर पर कॉल कर सकते हैं. यह समस्या को हल करने का एक आधिकारिक तरीका है गाजियाबाद में बंदरों से परेशान होने पर आप कई तरह के उपाय अपना सकते हैं, जिसमें स्थानीय प्रशासन से शिकायत करना और कुछ घरेलू तरीकों का इस्तेमाल करना शामिल है।

प्रशासन से संपर्क करें 18001803012

यदि गाजियाबाद प्रशासन ना सुने तो 1076 आप मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर पर शिकायत भी दर्ज करवा सकते हैं

नगर निगमः गाजियाबाद में बंदरों के उत्पात से निपटने के लिए आप नगर निगम से शिकायत कर सकते हैं। लोनी नगर पालिका जैसे कुछ क्षेत्रों में, बंदरों को पकड़ने के लिए टेंडर भी जारी किए गए हैं।

विशेषज्ञ सेवाः बंदरों को सुरक्षित और मानवीय तरीके से पकड़ने और स्थानांतरित करने के लिए व्यावसायिक मंकी कैचर्स की सेवाएँ ली जा सकती हैं। जस्टडायल

8888888888 और मंकीकैचर.इन जैसी कंपनियाँ ऐसी सेवाएँ प्रदान करती हैं।

कोर्ट का हस्तक्षेपः हाल ही में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने गाजियाबाद में बंदरों के आतंक को लेकर अधिकारियों की लापरवाही पर सख्त टिप्पणी की है। यह दर्शाता है कि इस मुद्दे पर अदालती कार्रवाई भी की जा रही है।

रोकथाम के उपाय

भोजन को सुरक्षित रखें: बंदर अक्सर वहाँ आते हैं जहाँ उन्हें आसानी से खाना मिल जाता है। अपने कचरे के डिब्बों को सुरक्षित रखें, खुले में खाना न छोड़ें और बंदरों को खाना खिलाने से बचें।

जागरूकता फैलाएं: पड़ोसियों के साथ मिलकर बंदरों को खाना न खिलाने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ। समुदाय के प्रयास बंदरों को आकर्षित करने की संभावना को काफी कम कर सकते हैं।

कचरे का सही निपटान करें: कचरे के डिब्बे और अन्य खाद्य अपशिष्ट को सही से बंद करके रखें। यदि आप खरीदारी के लिए प्लास्टिक बैग का उपयोग करते हैं, तो उन्हें घर के अंदर रखें क्योंकि बंदर अक्सर प्लास्टिक बैग को भोजन का स्रोत मान लेते हैं।

घरेलू तरीके

बाधाएं लगाएं: घर में प्रवेश करने से रोकने के लिए बालकनी और खिड़कियों पर जाली या जाल लगा सकते हैं।

ध्वनि का प्रयोग: बंदर तेज आवाज से डरते हैं। तेज आवाज करके भी उन्हें भगाया जा सकता है।

स्पाइक्स का उपयोग कुछ जगहों पर बालकनी और छतों पर मंकी स्पाइक्स लगाए जाते हैं, जो बंदरों को बैठने से रोकते हैं।

तेज गंध वाले घोल का प्रयोगः मिर्ची पाउडर, अदरक, लहसुन और प्याज के घोल का छिड़काव उन जगहों पर करें जहाँ बंदर अक्सर आते हैं।

गुलेल रखें: कई लोग बंदरों को भगाने के लिए गुलेल का इस्तेमाल करते हैं।

सावधानियाँ

भोजन न दें: बंदरों को कभी भी खाना न खिलाएं, इससे उनकी निर्भरता बढ़ती है।

आक्रामक न हों: बंदरों को भगाते समय आक्रामक न हों। अगर आप उन्हें डराते हैं, तो वे आप पर हमला कर सकते हैं।

सुरक्षित दूरी बनाए रखें: बंदरों से हमेशा सुरक्षित दूरी बनाए रखें।

यदि बंदर आपको काट लें, तो तुरंत किसी अस्पताल में जाएँ, क्योंकि रेबीज का खतरा हो सकता है।

पत्रकार हंसराज

जटामांसी मानसिक तनाव और नींद की समस्या का आयुर्वेदिक समाधान

जटामांसी एक आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी है, जो मुख्य रूप से मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने, तनाव कम करने और अच्छी नींद लाने में मदद करती है। इसे तपस्विनी और मांसिक बलवर्धिनी भी कहा जाता है, क्योंकि यह मस्तिष्क को शांत करने और मानसिक शक्ति बढ़ाने में सहायक होती है।

जटामांसी के लाभ

1. मानसिक तनाव और चिंता कम करती हैः- जटामांसी में प्राकृतिक एडेप्टोजेनिक (Adaptogenic) गुण होते हैं, जो तनाव और चिंता को कम करने में मदद करते हैं। यह कॉर्टिसोल हार्मोन (तनाव हार्मोन) के स्तर को संतुलित रखती है और दिमाग को शांत करती है।

2. अच्छी नींद लाने में सहायकः- अनिद्रा (Insomnia) के लिए जटामांसी एक बेहतरीन औषधि मानी जाती है। यह नर्वस सिस्टम को शांत कर गहरी और बेहतर नींद लाने में मदद करती है। सोने से पहले जटामांसी तेल की मालिश करने से दिमाग शांत होता है और नींद अच्छी आती है।

3. मस्तिष्क की शक्ति और याददाश्त बढ़ाएः- यह दिमाग को तेज करने, एकाग्रता बढ़ाने और याददाश्त को मजबूत करने में मदद करती है। बच्चों और छात्रों के लिए भी यह बहुत फायदेमंद होती है।

4. डिप्रेशन में राहतः- इसमें एंटीडिप्रेसेंट गुण होते हैं, जो उदासी और अवसाद को दूर करने में सहायक होते हैं। यह सिरोटोनिन और डोपामाइन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर को संतुलित करने में मदद करती है, जिससे मूड बेहतर होता है।

5. सिरदर्द और माइग्रेन में उपयोगीः- जटामांसी सिर दर्द, माइग्रेन और चक्कर आने की समस्या में राहत देती है। इसे तुलसी और शंखपुष्पी के साथ लेने से और अधिक लाभ मिलता है।

जटामांसी का सेवन कैसे करें?

1. जटामांसी पाउडर (चूर्ण):- से चम्मच चूर्ण को गुनगुने दूध या शहद के साथ रात को सोने से पहले लें। इसे ब्रह्मि और शंखपुष्पी के साथ मिलाकर लेने से मानसिक स्वास्थ्य को अधिक लाभ होता है।

2. जटामांसी तेलः- इसे सिर की मालिश में उपयोग किया जा सकता है, जिससे नींद अच्छी आती है और दिमाग शांत होता है। तनाव कम करने के लिए अरोमाथेरेपी (सुगंध चिकित्सा) में भी जटामांसी तेल का उपयोग किया जाता है।

3. जटामांसी का काढ़ा

1 चम्मच जटामांसी जड़ को 2 कप पानी में उबालें और आधा रह जाने पर पी लें। इसे रोजाना पीने से मानसिक शांति और नींद में सुधार होता है।

सावधानियाँः- अधिक मात्रा में सेवन करने से उनींदापन या सुस्ती महसूस हो सकती है।

निष्कर्षः- जटामांसी एक प्रभावी आयुर्वेदिक औषधि है, जो मानसिक तनाव, चिंता, अनिद्रा और डिप्रेशन को दूर करने में मदद करती है। इसका नियमित सेवन करने से दिमाग शांत रहता है और नींद की गुणवत्ता में सुधार होता है।

मानवता के नाते दलित-मजदूर वर्ग की तीखी प्रतिक्रिया : सिर्फ़ दिखावे से नहीं चलेगा काम - केवल पत्र और दिखाबटी बयान नहीं, ज़रूरत है ज़मीनी सेवा की

गठबंधन के सभी नेताओं से सीधी अपील – फिलीस्तीन के संकटग्रस्त क्षेत्रों में जाकर भूख और पीड़ा से जूझ रहे ग़रीब बेसहारा लोगों की सेवा करें

सोनिया गांधी, ममता बनर्जी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, अखिलेश यादव, लालू यादव जैसे सभी नेताओं के पास इतनी संपत्ति और संसाधन हैं कि यदि ये सब चाहें तो फिलीस्तीन के सभी बेघर और भूखे लोगों को वर्षों तक भोजन उपलब्ध करा सकते हैं –

नई दिल्ली, संजय साग़र सिंह। ट्रंप-फिलिस्तीन संघर्ष के बीच फिलीस्तीन में भुखमरी, बेघर लोगों की बढ़ती संख्या और लगातार बिगड़ते हालात को लेकर अब देश के भीतर भी आवाजें तेज़ हो रही हैं। दलित, गरीब और मजदूर वर्ग से जुड़े संगठनों और लोगों ने गठबंधन की निष्क्रियता पर गहरी नाराजगी जताते हुए कहा है कि अब समय आ गया है कि गठबंधन के नेता सिर्फ़ बयानबाज़ी न करें, बल्कि मानवता के नाते सेवा का नेतृत्व करें।

लोगों का कहना हैं कि सोनिया गांधी, ममता बनर्जी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, अखिलेश यादव, लालू यादव और मल्लिकार्जुन खड़गे जैसे प्रमुख नेताओं से सीधी अपील की गई है कि वे फिलीस्तीन के संकटग्रस्त क्षेत्रों में जाकर भूख और पीड़ा से जूझ रहे लोगों की सेवा करें। इन सभी नेताओं के पास इतनी संपत्ति और संसाधन हैं कि यदि चाहें तो वे फिलीस्तीन के सभी बेघर और भूखे लोगों को वर्षों तक भोजन उपलब्ध करा सकते हैं।

केवल पत्र और दिखाबटी बयान नहीं, ज़रूरत है ज़मीनी सेवा की

उन्होंने आरोप लगाया है कि गठबंधन का रुख केवल प्रतीकात्मक है और गरीबों के हितेषी इन सभी नेताओं की प्रतिक्रियाएं महज़ दिखावा बनकर रह गई हैं। भूख और तबाही के बीच फिलीस्तीनियों के लिए न तो कोई राहत सामग्री भेजी गई, न ही सेवा कार्यों की पहल की गई। गठबंधन के सभी नेताओं और सपोटर्स की चुप्पी और निष्क्रियता को उन्होंने मानवता और नैतिकता का त्यागह करार दिया।

उन्होंने आगे कहा, जब 55,000 से अधिक फिलीस्तीनी मारे जा चुके हैं, लाखों लोग विस्थापित हैं और ग़ाज़ा जैसे इलाकों में बुनियादी सुविधाएं तक ध्वस्त हो चुकी हैं, तो ऐसे में गठबंधन के नेताओं का केवल प्रेस रिलीज़ या ट्विटर पोस्ट करना अस्वीकार्य है।

राजनीति नहीं, सेवा हो मार्गदर्शक

उन्होंने यह भी दावा किया कि गठबंधन की फिलीस्तीन पर नीति सेवा मूल्यों पर नहीं, बल्कि कुछ अंतरराष्ट्रीय संबंधों विशेषकर पाकिस्तानी चश्मा पहने डोनाल्ड ट्रंप से व्यक्तिगत समीकरणों से प्रेरित दिखती है। उन्होंने चेताया कि व्यक्तिगत कूटनीति को राष्ट्रीय नीति का आधार नहीं बनाया जा सकता।

मानवता के नाते दलित-मजदूर वर्ग ने इस बात को भी रेखांकित किया कि भारत का ऐतिहासिक रुख हमेशा फिलीस्तीन के पक्ष में रहा है। 1988 में फिलीस्तीन को औपचारिक मान्यता देना, संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों का समर्थन और दो-राष्ट्र समाधान की वकालत इसका प्रमाण है। उन्होंने जोर देकर कहा कि डॉ बाबा साहब के संविधान में अंतरराष्ट्रीय शांति और मानवीय अधिकारों की रक्षा को नीति के केंद्र में रखा गया है, जिसे आज पुनः गठबंधन के सभी नेताओं को अपनाने की आवश्यकता है।

सेवा से ही होगा नैतिक मूल्य सिद्ध

बयान में यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि आज भारत के गठबंधन के पास मौका है कि वह अपने नैतिक मूल्यों और सेवा भाव का परिचय दे। ये चाहे तो ना केवल भारत में बल्कि वैश्विक मानवीय संकटों में भी अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं।

फ्रांस, पुर्तगाल, ऑस्ट्रेलिया जैसे देश फिलीस्तीन को मान्यता देकर आगे बढ़ चुके हैं। 193 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र में 150 से अधिक देश पहले ही फिलीस्तीन को राष्ट्र के रूप में मान्यता दे चुके हैं। ऐसे में भारत के विपक्षी दलों को अपनी ऐतिहासिक भूमिका याद रखनी चाहिए और शब्दों की बजाय कार्यों से अपनी प्रतिबद्धता साबित करनी चाहिए।

उन्होंने गठबंधन से आह्वान किया है कि वह अब मानवता की पुकार को समझे और ग़ाज़ा सहित अन्य संकटग्रस्त क्षेत्रों में सेवा कार्यों की पहल करे। बयान में यह भी कहा गया कि नेतृत्व का मूल्य केवल संसद या मंचों पर नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में ज़मीन पर तय होता है।

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मनेजमेंट की शिकायत ग्रह राज्यमंत्री से की

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने संजय सम्राट के नेतृत्व में कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मनेजमेंट की शिकायत भारत के ग्रह राज्य मंत्री, श्री नित्यानन्द राय जी से करी और साथ ही दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा टैक्सी बसों में पेनिक बटन के द्वारा हो रहें भ्रष्टाचार की शिकायत करके उन्हें ज्ञापन भी दिया.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की, कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मेनेजमेंट (CAQM) द्वारा 1.11.2026 से दिल्ली के अंदर BS 4 डीजल (AITP) बसों की एंट्री रोकने के आदेश 3 जून 2025 को जारी कर भारत के बस मालिकों का आर्थिक और मानसिक शोषण करने की साजिश करी है. इसकी भी संभवाना की बस बनाने वाली कम्पनियो को बड़ा फायदा देने की कोशिस भी CAQM कर रहा है, क्योंकि जब पुरानी बसें बंद होंगीं तभी ट्रांसपोर्टर्स मजबूरी में

नई बसें खरीदेंगे.

संजय सम्राट का कहना है की हमारी डीजल BS 4 बसें 2020 मार्च तक दिल्ली के पडोसी राज्यों में पंजीकृत हुई थी.क्योंकि पिछले 10 वर्षो से अधिक दिल्ली में कोई भी डीजल बसें और टेम्पो ट्रेवलर दिल्ली में रजिस्ट्रेशन नहीं हो रहे थे. हमारे दिल्ली के ट्रांसपोर्टर्स नें पडोसी राज्यों में डीजल BS 4 बसें रजिस्ट्रेशन कराई थी.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट नें ग्रह राज्य मंत्री से मांग करी है की हमारी BS 4 डीजल बसों की जितनी उम्र रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट में है उतनी उनको चलती रेहने दी जाए.

और इस आदेश पर पुनर्विचार करके इस आदेश को निरस्त करवाया जाए.

और वास्तव में प्रदूषण करने वाले हवाई जहाज की उम्र चेक करके उनका प्रदूषण चेक कराया जाए. बल्कि ये हवाई जहाज BS 4 हैं या BS 2 इनकी भी जांच की जाए. दिल्ली में प्रदूषण रोकने के लिए कृत्रिम बारिश या अन्य उपाय किये जाये.

इस विषय में ग्रह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी ने डीजल BS 4 बसों को 2026 से बंद ना करा जाए और टैक्सी टेम्पो ट्रेवलर को ग्रेप सिस्टम से हमेशा के लिए बाहर करने के लिए कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मैनेजमेंट के चेयरमैन से बात करने और पत्र लिखकर हमारी समस्याओ का समाधान करने का अस्वासन दिया हैं.

पेनिक बटन के मामले में उन्होंने मोटर व्हीकल एक्ट में संशोधन करने के लिए भी अस्वासन दिया. क्योंकि यें पेनिक बटन दिल्ली की टैक्सी बसों में दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा लगाया जाता हैं जिसके 9000 रुपए से लेकर 22000 रुपए तक लिए जाते हैं. जबकि आज तक इस पेनिक बटन दबाने से कुछ नहीं होता क्योंकि आज तक इसका कोई कॉल सेंटर नहीं बना हैं. सिर्फ 5 रुपए के बटन लगाकर अरबो रुपए टैक्सी बसों वालो से लगातार लिए जा रहें हैं. यें भ्रष्टाचार सन 2018 से हो रहा हैं. इस वजह से लाखों दिल्ली की टैक्सी बसें पडोसी राज्यों में रजिस्ट्रेशन हो रही हैं।

श्री धार्मिक लीला कमेटी द्वारा जनक दूत आगमन, अहिल्या उद्धार, अष्ट सखी संवाद, गिरजा पूजन, सीता स्वयंवर, रावण- बाणासुर संवाद, लक्ष्मण-परशुराम संवाद के साथ रामलीला मंचन हुआ

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: लालकिला मैदान स्थित माधवदास पार्क में श्री धार्मिक लीला कमेटी द्वारा सोमवार को भव्य रामलीला मंचन हुआ। जनक दूत आगमन, अहिल्या उद्धार, अष्ट सखी संवाद, गिरजा पूजन, सीता स्वयंवर, रावण- बाणासुर संवाद, लक्ष्मण-परशुराम संवाद मंचन के साथ हुआ।

धीरज धर गुप्ता (महासचिव) बताते हैं कि इस साल 102 साल पूरे होने पर इस साल की सभी झलकियों और तैयारियों को साझा किया।

विशेष मेहमान जो इसमें शामिल हुए आशीष सूद – मंत्री, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (दिल्ली सरकार), मनोज तिवारी सदस्य, लोकसभा, हर्ष मल्होत्रा (लोकसभा सदस्य), लोकेश मुनि, शिल्पा रायज़ादा (अभिनेत्री) मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। मंचन के दौरान की प्रस्तुतियों शिव पार्वती प्रसंग, विश्वमोहिनी स्वंयवर, नारद मोह, रावण कुंभकर्ण तपस्या, रावण - वेदवती संवाद ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया और रामलीला को भव्य बना दिया।

श्री धार्मिक लीला कमिटी (रजि.), लाल किला मैदान के सभी सदस्यों आमंत्रित हैं।

समिति पदाधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष रामलीला के मंचन में पारंपरिक प्रसंगों के साथ-साथ तकनीकी प्रयोगों का भी विशेष ध्यान रखा गया है, ताकि दर्शकों को अधिक आकर्षक और जीवंत अनुभव मिल सके।

सड़क पर कफ़न बुनती सफ़ेद लाइट

"सड़क हादसों की अनकही कहानी – सफ़ेद हेडलाइट्स का सच"

रात में तेज़ सफ़ेद हेडलाइट्स सिर्फ़ आँखों को नहीं, बल्कि जीवन को भी चौंधिया देती हैं। हर साल हजारों लोग इसके कारण हादसों में मरते हैं। यह केवल व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे परिवारों की टूटी ज़िंदगी है। समाधान आसान है – पीली हेडलाइट लगाएँ, तेज़ सफ़ेद लाइट से बचें, सरकार नियम बनाए और आम लोग जागरूक हों। जनजन गुप्ता अभियान का संदेश साफ़ है: "सफ़ेद चमक नहीं, पीली दोस्ती चाहिए!" सड़कें सुरक्षित हों, परिवार बचें और रात का सफ़र डर-मुक्त बने।

- डॉ सत्यवान सौरभ

रात का सफ़र हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है। अंधेरा, धुंध, बारिश – ये सभी कारक सड़क पर जोखिम बढ़ाते हैं। लेकिन आज एक नया और अनदेखा खतरा हमारी सड़कों पर फैल रहा है – वाहनों की तेज़ सफ़ेद हेडलाइट्स। यह चमक केवल आँखों को चुभती नहीं, बल्कि कई बार सड़क हादसों का कारण बनती है।

भारत में हर साल लगभग डेढ़ लाख लोग सड़क हादसों में अपनी जान गंवाते हैं और लाखों लोग घायल होते हैं। इनमें से बड़ी संख्या रात के समय होती है। सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ मानते हैं कि इन हादसों में सफ़ेद हेडलाइट्स की तेज़ चमक की बड़ी भूमिका होती है। यह केवल तकनीकी समस्या नहीं है। यह परिवारों की टूटन, बच्चों की बेबसी और मात-पिता की पीड़ा का कारण बनती है।

सफ़ेद हेडलाइट्स की रोशनी पारंपरिक पीली रोशनी की तुलना में कहीं अधिक तेज़ होती है। इंसान की आँखें नीली-सफ़ेद रोशनी के प्रति संवेदनशील होती हैं। जब यह तेज़ रोशनी सीधे सामने से आती है, तो चालक और पैदल यात्री दोनों कुछ सेकंड के लिए अंधे हो जाते हैं। इसी पल में हादसा हो जाता है। बाइक सवार गिर जाते हैं, ट्रक या बस चालक वाहन पर नियंत्रण खो देते हैं और पैदल यात्री जीवन-मृत्यु की स्थिति में फँस जाते हैं। बुज़ुर्ग और बच्चे सबसे ज़्यादा प्रभावित होते हैं, क्योंकि उनकी आँखें पहले से संवेदनशील होती हैं।

सड़क हादसा केवल व्यक्तिगत त्रासदी नहीं है। यह पूरे परिवार की ज़िंदगी बदल देता है। बच्चे अपने माता-पिता से दूर हो जाते हैं, माता-पिता अपने बच्चों को खो देते हैं। कई परिवार हमेशा के लिए अधूरे हो जाते हैं। हादसों का आर्थिक प्रभाव भी बहुत बड़ा है। सड़क हादसों की वजह से हर साल भारत को GDP का लगभग तीन प्रतिशत नुकसान होता है। यह केवल व्यक्तिगत नुकसान नहीं है; यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी गंभीर खतरा है।

दुनिया के कई विकसित देशों ने इस समस्या को पहले ही समझ लिया था। यूरोप, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में हेडलाइट्स की चमक और रंग पर सख़्त नियम हैं। वहां पीली हेडलाइट्स को प्राथमिकता दी जाती है। यह केवल आँखों के लिए सुरक्षित नहीं है, बल्कि बारिश और धुंध में सड़क भी स्पष्ट दिखाई देती है। भारत में नियम मौजूद हैं, लेकिन उनका पालन ढीला है। वाहन निर्माता गाड़ियों में चमकदार हेडलाइट्स लगाते हैं और आम लोग अक्सर इस खतरे के प्रति जागरूक नहीं होते।

भारत में समस्या को और बढ़ाने वाले कारण हैं – अनियंत्रित आफ्टर-मार्केट फिटिंग, यानी लोग बिना सोचे-समझे LED हेडलाइट्स लगवा लेते हैं; कानून का पालन न होना और सड़क सुरक्षा की अनदेखी; जागरूकता की कमी, जहां अधिकतर लोग नहीं जानते कि उनकी सफ़ेद हेडलाइट दूसरों के लिए खतरा बन सकती है।

इस समस्या का समाधान मुश्किल नहीं है। जरूरत है कि सरकार, वाहन निर्माता और आम लोग मिलकर काम करें। सरकार को हेडलाइट्स की चमक और रंग (कलर टेम्परेचर) पर स्पष्ट मानक तय करने होंगे। 4300K से अधिक कलर टेम्परेचर वाली सफ़ेद हेडलाइट्स पर रोक लगानी चाहिए। सड़क परिवहन विभाग को नियमित जांच और सख़्त कार्रवाई करनी होगी। वाहन निर्माता डिफ़ॉल्ट रूप से सुरक्षित और पीली हेडलाइट्स लगाएँ और ब्राइटनेस के बजाय सुरक्षा को प्राथमिकता दें।

साथ ही, जागरूकता अभियान बहुत जरूरी है। जनजन गुप्ता जैसे अभियान राष्ट्रीय स्तर पर फैलाए जाएँ। टीवी, रेडियो और सोशल मीडिया पर "पीली हेडलाइट लगाओ – ज़िंदगी बचाओ" जैसे संदेश व्यापक रूप से साझा किए जाएँ। आम लोग खुद पहल करें, अपनी गाड़ी की हेडलाइट सुरक्षित बनाएं और अपने परिवार व मित्रों को भी जागरूक करें।

जनजन गुप्ता अभियान का संदेश सीधा और असरदार है – "सफ़ेद चमक नहीं, पीली दोस्ती चाहिए।" यह केवल नारा नहीं है, बल्कि एक आंदोलन है। यदि हम सब मिलकर इसे अपनाएँ, तो सड़कें सुरक्षित होंगी, परिवार हादसों से बचेंगे और रात का सफ़र डर-मुक्त होगा।

सड़क सुरक्षा केवल नियमों का पालन करना नहीं है, यह मानव जीवन की रक्षा का सवाल है। सफ़ेद हेडलाइट जैसी छोटी चीज़ भी बड़े पैमाने पर मौत और दर्द का कारण बन सकती है। हर हादसा सिर्फ़ एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे समाज की त्रासदी है।

भारत में यह समस्या अब गंभीर रूप ले चुकी है। हर दिन सड़कों पर तेज़ सफ़ेद लाइट से प्रभावित होकर दुर्घटनाएँ होती हैं। इनमें से कई हादसे जानलेवा होते हैं। बुज़ुर्ग, बच्चे और पैदल यात्री सबसे कमज़ोर होते हैं। तेज़ सफ़ेद रोशनी उन्हें अपनी दिशा में निर्णय लेने का समय नहीं देती और हादसा अनिवार्य हो जाता है। कई परिवारों की ज़िंदगी इस वजह से हमेशा के लिए बदल जाती है।

सड़क पर हुई दुर्घटना केवल सड़क हादसा नहीं है, यह सामाजिक त्रासदी है। बच्चे अपने माता-पिता से दूर होते हैं, माता-पिता अपने बच्चों से। कई परिवार कभी फिर पूरी तरह से खुश नहीं हो पाते। इसके अलावा, हादसों के कारण इलाज और रिकवरी पर बहुत खर्च होता है, जिससे परिवार और समाज दोनों प्रभावित होते हैं।

दुनिया में कई देशों ने पहले ही कदम उठाए। यूरोप, जापान और अमेरिका में पीली हेडलाइट्स को प्राथमिकता दी जाती है। तेज़ सफ़ेद हेडलाइट्स पर प्रतिबंध है। भारत में नियम हैं लेकिन उनका पालन कमजोर है। वाहन निर्माता चमकदार हेडलाइट्स को फैशन या मार्केटिंग के लिए बढ़ावा देते हैं, और लोग जागरूक नहीं हैं।

इसका समाधान सरल है। सरकार को नियम बनाकर उनका पालन करना चाहिए। वाहन निर्माता सुरक्षित और पीली हेडलाइट्स लगाएँ। आम लोग खुद कदम उठाएँ और दूसरों को भी जागरूक करें। अभियान जैसे जनजन गुप्ता इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सड़क सुरक्षा केवल नियमों का पालन नहीं है, यह ज़िंदगी की रक्षा है। सफ़ेद हेडलाइट्स जैसी छोटी-सी चीज़ कई जानों को खतरे में डाल सकती है। एक पल की तेज़ रोशनी कई परिवारों के लिए हमेशा के अंधकार का कारण बन सकती है। अगर हम सब मिलकर जागरूकता फैलाएँ और सुरक्षित हेडलाइट अपनाएँ, तो सड़कें सुरक्षित होंगी, हादसों से परिवार बचेंगे और रात का सफ़र भयमुक्त होगा।

आज समय है कि हम सब मिलकर आवाज़ उठाएँ, सरकार से नियम सख़्त करवाएँ, वाहन निर्माता अपनी ज़िम्मेदारी समझें और आम लोग जागरूक होकर बदलाव लाएँ। एक पल की चमक अगर जीवन का अंधकार बना सकती है, तो क्यों न उसी पल को जीवन और सुरक्षा की रोशनी में बदल दिया जाए। सड़कें सुरक्षित हों, हादसों से परिवार बचें और रात का सफ़र डर-मुक्त बने – यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

क्रॉम्पटन ने पेश की ड्यूरा सीरीज़ – सबमर्सिबल पंप्स अब और भी टिकाऊ और भरोसेमंद

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: पानी की सप्लाई की बात हो तो हर कोई ऐसी मशीन चाहता है जो टिकाऊ हो और सालों तक भरोसेमंद काम करे। ग्राहकों की इसी ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए, भारत की अग्रणी कंज़्यूमर इलेक्ट्रिकल्स कंपनी क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज़्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने अपनी नई ड्यूरा (DURA) सीरीज़ सबमर्सिबल पंप्स (3W, 4W और 4VO सीरीज़) लॉन्च की है। 80 साल से अधिक के अनुभव के साथ तैयार की गई यह रेंज घरों, खेती और उद्योग – सभी के लिए उपयुक्त है।

सबमर्सिबल पंप हर जगह ज़रूरी होते हैं, लेकिन उनका रखरखाव आसान नहीं होता। पंप खराब होने पर रोज़मर्रा का काम रुक जाता है और इन्हें निकालने व दोबारा लगाने में समय, मेहनत और खर्च तीनों बढ़ जाते हैं। इसलिए ग्राहक ऐसे पंप चाहते हैं जो लंबे समय तक टिकें, कम सर्विसिंग माँगें और सालों तक भरोसेमंद प्रदर्शन करें।

सबमर्सिबल पंप की खासियत है कि यह पूरी तरह पानी में डूबकर चलता है और इसका मोटर पंप से सील होकर जुड़ा रहता है। इससे यह ज़्यादा असरदार, शांत और बिना प्राइमिंग की ज़रूरत के काम करता है। लेकिन इन फायदों का महत्व तभी है जब पंप टिकाऊ भी हो। इसी सोच के साथ क्रॉम्पटन ने ड्यूरा सीरीज़ तैयार की है। इसे खास तौर पर टूट-फूट, जंग और रखरखाव की चुनौतियों से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया है। नतीजा – ग्राहकों को मिलते हैं सालों तक बेफिक्र चलने वाले पंप और लंबे समय तक बचत का भरोसा।

नई ड्यूरा सीरीज़: रोज़ाना की ज़रूरतों और लंबे समय तक टिकाऊ परफॉर्मेंस के लिए एडवांस फीचर्स

सुपरकूल मोटर – खास डिज़ाइन की मोटर, जो लगातार चलने पर भी ठंडी रहती है। इससे पंप की उम्र बढ़ती है और पानी की सप्लाई बिना रुकावट जारी रहती है।

सैंड फाइटर डिज़ाइन – ऐसा सिस्टम जो रेत और मिट्टी को अंदर जाने से रोकता है, जिससे कम घिसावट होती है और कठिन हालात में भी भरोसेमंद परफॉर्मेंस मिलती है।

ऊर्जा कुशल – बीईई स्टार-रेटेड और आईएसआई सर्टिफ़ाइड पंप, जो बिजली की खपत कम करते हैं और लंबे समय तक किफ़ायती साबित होते हैं।

एंटी-रस्ट कोटिंग – सभी अहम हिस्सों पर एडवांस सीईडी कोटिंग, जो जंग और सड़न से मजबूत सुरक्षा देती है और पंप को सालों तक टिकाऊ बनाए रखती है।

क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज़्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड के बिज़नेस हेड – होम इलेक्ट्रिकल्स और पंप्स, रजत चोपड़ा ने लॉन्च के अवसर पर कहा, "ग्राहकों के लिए सबमर्सिबल पंप्स चुनते समय सबसे अहम बात टिकाऊपन और भरोसेमंद परफॉर्मेंस होती है। यह ऐसा उत्पाद है जिसे बार-बार नहीं बदला जाता, और इसे इंस्टॉल या हटाना भी महँगा और समय लेने वाला काम है। क्रॉम्पटन में हम हमेशा यही सोचते हैं कि ग्राहकों की ज़रूरतों को नई तकनीक और आधुनिक फीचर्स में कैसे बदला जाए। ड्यूरा सीरीज़ इसी का परिणाम है—जिसमें जंग से सुरक्षा, रेत से बचाव और ऊर्जा बचत जैसे फीचर्स शामिल हैं। हमारा उद्देश्य है कि ग्राहकों को लंबे समय तक भरोसेमंद परफॉर्मेंस मिले। इस लॉन्च के साथ हम न सिर्फ उनकी चिंताओं का हल दे रहे हैं, बल्कि टिकाऊ जल समाधान में क्रॉम्पटन की अग्रणी स्थिति को और मजबूत बना रहे हैं।"

ड्यूरा सीरीज़ सबमर्सिबल पंप्स अब नज़दीकी क्रॉम्पटन स्टोर्स पर उपलब्ध हैं। ये पंप बहुमंजिला इमारतों, फ़ार्महाउस, निर्माण स्थलों, इंडस्ट्री, बागबानी, स्प्रिंकलर सिस्टम और ड्रिप इरिगेशन जैसी ज़रूरतों के लिए उपयुक्त हैं। अत्याधुनिक फीचर्स, मज़बूत बनावट और क्रॉम्पटन की भरोसेमंद इंजीनियरिंग के साथ, ड्यूरा पंप पानी की सप्लाई के लिए लंबे समय तक एक विश्वसनीय, असरदार और टिकाऊ समाधान प्रदान करते हैं और देशभर में ग्राहकों की विविध ज़रूरतों के लिए भरोसेमंद विकल्प साबित होते हैं।

भारत सरकार, वित्त मंत्रित्व, राजस्व विभाग, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

Government of India
Ministry of Finance
Department of Revenue
Central Board of Direct Taxes

New Delhi, 25th September 2025

Press Release

CBDT extends specified date for filing of various reports of audit for the Assessment Year 2025-26

The 'specified date' of furnishing of the report of audit under any provision of the Income-tax Act, 1961, for the Previous Year 2024-25 (Assessment Year 2025-26), in the case of assessees referred to in clause (a) of Explanation 2 to sub-section (1) of section 139 of the Act, is 30th September, 2025.

The Board has received representations from various professional associations, including Chartered Accountant bodies, highlighting certain difficulties being faced by taxpayers and practitioners in timely completion of audit report. The reasons cited in these representations include disruptions caused by floods and natural calamities in certain parts of the country, which have impeded normal business and professional activity. This matter has also come up before High Courts.

It is clarified that the Income-tax e-filing portal has been operating smoothly and without any technical glitches and the Tax Audit Reports are being uploaded successfully. The system is stable and fully functional, enabling submission of various statutory forms and reports. At the close of 24th September, 2025 4,02,000 Tax Audit Reports (TARs) were uploaded with over 60,000 Tax Audit Reports (TARs) uploaded on 24th September, 2025. Furthermore, more than 7.57 crore ITRs have been filed till 23rd September,2025.

However, keeping in view the representation of the Tax practitioners and their submissions before the Hon'ble Courts, the 'specified date' for furnishing of the report of audit under any provision of the Income-tax Act, 1961, for the Previous Year 2024-25 (Assessment Year 2025-26), in the case of assessees referred to in clause (a) of Explanation 2 to sub-section (1) of section 139 of the Act is extended from 30th September, 2025 to 31st October, 2025.

A formal order/notification to this effect is being issued separately.

(Jaya Choudhary)
Commissioner of Income Tax (ITA)
Central Board of Direct Taxes

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली, 25 सितंबर 2025 को प्रेस विज्ञप्ति जाती कर सूचित किया सीबीडीटी ने आकलन वर्ष 2025-26 के लिए विभिन्न लेखापरीक्षा रिपोर्ट दाखिल करने की निर्दिष्ट तिथि बढ़ाई*

आयकर अधिनियम, 1961 के किसी भी प्रावधान के तहत पिछले वर्ष 2024-25 (मूल्यांकन वर्ष 2025-26) के लिए लेखापरीक्षा की रिपोर्ट प्रस्तुत करने की 'निर्दिष्ट तिथि', अधिनियम की धारा 139 की उप-धारा (1) के स्पष्टीकरण 2 के खंड (ए) में निर्दिष्ट करदाताओं के मामले में, 30 सितंबर, 2025 है।

बोर्ड को चार्टर्ड अकाउंटेंट निकायों सहित विभिन्न व्यावसायिक संघों से अभिवेदन प्राप्त हुए हैं, जिनमें करदाताओं और व्यवसायियों द्वारा समय पर ऑडिट रिपोर्ट पूरी करने में आ रही कुछ कठिनाइयों पर प्रकाश डाला गया है। इन अभिवेदनों में देश के कुछ हिस्सों में बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं के कारण उत्पन्न व्यवधानों को शामिल किया गया है, जिससे सामान्य व्यावसायिक और व्यावसायिक गतिविधियाँ बाधित हुई हैं। यह मामला उच्च न्यायालयों के समक्ष भी आया है।

यह स्पष्ट किया जाता है कि आयकर ई-फाइलिंग पोर्टल सुचारू रूप से और बिना किसी तकनीकी गड़बड़ी के काम कर रहा है और टैक्स ऑडिट रिपोर्ट सफलतापूर्वक अपलोड की जा रही हैं। यह प्रणाली स्थिर और पूरी तरह कार्यात्मक है, जिससे विभिन्न वैधानिक प्रपत्र और रिपोर्ट जमा करना संभव हो रहा है। 24 सितंबर, 2025 के अंत तक 4,02,000 टैक्स ऑडिट रिपोर्ट (टीएआर) अपलोड की गईं, जिनमें से 60,000 से अधिक टैक्स ऑडिट रिपोर्ट (टीएआर) 24 सितंबर, 2025 को अपलोड की गईं। इसके अलावा, 23 सितंबर, 2025 तक 7.57 करोड़ से अधिक आईटीआर दाखिल किए जा चुके हैं।

हालांकि, कर व्यवसायियों के प्रतिनिधित्व और माननीय न्यायालयों के समक्ष उनके प्रस्तुतीकरण को ध्यान में रखते हुए, आयकर अधिनियम, 1961 के किसी भी प्रावधान के तहत पिछले वर्ष 2024-25 (मूल्यांकन वर्ष 2025-26) के लिए लेखापरीक्षा की रिपोर्ट प्रस्तुत करने की 'निर्दिष्ट तिथि', अधिनियम की धारा 139 की उप-धारा (1) के स्पष्टीकरण 2 के खंड (ए) में संदर्भित करदाताओं के मामले में 30 सितंबर, 2025 से 31 अक्टूबर, 2025 तक बढ़ा दी गई है।

इस संबंध में एक औपचारिक आदेश/अधिसूचना अलग से जारी की जा रही है।

(जय चौधरी) आयकर आयुक्त (आईटीए)
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

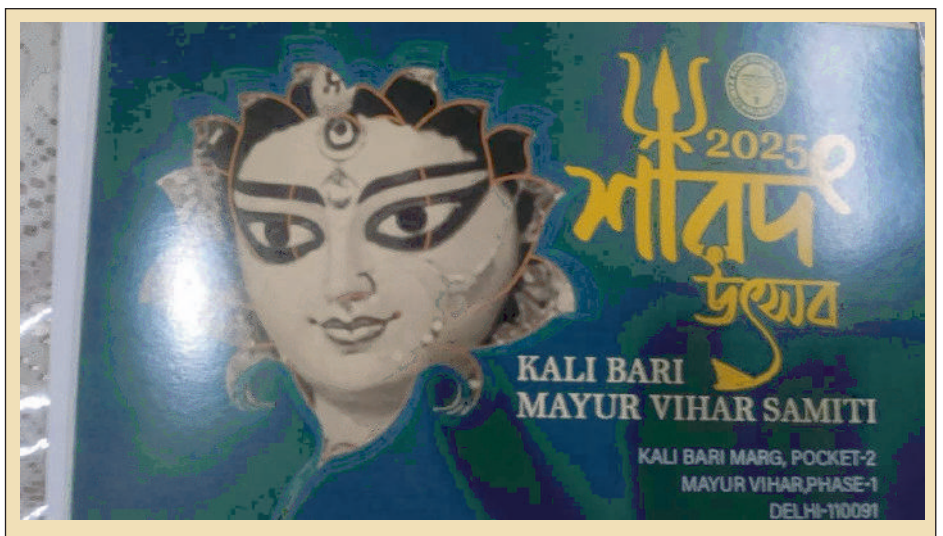

काली बाड़ी मयूर विहार, दुर्गा पूजा में आप सभी का स्वागत है।

पैगंबर मोहम्मद की शिक्षाएं शांति, भाईचारा और मानवता का संदेश देते हैं: हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर ने एक बयान में कहा है कि मोर्चा पैगंबर मोहम्मद की उच्च शिक्षाओं—आध्यात्मिकता, मेहनत, सच्चाई, समानता और न्याय—को अपनी व्यावहारिक ज़िंदगी का हिस्सा मानता है। उन्होंने कहा कि पैगंबर मोहम्मद से हमारी मोहब्बत और अकीदत (श्रद्धा) बेमिसाल और अमिट है, और यह लगाव केवल शब्दों में नहीं, बल्कि हमारे कर्मों से ज़ाहिर होना चाहिए।

उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर कोई व्यक्ति या समूह पैगंबर मोहम्मद की शान में गुस्ताख़ी (अपमान) करने की कोशिश करता है, तो मोर्चा भारतीय संविधान और न्यायपालिका के दायरे में रहकर इंसाफ़ की मांग करेगा। हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर ने कहा कि हमें अपने लोकतांत्रिक न्याय तंत्र पर पूरा भरोसा है और यह सबसे मज़बूत और स्थायी रास्ता है।

हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर ने कानपुर में हाल ही में हुई घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि "आई लव मुहम्मद" के नारे के बाद दर्ज एफआईआर और इसके परिणामस्वरूप हुए विरोध-प्रदर्शन अफ़सोसनाक हैं। ऐसे मौकों पर विरोध और हिंसा की बजाय क़ानूनी रास्ता अपनाना चाहिए ताकि न सिर्फ न्याय मिले, बल्कि मुस्लिम समाज की ओर से एक सकारात्मक संदेश भी जाए। उन्होंने कहा कि सड़कों पर विरोध या हंगामा करने से न तो इस्लाम की प्रतिष्ठा को लाभ होता है और न ही देश की सांप्रदायिक एकता को, जबकि न्यायालय के ज़रिए अपनी बात रखना एक समझदार और गरिमामय क़दम है।

उन्होंने आगे कहा कि पैगंबर मोहम्मद की सच्ची मोहब्बत इसी में है कि हम उनकी शिक्षाओं पर अमल करें और समाज में अमन, इंसाफ़, तालीम (शिक्षा), भाईचारा, समानता और तरक़्क़ी का संदेश फैलाएं। आम जनता से अपील की गई कि वे पैगंबर मोहम्मद के सम्मान को अपने आचरण और व्यवहार के ज़रिए साबित करें, क्योंकि यही असली श्रद्धा और सबसे बड़ा संदेश होगा।

अंत में, राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि इस समय देश भर में हमारे हिंदू भाई अपने त्योहार मना रहे हैं। ऐसे सुखद अवसरों पर मुसलमानों को उच्च सामाजिक चरित्र और संयम का प्रदर्शन करना चाहिए ताकि भाईचारे और प्रेम का माहौल बना रहे। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि वे मिल-जुल कर देश की सामाजिक नींव को मज़बूत रखें और पैगंबर मोहम्मद का अमर संदेश मोहब्बत, रहमत और इंसानियत दुनिया तक पहुँचाएं।

इन छोटी छोटी कन्याओं से नवरात्रि उत्सव अपने पूरे रंग में आ जाता है....

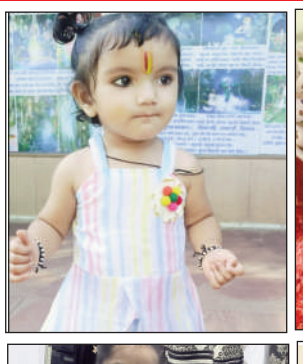

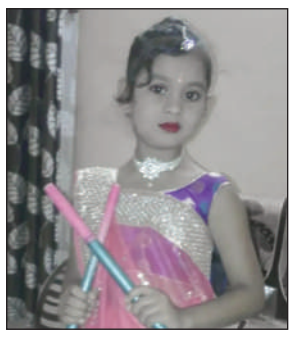

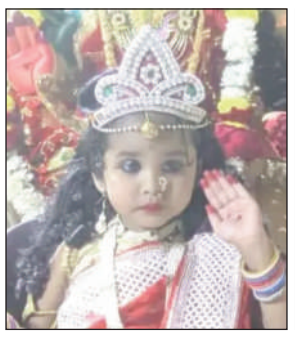

इन्दौर - शारदीय नवरात्र में छोटी-छोटी सी कन्या रंग-बिरंगे वस्त्रों को पहन कर हाथों में डंडियां लेकर गरबे खेलती है वह भक्ति करतीं हैं। वह अपने भाव से अपना समर्पण भावना प्रकट करतीं हैं।ऐसे में चारों ओर गरबा नृत्य हो रहे हैं, जिससे सारा वातावरण खुशियों से महकता है। नन्हे नन्हे कदमों से गरबा खेलती वह कोई मां व देवी स्वरूप को दर्शाती सुंदरता में वह चार चांद लगा रही है। झिलमिलाती रंगीन लाइट्स की रोशनी में बेटियों के वस्त्रों पर पड़ती है तों सारा परिदृश्य सतरंगी हो जाता है। इन्हें देखकर सभी भक्तजन दर्शक बहुत आनंदित व अच्छा महसूस करते हैं। नवरात्रि में भक्ति की इस साधना व आराधना में इन सभी कन्याओं से नवरात्रि उत्सव अपने पूरे रंग में आ जाता है।।

माता की आराधना
और कन्याओं का पूजन
साथ में गरबा खेलती बेटियां
हमारी भक्ति व आस्था को बढ़ती है
छोटी छोटी बेटियां तभी तो कन्या रुप में
देवी स्वरूपा पुजा जाता है।।

प्रेषक - रिपोर्ट व फोटो स्वतंत्र लेखक - हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

प्राचीन योगमाया मंदिर का वार्षिकोत्सव 27 सितम्बर को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। सेवाकुंज क्षेत्र स्थित प्राचीन योगमाया मन्दिर में भगवत प्रेम प्राप्ति वार्षिक महोत्सव का आयोजन संत प्रवर भक्ति वेदांत स्वामी मधुसूदन गोस्वामी महाराज (विश्वबंधु) के पावन सानिध्य में 27 सितम्बर 2025 को सायं 5 बजे से अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए महोत्सव के मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि कार्यक्रम के अंतर्गत योगमाया की प्रतिमा का विधि-विधान से पूजन-अर्चन किया जाएगा।साथ ही छप्पन भोग भी निवेदित किए जाएंगे।इसके अलावा हरिनाम संकीर्तन एवं संत-विद्वत सम्मेलन आदि भी होगा।जिसमें ब्रज के प्रख्यात संतों के अलावा देश-विदेश के असंख्य भक्त-श्रृद्धालु भाग लेंगे।

राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद, मथुरा के जिला अध्यक्ष बने चन्द्र मोहन दीक्षित

एनयूजेआई की वृंदावन इकाई के संरक्षक डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी ने किया हर्ष व्यक्त

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। जनपद के तेज तर्रार व अनुभवी पत्रकार चंद्र मोहन दीक्षित को राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र कुमार मिश्रा के द्वारा परिषद का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया है।राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद लगातार देश में पत्रकारों का विश्वसनीय संगठन बन कर तेजी से उभर रहा है।

संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र कुमार मिश्रा द्वारा लगातार पत्रकारों के हितों की रक्षा, सुरक्षा और पत्रकारों को सम्मान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।जिसके चलते उत्तर प्रदेश सचिवालय से लेकर अधिकांश राज्यों और जिलों में राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद की पहचान एक मजबूत संगठन के रूप में उभरी है। आगरा मंडल उपाध्यक्ष गोपाल चतुर्वेदी द्वारा चंद्र मोहन दीक्षित के मथुरा जिला अध्यक्ष मनोनीत होने पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष

देवेंद्र कुमार मिश्रा को धन्यवाद देते हुए कहा कि मथुरा जनपद में चंद्र मोहन दीक्षित को मनोनीत करने से निश्चित ही संगठन को मजबूती मिलेगी। साथ ही उनके द्वारा मंडल को मजबूत करने में भी सहयोग प्राप्त होगा।

चन्द्र मोहन दीक्षित ने कहा कि राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद के द्वारा जो दायित्व मुझे प्रदान किया गया है, उसे वे पूर्ण निष्ठा के साथ निभाएंगे।साथ ही उनके द्वारा पत्रकारों की सुरक्षा और सम्मान के लिए चट्टान की तरह हर समय अपनी उपस्थिति दर्ज करा कर संगठन को नई दिशा प्रदान करने का कार्य किया जाएगा।

चन्द्र मोहन दीक्षित के राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद, मथुरा के जिला अध्यक्ष पद पर मनोनीत होने से पत्रकारों में खुशी का वातावरण देखा गया।मथुरा के तमाम दिग्गज पत्रकारों द्वारा चंद्र मोहन दीक्षित को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। एन.यू.जे.आई. व ब्रज प्रेस क्लब की वृन्दावन इकाई के संरक्षक डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट ने चंद्रमोहन दीक्षित को राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद का मथुरा जिला अध्यक्ष नियुक्त होने पर हर्ष व्यक्त किया है।साथ ही उन्होंने कहा है कि चंद्रमोहन दीक्षित अत्यंत कर्मठ, जुझारू और पत्रकारों के हितेषी है। उनसे राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद की मथुरा इकाई न केवल सुदृढ़ होगी अपितु मथुरा जनपद के पत्रकारों के भी हित संवर्धित होंगे।

बदायूं विधानसभा क्षेत्र के वजीरगंज मंडल में शक्ति केंद्र Sursena बूथ संख्या 6 और बूथ संख्या 9 ग्राम changri पर सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित और माल्यार्पण की तथा एक पेड़ मां के नाम पर लगाया मेरे साथ गांव के सभी बूथ अध्यक्ष विवेक कुमार पाठक राम प्रताप सिंह महेश पाल सम्मानित ग्राम प्रधान सरवन कुमार और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता राजीव वार्ष्णेय उपस्थित रहे।

संत लोंगोवाल तकनीकी संस्थान में राजस्थान की कालबेलिया कला का रंगारंग उत्सव मनाया

लोंगोवाल, (जगसीर सिंह) - भारत सरकार की प्रमुख तकनीकी संस्था संत लोंगोवाल इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ने अपने परिसर में राजस्थान की प्रसिद्ध कालबेलिया नृत्य शैली का शानदार रंगारंग उत्सव मनाया गया।इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक प्रो.(डॉ.) मणिकांत पासवान के दूरदर्शी नेतृत्व में हुआ। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने पारंपरिक राजस्थानी पोशाकों में विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों और नृत्य प्रस्तुत किए, जिससे कार्यक्रम में आए दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। छात्रों की प्रस्तुतियों में न केवल राजस्थानी संस्कृति की विविधता दिखाई दी, बल्कि इसका जीवंत अनुभव भी सभी ने महसूस किया। अंत में निदेशक प्रो. (डॉ.) मणिकांत पासवान ने उपस्थित छात्रों और फैकल्टी को संबोधित करते हुए कहा कि यह सांस्कृतिक उत्सव हमारे एकता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि चाहे कोई किसी भी राज्य, जाति या धर्म का हो, हमारी संस्कृति हमें जोड़ती है और सभी सामाजिक और धार्मिक बाधाओं को हटाने में मदद करती है। इसलिए, संस्थान हर सांस्कृतिक उत्सव को प्रेम और गरिमा के साथ मनाता है। डॉ. पासवान ने कालबेलिया नृत्य नृत्य के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कालबेलिया राजस्थान की एक प्रसिद्ध नृत्य शैली है, जो सपेरा जाति से संबंधित है। यह नृत्य मुख्यतः दो महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है और अपनी गजब की फुर्ती और आकर्षक शैली के कारण दर्शकों को सम्मोहित कर लेता है। नृत्य के दौरान पुरुष बीन और ताल जैसे संगीत वाद्ययंत्र बजाते हैं। कालबेलिया नृत्य में सांप की तरह लचीले और तेज़ कदमों से किया जाने वाला प्रदर्शन इस कला की खास पहचान है। कार्यक्रम ने न केवल छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का काम किया, बल्कि राजस्थानी कला और परंपरा की महत्ता को भी उजागर किया।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं सें बढ़ता है बौद्धिक विकास

गंजडुण्डवारा, नगर के सहावर रोड स्थित ब्राइट फ्यूचर इंटर कालेज में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।जिसमें लगभग 225 विद्यार्थी सम्मलित हुए। प्रतियोगिता का आयोजन दो सेक्शन में हुआ। जूनियर सेक्शन कक्षा 5 से कक्षा 8 व सीनियर सेक्शन कक्षा 9 से 12 तक। इस मौके पर विद्यालय प्रबन्धक डॉ. रिजवान अली प्रधानाचार्य मोहम्मद यूनुस, जमाल अख्तर, सचिन कुमार, गौरव कुमार, मो. तालिब, मो.साजिद, मो. सोहैल, नजरुल हसन मो.सलमान व तौहीद अनवर तथा समस्त स्टाफ मौजूद रहे। विद्यालय प्रबन्धक डॉ रिजवान अली ने बच्चों का मार्गदर्शन किया तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की व विद्यालय प्रधानाचार्य ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

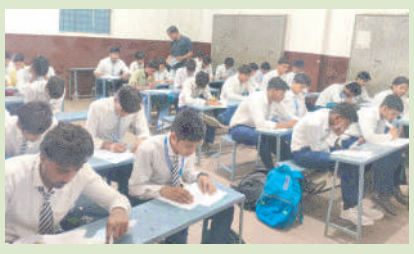

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

--निर्माणाधीन गंगा एक्सप्रेसवे पर वाहन रोकना ठेकेदार को पड़ा भारी

-- गंगा एक्सप्रेसवे पर टोल बूथ का काम करा रहे ठेकेदार के साथ मारपीट

-- ठेकेदार ने लगाया ढाई तोला सोने की चेन छीन कर ले जाने का आरोप

-- ठेकेदार का आरोप लाठी डंडे और हथियार लेकर पहुंचे थे दर्जनों अज्ञात गुंडे

-- सूचना मिलते ही डाल 112 पुलिस मौके पर पहुंची पुलिस को देखते ही गुंडे हुए फरार

-- पीड़ित ठेकेदार ने थाने पहुंचकर पुलिस को दी तहरीर, कार्रवाई की मांग

-- प्रभारी निरीक्षक बोले तहरीर प्राप्त हुई है, जांच कराई जाएगी

-- उघैती थाना क्षेत्र के गांव मोहननगला के पास गंगा एक्सप्रेसवे की घटना

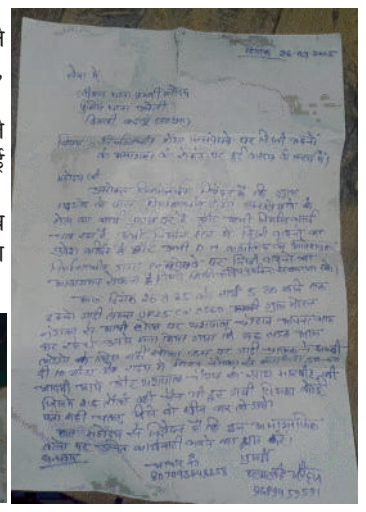

मौन धारण से क्रोध ,मनमुटाव व झगड़ों को हराने की बहुत बड़ी ताकत

मौन धारण सफ़लता का सच्चा सूत्र है इससे आत्मिक बल,निर्मल बुद्धि समस्याओं का समाधान व मस्तिष्क में एकाग्रता होने को रेखांकित करना जरूरी-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया

वैश्विक स्तरपर दुनियां में हर देश ने तेजी से बढ़ती प्रौद्योगिकी,विकास से बढ़ते डिजिटाइजेशन ने शारीरिक श्रम को विशाल स्तरपर कम कर मानसिक श्रम को बढ़ा दिया है जिसमें अनेक प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक एप्स और वेबों को ईट का जवाब पत्थर से देने का काम कर दिया है जिसमें माननीय जीव का ध्यान भटक सा गया है और अपने ही उलझन में उलझते हुए गुम सा हो गया है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि बढ़ते मानवीय विवादों व बढ़ाती अपनीं ख्वाहिशें,लग्जरी जिंदगी झूठी शान को दिखाने के चक्कर में बड़बोलापन शब्दों बयानों वाक्यों के गिरते स्तर तथा परिवार में बढ़ते विवादों की खाई को और चौड़ा करते जा रहे हैं, जहां अब समय आ गया है कि अब आदि-अनादि काल से हमारे बड़े बुजुर्गों के उपरोक्त हानियों में गुणकारी टॉनिक मौन एकाग्रता को अपनाएं जो हमारे जीवन की सफलता का सच्चा सूत्र है। चूंकि मन एकाग्रता से विवेक जागृत होता है,जिसमें निर्णायक क्षमता सर्वोत्तम होती है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, मन एकाग्रता से क्रोध का दामन, आत्मिक बल, निर्मल बुद्धि, समस्याओं का समाधान व मस्तिष्क में एकाग्रता होने को रेखांकित करना जरूरी है।

साथियों बात अगर हम मौन व एकाग्रता के लाभों की करें तो, मौन रहने में बड़ी ताकत है, रह कर देखें तब हमको इसके फायदों के बारे में ज्ञान होगा। मौन रहने के फायदे इस प्रकार है:-(1)सकारात्मक सोच के लिए जीवन में मौन रहने की सलाह दी जाती है।(2)मन को शांति मिलती है और शक्ति बढ़ती है।(3)मौन से आंतरिक और मानसिक शक्ति मिलती है।(4)इससे व्यक्ति लंबे समय तक तनाव रहित बना रहता है।(5)मौन रहने से क्रोध मिटता है।(6)मौन की शक्ति बड़े से बड़े अहंकार को धूल में मिला देती है (7) स्मरण शक्ति और सोचने की शक्ति बढ़ती है।(8)नई मानसिक ऊर्जा प्राप्त होती है और बड़े संघर्ष शुन्य हो जाते हैं।(9)इस उपाय से मन की चंचलता को नष्ट किया जा सकता है।(10)घरेलू लड़ाई-झगड़े बिल्कुल खत्म हो जाते हैं और अपने आप पर काबू पाने की शक्ति बढ़ती है।मौन रहने के क्या लाभ होते हैं ?कहते हैं कि जो समझदार होता है, वह कम बोलता है और कई बार मौन रहकर भी वह संवाद साध लेता है। अनुभव बताता है कि मौन कई बार बहुत बड़ी परेशानियों से बचा सकता है। इसके विपरीत अगर कोई आदत से मजबूर होकर एक के बदले दस जवाब देता है और कहता है कि मैं चुप क्यों रहूं, किसी से दबकर क्यों रहूं? तो वह बहुत बड़ी मुसीबत में फंस सकता है।मौन की अपनी, अनुपम अभिव्यक्ति होती है, जो किसी भाषा की मोहताज नहीं होती।अक्सर लोग वाणी के विराम को ही मौन समझते हैं।लेकिन किसी व्यक्ति के मन में संकल्पों की उथल-पुथल हो रही हो, किसी अन्य व्यक्ति के प्रति उसके मन में द्वेष भावना का ज्वार-भाटा उठ रहा हो, या उसके भीतर कोई और वासना धधक रही हो, तो क्या यह मौन कहा जाएगा? कहते हैं कि पानी-सा रंगहीन नहीं होता मौन, आवाज की तरह इसके भी हजार रंग होते हैं। मन और वाणी, दोनों का शांत होना ही पूर्ण मौन कहा जाता है। मुख के मौन को बाह्य मौन कहा जाता है तथा मन का मौन अंतः मौन। एक कहावत है कि मीठा बोलना जितना सुखकारी है, उतना ही कम बोलना भी लाभकारी है। पर हमें यह समझ भी होनी चाहिए की जहां मौन रहना चाहिए, वहां बोलकर अपने लिए झमेला कभी खड़ा नहीं करना है।मौन हमारे मस्तिष्क के सभी स्नायुओं और इंद्रियों को संयमित रखता है। चुप रहने से वाणी और वाणी के साथ खर्च होने वाली मस्तिष्क की शक्ति संचित होती है। तभी तो कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने मुख और जबान पर संयम रखता है, वह अपनी आत्मा को कई संतापों से बचाता है। मौन में रहकर ही हम जीवन जगत के गूढ़ और सत्य पहलुओं का साक्षात्कार कर सकते हैं। जिस उत्तम धारणा से इतने लाभ प्राप्त होते हों, तो क्यों न हम उसको अपने जीवन का अंग बना लें?

साथियों बात अगर हम मौन व एकाग्रता साधना से अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव की करें तो, मौन धारण करना एक बड़ी साधना है.यह हमारे सोचने समझ ने की शक्ति को बढ़ाता है.इसलिए साधना के सभी पंथ मौन की महत्ता को स्वीकार करते है. मनोविज्ञानी और करियर विशेषज्ञ भी स्मरण शक्ति बढ़ाने,एकाग्रता,शांति और सकारात्मक सोच के लिए जीवन में मौन धारण करने की सलाह देते हैं जब हम कुछ समय मौन रहते तो स्वयं से बात करते हैं आत्म मंथन करते हैं इससे नयी मानसिक ऊर्जा प्राप्त होती है. इस छोटे-से उपाय से आप अपने जीवन में बड़ा सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।(1)नकारातमकता का दूर होना,हमारी जो संस्कृति है उसमें सिर्फ उत्पादकता की बात की जाती है हमेशा पूछा जाता है कि आपने अपने परिवार,समाज,देश के लिए क्या किया या आप अपने देश के लिए क्या कर सकते हैं इस सवाल के मूल में एक ही तत्व रहता है - क्या किया जा सकता है? मौन हमें इससे आजादी दिलाता है कई बार यह एकांत ही बहुत ज्यादा उत्पादक हो जाता है।(2) क्या हम दस दिन तक मौन रहने के बारे में सोच सकते हैं? बहुत से लोगों के लिए यह पानी पर चलने जैसा है लेकिन विपासना के शिविर में यह होता है इसमें भाग लेने वालों को लिखने-पढ़ने तक की मनाही होती है वह एक-दूसरे से आइ कांटैक्ट भी नहीं कर सकते एक बार वैज्ञानिकों का दल विपासना के इस तरह के शिविर में शोध के लिए गया था उन्होंने पाया कि चुप रहने से हमारी संवेदनशीलता बढ़ने लगती है दृष्टि में,सोच में,भावनाओं में समाहित हो जाती है।(3)विद्वानों का मानना है कि हम निराशावादी इसलिए हो जाते हैं क्योंकि हम भविष्य में जीते हैं जो सिर्फ एक भ्रम है मौन हमें वर्तमान में लाता है जहां हम खुशी का अनुभव करते हैं मौन की मदद से ही हम भविष्य के भ्रम से निकलने में कामयाब हो सकते हैं।(4) डॉक्टरों की माने तो मौन एकांत में किसी प्राकृतिक स्थान पर टहलने का एक अलग आनंद है वैज्ञानिकों का मानना है कि मौन से हमारे दिमाग के उस हिस्से का विकास होता है जो हमारी याददाश्त को मजबूत करता है प्रकृति के करीब रहने से हमारी स्थान संबंधी याददाश्त तेज होती है विशेषज्ञ मानते हैं कि एकांत मौन में दिमाग शांत रहता है वह यादों को सहेजने का काम करता है।(5) एक्शन को मिलती है मजबूती मनोविश्लेषक केली मैकगोनिगल का मत है कि जब हम मौन रहते हैं तभी दिमाग में सकारात्मक विचार आते हैं जिसे बाद में हम अमल में लाते हैं इससे हमारे भीतर सकारात्मक प्रवृत्ति बढ़ती है।(6)जब कभी भी हम अपने बच्चों या प्रियजनों पर सख्ती करते हैं तो बाद में पछताते हैं यह तभी होता है जब हम बिना सोचे-समझे यह करते हैं यहीं पर मौन काम करता है वह हमें जागरूक करता है सचेत करता है इससे हमारी गतिविधियां हमारे नियंत्रण में रहती हैं जब हम जागरूक रहते हैं तब हमारे ऊपर हमारा नियंत्रण रहता है किसी बाहरी चीज से हम प्रभावित नहीं होते यह शक्ति हमें मौन से मिलती है।(7)दिगाम भी तेज होता है शरीर का सबसे जटिल और ताकतवर हिस्सा दिमाग है. जिस तरह से मांसपेशियों को कसरत करने से फायदा पहुंचता है, वैसे दिमाग को मौन से फायदा होता है मौन एक तरह से दिमाग की कसरत है मान लें कि आप किसी शांत जगह पर ध्यान के लिए बैठे और तभी आपको खुजली होने लगती है विशेषज्ञ मानते हैं कि आपको खुजली नहीं करनी चाहिए इससे आपको व्यवधान में भी ध्यान लगाने की आदत पड़ जायेगी इससे एकाग्रता बढ़ती है।

साथियों बात अगर हम मौन वह एकाग्रता को सभी मानवीय गुणों में सर्वोपरि की करें तो, मौन रहना सभी गुणों में सर्वोपरि है। मौन का अर्थ है संयम के द्वारा धीरे-धीरे इन्द्रियों तथा मन की कार्यपद्धति को संयमित करना। समस्तसिद्धियों के मूल में मौन ही है। जैसे निद्रा से उठने पर शरीर, मन एवं बुद्धि में नई स्फूर्ति दिखाई देती है वैसे ही मौन रहने पर सर्वदा वही स्फूर्ति शरीर के साथ मन एवं बुद्धि में बनी रहती है। ग्रह शांति के लिए मौन धारण कर मानसिक जप करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है।भगवान श्रीकृष्ण नेश्रीमद्भगवत गीता में वाक्संयम को तप की संज्ञा दी है। मौनव्रत से गंभीरता आत्मशक्ति तथा वाकशक्ति में वृद्धि होती है। मौन से तात्पर्य है बिना दिखावे के सेवा करना। मौन रहना सभी गुणों में सर्वोपरि है। मौन का अर्थ है संयम के द्वारा धीरे-धीरे इन्द्रियों तथा मन की कार्यपद्धति को संयमित करना। समस्तसिद्धियों के मूल में मौन ही है। जैसे निद्रा से उठने पर शरीर, मन एवं बुद्धि में नई स्फूर्ति दिखाई देती है वैसे ही मौन रहने पर सर्वदा वही स्फूर्ति शरीर के साथ मन एवं बुद्धि में बनी रहती है। मौन रहने से आध्यात्मिक शक्तियों का विकास तो होता ही है,साथ ही शरीर में ऊर्जा भी संग्रहित होती है। प्रतिदिन कुछ समय मौन रहकर अपनी आत्मशक्ति का विकास कर अपनी आत्मा के निकट आंतरिक संवाद, ध्यान अवश्य करना चाहिए। अगर प्रतिदिन कुछ समय के लिए मौन व्रत न धारण कर पाएं तो सप्ताह में एक दिन कुछ समय के लिए अथवा माह में एक दिन मौन व्रत अवश्य रखना चाहिए। नीति शास्त्रों में कहा गया है कि विद्वान चुप रहते हैं, समझदार बोलते हैं और अज्ञानी अकारण बहस करते हैं, इसलिए जीवन में अकारण वाद-विवाद की स्थिति उत्पन्न होने पर कभी-कभी मौन धारण करना भी फायदेमंद रहता है। मौन धारण करने से न केवल आध्यात्मिक लाभ है, बल्कि मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और ज्योतिषीय लाभ भी हैं।मौन धारण कर हम अपनी ऊर्जा को बिखरने से रोकते हैं जिसके कारण आवश्यक कार्यों के लिए ऊर्जा संचित हो जाती है। अक्सर देखा गया है, जो लोग जरूरत के समय ही बोलते हैं अथवा अधिकांश समय मौन धारण कर लेते हैं, वे अपने विचारों और शब्दों पर नियंत्रण रखने में परिपक्व हो जाते हैं, जिसके कारण किसी भी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा से मन दुःखी नहीं होता है। मौन के द्वारा क्रोध पर भी नियंत्रण पाया जाता है तथा वाणी दोष से भी बचा जा सकता है।

साथियों बात अगर हम मन के एकाग्रता के विमुख होने के कारणों की करें तो, मनुष्य के मन का स्वाभाविक गुण है चंचल होना यानी एकाग्र न होना। इसका चंचल गुण बार बार हमें हमारे लक्ष्यों से विमुख करता रहता है। मनुष्य का मन उसको भावनाओं और कामनाओं के जाल में बांधकर भांति-भांति के कार्य करवाता है। हमारा मन हमारे शरीर रूपी रथ का सारथी होता है। इसका जिस ओर मन करता है वह उधर ही इसको ले जाता है। इसमें प्रायः गलत राह भी पकड़ ली जाती है। मन का अधिक झुकाव विषयों एवं विकारों की तरफ रहता है। वहां पर हमें इसको बांधने और रोकने की जरूरत महसूस होती है। इसके लिए गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं, हे अर्जुन यदि तुम धीर मति वाले और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति हो तो मन की चंचलता पर काबू पाया जा सकता है। मन का मुंहजोर घोड़ा आरंभ में सवार को अपनी पीठ पर आसीन नहीं होने देता है, लेकिन अगर बार-बार कोशिश की जाए तो वह उसे सवार भी होने देगा, उसकी बात मानेगा और उसकी इच्छा के अनुसार चलेगा भी, पर सबसे कठिन होता है मन को किसी एक लक्ष्य पर टिका कर रखना। मन के दृढ़ निश्चयी होने पर ही इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इसी को कहते हैं अभ्यास की तलवार चलाना। इसी तरह स्वामी विवेकानंद जी एकाग्रता की महत्ता को बताते हुए कहते हैं कि अगर मुझे जीवन में एक बार फिर से शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मेरे मन के अनुसार मिला तो तथ्यों का अध्ययन तो कदापि नहीं करूंगा। तब मैं मन की एकाग्रता और अनासक्ति की सामर्थ्य बढ़ाऊंगा। इसमें पारंगत हो जाने के पश्चात अपनी इच्छा अनुसार तत्वों का संकलन करूंगा। इस तरह उन्होंने भी मन की एकाग्रता पर जोर दिया है। जिसने भी अपने मन को साध लिया, उसके लिए हर लक्ष्य आसान हो जाता है। मन की एकाग्रता हमें हमारी आत्मा से साक्षात्कार कराकर हमारी सफलता के नए द्वार खोलती है। इसलिए आज से ही मन को साधने में जुट जाइए।

विश्व पर्यटन दिवस: कदम-कदम पर शिक्षा और संस्कृति

क्या आपने कभी उस जादू को अनुभव किया है, जब अनजान रास्तों पर कदम रखते हुए आपकी आत्मा नई कहानियों, संस्कृतियों और संवेदनाओं से झंकृत हो उठती है? यात्रा महज एक जगह से दूसरी जगह की दूरी तय करना नहीं है—यह एक ऐसा सफर है, जो हमारे भीतर की सीमाओं को तोड़ता है, सोच को नया उड़ान देता है, और हमें अपनी अनंत संभावनाओं से जोड़ता है। विश्व पर्यटन दिवस, जो हर साल 27 सितंबर को मनाया जाता है, केवल यात्रा का उत्सव नहीं, बल्कि उस मानवीय जज्बे का सम्मान है, जो संस्कृतियों को एक सूत्र में पिरोता है, सीमाओं को मिटाता है, और दुनिया को एक परिवार बनाता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हर यात्रा एक नई शुरुआत है—खुद को, समाज को, और विश्व को गहराई से समझने की।

पर्यटन की यह अनूठी शक्ति मनोरंजन से कहीं आगे जाती है; यह हमारे मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को पुनर्जनन करती है। नई जगहों की सैर तनाव को पिघलाकर रचनात्मकता को जगा सकती है? जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल साइंस (2023) के एक अध्ययन के अनुसार, यात्रा करने से तनाव हार्मोन कोर्टिसोल का स्तर 22% तक कम हो सकता है, जबकि रचनात्मकता में 18% की वृद्धि होती है। जब हम किसी नई संस्कृति की परंपराओं को छूते हैं, उनकी भाषा सुनते हैं, या उनके व्यंजनों का स्वाद लेते हैं, तो हमारा दिमाग नए तंत्रिका मार्ग बनाता है। यह प्रक्रिया न केवल हमें अधिक रचनात्मक बनाती है, बल्कि सहानुभूति और समावेशी दृष्टिकोण भी सिखाती है। उदाहरण के लिए, मेघालय की खासी जनजाति के जीवित पेड़ों के पुलों को देखने वाला यात्री सिर्फ इंजीनियरिंग का चमत्कार नहीं देखता—वह प्रकृति और समुदाय के सहजीवन की कहानी से जुड़ता है। यही है पर्यटन का जादू—यह हमें दूसरों के नजरिए से दुनिया को देखना सिखाता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से, पर्यटन वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक अपराजेय स्तंभ है। विश्व पर्यटन संगठन के 2024 के आँकड़ों के अनुसार, वैश्विक पर्यटन उद्योग ने 1.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की आय अर्जित की, जो वैश्विक जीडीपी का 10.4% है। इसका प्रभाव बड़े शहरों तक सीमित नहीं है; छोटे गाँव, जो कभी दुनिया के नक्शे पर अनदेखे थे, पर्यटन के कारण अपनी पहचान बना रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारत की स्पीति घाटी जैसे सुदूर क्षेत्रों में पर्यटन ने स्थानीय लोगों को नई आजीविका दी है। वहाँ के होमस्टे, बौद्ध मठों की सैर, और याक पनीर जैसे स्थानीय उत्पादों ने न केवल पर्यटकों को आकर्षित किया, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को 30% तक उभारा है। इसके साथ ही, सतत पर्यटन ने पर्यावरण संरक्षण को नया आयाम दिया है। कोस्टा रिका जैसे देश, जहाँ पर्यटन जीडीपी का 12% हिस्सा है, ने इको-टूरिज्म के जरिए अपनी 25% भूमि को संरक्षित वनों में बदला है, जो एक प्रेरणादायक मिसाल है।

पर्यटन का एक अनमोल पहलू है इसका सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव, जो दिलों को जोड़ता है और सीमाओं को मिटाता है। जब हम किसी अनजान भूमि पर कदम रखते हैं, तो वहाँ की कला, संगीत, नृत्य, और कहानियाँ हमारे भीतर एक नई दुनिया रच देती हैं। यह अनुभव न केवल हमें समृद्ध करता है, बल्कि वैश्विक शांति और एकता की नींव भी मजबूत करता है। विश्व पर्यटन संगठन की 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार, 65% पर्यटक अपनी यात्रा के बाद अन्य संस्कृतियों के प्रति गहरा सम्मान और सहानुभूति महसूस करते हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ हर 100 किलोमीटर पर भाषा, भोजन, और परंपराएँ बदल जाती हैं, पर्यटन ने विविध समुदायों को एक-दूसरे के करीब लाकर अद्भुत सामंजस्य रचा है। केरल की मंत्रमुग्ध कर देने वाली कथकली, राजस्थान की जीवंत लोक कथाएँ, या असम का उत्साहपूर्ण बिहू नृत्य—ये न केवल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, बल्कि स्थानीय लोगों को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने का मौका भी देते हैं। यह सांस्कृतिक संवाद आज की विभाजित दुनिया में मित्रता और सहअस्तित्व का एक शक्तिशाली संदेश देता है।

डिजिटल युग ने पर्यटन को एक नया क्षितिज प्रदान किया है। आभासी पर्यटन ने उन लोगों के लिए दुनिया के दरवाजे खोल दिए हैं, जो शारीरिक या आर्थिक बाधाओं के कारण यात्रा नहीं कर सकते। 2024 में, गूगल आर्ट्स एंड कल्चर ने 3,000 से अधिक सांस्कृतिक स्थलों को डिजिटल रूप से सुलभ बनाया, जिससे लोग घर बैठे पेट्रा की रहस्यमयी गलियों, ताजमहल की शाश्वत सुंदरता, या ग्रेट बैरियर रीफ की रंगीन दुनिया का अनुभव कर सकते हैं। यह न केवल शिक्षा और शोध के लिए एक वरदान है, बल्कि वृद्धों, शारीरिक रूप से अक्षम लोगों, या आर्थिक तंगी का सामना कर रहे व्यक्तियों के लिए भी एक अनमोल उपहार है। साथ ही, सोशल मीडिया ने पर्यटन को और अधिक समावेशी बनाया है। इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे मंचों पर स्थानीय गाइड और ब्लॉगर अब गुमनाम गाँवों और अनछुए स्थानों को वैश्विक मंच पर ला रहे हैं, जिससे पर्यटन का दायरा पहले से कहीं अधिक व्यापक और प्रेरणादायक हो गया है।

विश्व पर्यटन दिवस हमें सिखाता है कि यात्रा केवल एक शौक नहीं, बल्कि एक पवित्र जिम्मेदारी है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी यात्राएँ न केवल हमारे लिए सुखद हों, बल्कि स्थानीय समुदायों और पर्यावरण के लिए भी लाभकारी सिद्ध हों। स्थानीय हस्तकलाओं को अपनाकर, पर्यावरण-अनुकूल रिसॉर्ट्स को चुनकर, और स्थानीय संस्कृति का सम्मान करके हम सतत पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं। हर यात्रा एक अनमोल अवसर है—नए लोगों से जुड़ने का, उनकी कहानियाँ सुनने का, और इस खूबसूरत दुनिया को और बेहतर बनाने का। आइए, इस विश्व पर्यटन दिवस पर एक ऐसी यात्रा का संकल्प लें, जो न केवल हमारे दिलों को रोशन करे, बल्कि दुनिया को एकजुट और समृद्ध बनाए।

अगली बार जब आप किसी अनजान शहर की गलियों, जंगल की हरियाली, या समुद्र तट की लहरों की ओर कदम बढ़ाएँ, तो सिर्फ तस्वीरें खींचने या सेल्फी लेने तक सीमित न रहें। उस जगह की आत्मा को महसूस करें, उसके लोगों के साथ दिल से जुड़ें, और उनकी कहानियों को अपने भीतर संजोएँ। विश्व पर्यटन दिवस का यही गहरा संदेश है—यात्रा केवल स्थानों का दौरा नहीं, बल्कि मानवता, समझ, और सतत विकास का एक अनमोल सफर है। इस सफर को और अधिक अर्थपूर्ण बनाएँ, क्योंकि हर कदम के साथ हम न केवल दुनिया को, बल्कि स्वयं को भी एक बेहतर रूप में ढाल सकते हैं। चलें, इस यात्रा को एक ऐसी कहानी बनाएँ, जो प्रेरणा दे, जोड़े, और बदलाव लाए।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

वांगचुक के आन्दोलन को गंभीरता से लें अन्यथा इसका असर पूरे पश्चिमोत्तर भारत पर पड़ेगा

गौतम चौधरी

अभी भारत के कुछ उत्साही हिन्दू राष्ट्रवादी, नेपाल के 'जेन जी रेवॉल्यूशन' का जश्न मना कर आराम ही कर रहे थे कि लद्दाख से एक बड़ी खबर सामने आयी। खबर यह है कि केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख में कुछ उत्साही युवाओं ने देश के सत्तारूढ़ गठबंधन का नेतृत्व कर रही भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय को आग के हवाले कर दिया। आन्दोलन अभी भी जारी है और केन्द्र सरकार ने यह तय कर लिया है कि वहां के आन्दोलन को शांत करने के लिए अब केन्द्रीय सुरक्षा बल एवं भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की टुकड़ियों को तैनात किया जाएगा। मतलब साफ है कि अब भारत का एक और शांत राज्य अशांति का दंश झेलने को अभिशप्त है। ऐसा क्यों हुआ, इसके लिए जिम्मेदार कौन है और इस अशांति का हेतु क्या है, ऐसे कई प्रश्न है, जो कूटनीतिक क्षितिज पर तैर रहे हैं और लगातार जवाब ढूँढ रहे हैं।

पहले तो लद्दाख की हालिया स्थिति क्या है, उस पर चर्चा करना ठीक रहेगा। मसलन, केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्ज़ा देने की मांग को लेकर बुधवार को हुआ विरोध प्रदर्शन एकाएक हिंसक हो गया और भीड़ ने लेह में प्रदेश भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में आग लगा दी। बता दें, पर्यावरणविद और सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक बीते 15 दिनों से भूख हड़ताल पर थे और उन्हीं मुद्दों को लेकर यह प्रदर्शन था। उन्होंने समाचार माध्यमों को बताया कि लेह में आज हुई हिंसा के बाद उन्होंने अपना अनशन समाप्त कर दिया है। उन्होंने लोगों से शांति की अपील भी की है। मिल रही जानकारी में बताया गया है कि पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले दागे और लाठीचार्ज किया। कुछ वीडियो में कई वाहन जलते हुए दिख रहे हैं और कुछ झड़पें भी हुई हैं। स्थानीय समाचार के अनुसार फिलहाल लेह में कर्फ्यू लगा दिया गया है।

इस मामले में केन्द्र सरकार ने सोनम वांगचुक पर हिंसा फैलाने का आरोप लगाया है। हिंसा के बाद ही सोनम वांगचुक ने एक्स पर एक वीडियो संदेश जारी कर शांति की अपील की। उन्होंने कहा, ''आज, हमारे भूख हड़ताल का 15वां दिन था। लेह सिटी में व्यापक हिंसा और तोड़फोड़ की घटनाओं से मैं दुखी हूं। कई कार्यालयों और पुलिस की गाड़ियों को आग

लगा दी गई। पांच सालों से (युवा) बेरोज़गार हैं। एक के बाद एक बहाना करके उन्हें नौकरियों से बाहर रखा जा रहा है और लद्दाख को भी संरक्षण नहीं दिया जा रहा है। इस हिंसा में तीन से पांच युवाओं की जान जाना दुखद है और हम उनके परिवारों के साथ शोक जताते हैं।'' इसका मतलब साफ है कि इस हिंसक आन्दोलन में कुछ लोगों की जान भी गयी है हालांकि प्रदर्शन के दौरान लोगों के मारे जाने के बारे में पुलिस प्रशासन ने कोई बयान जारी नहीं किया है।

इस क्षेत्र के लोगों की थोड़ी पीड़ा भी समझनी होगी। केंद्र शासित प्रदेश बनने से पहले लद्दाख के लोग जम्मू-कश्मीर पब्लिक सर्विस कमीशन में गज़ेटेड पदों के लिए अप्लाई कर सकते थे लेकिन अब ये सिलसिला बंद हो गया है। वर्ष 2019 से पहले नॉन गज़ेटेड नौकरियों के लिए जम्मू-कश्मीर सर्विस सेलेक्शन बोर्ड भर्ती करता था और उस में लद्दाख के उम्मीदवार भी होते थे लेकिन अब ये नियुक्तियां कर्मचारी चयन आयोग की ओर से की जा रही हैं। यह आयोग एक संवैधानिक निकाय है जो केंद्र सरकार के लिए भर्तियां करता है। अलग केंद्र शासित प्रदेश बनाने से लेकर आजतक लद्दाख में बड़े स्तर पर नौकरियों के लिए नॉन- गज़ेटेड भर्ती अभियान नहीं चलाया गया है जिसको लेकर लद्दाख के युवाओं में गुसा है। लद्दाख के लोग ये उम्मीद कर रहे थे कि केंद्र शासित प्रदेश बनने के साथ-साथ लद्दाख को विधानमंडल भी दिया जाएगा और छठी अनुसूची के तहत सुरक्षा दी जाएगी।

सोनिया गांधी फिलिस्तीन के लिए चिंतित क्यों हैं

राजेश कुमार पासी

कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी ने गुरुवार को एक लेख अखबार में लिखा है जो कि अंग्रेजी भाषा में है। उन्होंने अपने लेख के माध्यम से मोदी सरकार की विदेश नीति पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने सरकार की फिलिस्तीन नीति को मानवता और नैतिकता की घोर उपेक्षा करार दिया है। उन्होंने कहा है कि भारत को इस मामले पर अपना नेतृत्व दिखाना चाहिए। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि वो इजराइल के नेता बेंजामिन नेतन्याहू के साथ अपनी व्यक्तिगत मित्रता के आधार पर इस मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं। उनका कहना है कि इस मुद्दे पर सरकार की प्रतिक्रिया और गहरी चुप्पी मानवता एवं नैतिकता, दोनों का परित्याग है। उनका कहना है कि व्यक्तिगत कूटनीति की यह शैली कभी भी स्वीकार्य नहीं है और यह भारत की विदेश नीति का मार्गदर्शक नहीं हो सकती। उन्होंने अमेरिका का उदाहरण देकर इन नीति की विफलता की ओर इशारा किया है।

उनका कहना है कि भारत इस मामले पर सबसे आगे रहा है जिसने पीएलओ को वर्षों के समर्थन के बाद 18 नवम्बर, 1988 को औपचारिक रूप से फिलिस्तीनी राष्ट्र की मान्यता दे दी थी। देखा जाए तो उनकी बात सही है क्योंकि भारत फिलिस्तीन को मान्यता देने वाला पहला गैर-इस्लामिक देश था। उन्होंने लिखा है कि 1971 में भारत ने तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में नरसंहार को रोकने के लिए दृढ़ता से हस्तक्षेप किया था जिससे आधुनिक बांग्लादेश का निर्माण हुआ। फिलिस्तीन मुद्दे पर सोनिया गांधी का यह तीसरा लेख है जबकि उन्होंने पिछले कुछ महीनों में सिर्फ चार लेख लिखे हैं। चार में से तीन लेख फिलिस्तीन समस्या को लेकर लिखना बताता है कि वो इस मामले पर बहुत गंभीर हैं। सवाल यह है कि उनकी गंभीरता सिर्फ इस मामले पर ही क्यों है। देश में कई समस्याएं हैं लेकिन उन्हें सिर्फ फिलिस्तीन की चिंता क्यों है। दूसरी बात उन्होंने यह लेख अंग्रेजी में लिखा है जबकि इस देश के दो प्रतिशत लोग भी अंग्रेजी अखबार के लेख नहीं पढ़ते हैं। अगर उन्हें अपनी बात देश को बतानी थी तो अंग्रेजी में लिखने की क्या जरूरत थी। अगर वो अपने मुस्लिम मतदाताओं को अपनी बात पहुंचाना चाहती थी तो एक प्रतिशत मुस्लिम भी अंग्रेजी लेख नहीं पढ़ते होंगे। इस बात को समझने की जरूरत है कि वो किसको संदेश दे रही हैं।

उन्होंने कहा है कि भारत अक्टूबर, 2023 में इजराइल और फिलिस्तीन के बीच संघर्ष शुरू होने के बाद पिछले दो सालों में अपनी भूमिका से तटस्थ हो गया है। वो आगे कहती है कि 7 अक्टूबर, 2023 को हमास द्वारा इजराइली नागरिकों पर क्रूर और अमानवीय हमले के बाद इजराइल ने भी प्रतिक्रिया देते हुए भारी नरसंहार किया है। सोनिया जी ने जो कहा है, वो आज अधिकांश लोग कह रहे हैं। इसकी वजह यह है कि उनकी सोच है कि इजराइल के दो हजार लोग मारे गए थे। इसके जवाब में इजराइल ने 55000 लोग मार दिये हैं और अभी भी वो रुक नहीं रहा है। यह लोग भूल जाते हैं कि इतिहास गवाह है कि किसी क्रिया की प्रतिक्रिया की मात्रा क्या होगी, कभी तय नहीं किया जा सकता। चंगेज खान के दो दूतों की हत्या मुस्लिम शासक ने कर दी थी लेकिन इसके बदले में चंगेज खान ने पूरे मिडिल ईस्ट को तबाह कर दिया था। करोड़ो लोगों को मार दिया था. जानवर तक खत्म कर दिए गए थे। उस तबाही को ऐसे समझा जा सकता है कि उसने कई बड़े शहरों की पूरी आबादी खत्म कर दी थी।

ऐसे ही भारत के 26 लोगों की हत्या के बदले में भारत ने ऑपरेशन सिंदूर में भयंकर तबाही मचाई है। अभी यह खुलासा नहीं हो पाया है कि ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान के कितने लोग मारे गए हैं। 2002 में गुजरात में 59 लोगों को रेल के दो डिब्बों में बंद करके जिंदा जला दिया गया था। इसकी प्रतिक्रिया में दंगे हुए और दंगों में 2000 लोग मारे गए। दिल्ली में नादिरशाह के कुछ सिपाहियों को दिल्ली की जनता ने मार दिया था, इसकी प्रतिक्रिया में नादिरशाह ने दिल्ली की लगभग पूरी आबादी को कत्ल कर दिया था। ये समस्या सिर्फ सोनिया जी की नहीं है बल्कि पूरे उदारवादी, वामपंथी और मुस्लिम बुद्धिजीवियों की है कि अगर हमास ने दो हजार इजराइलियों को मार दिया था तो इजराइल को भी इतने लोगों को मार कर रुक जाना चाहिए था। सवाल यह है कि इजराइल की इतनी बड़ी कार्यवाही के बाद भी हमास ने इजराइल के बंधकों को नहीं छोड़ा है। आज भी हमास के लोग इजराइल को खत्म करने का दावा कर रहे हैं। गाजा लगभग तबाह हो चुका है लेकिन हमास आज भी वहां जिंदा है। आज भी हमास के आतंकवादी अपने ठिकानों से निकल कर इजराइल की सेना पर हमला करते हैं।

वैसे यह समझना मुश्किल है कि सोनिया जी ने यह लेख क्यों लिखा है। वो भारत सरकार की नीतियों पर सवाल तो खड़ा कर रही हैं लेकिन यह नहीं बता रही हैं कि भारत ने क्या गलती की है। वो स्पष्ट रूप से यह बताने में असफल रही हैं कि भारत सरकार को इजराइल के खिलाफ क्या कार्यवाही करनी चाहिए और क्यों करनी चाहिए। जब दुनिया में 50 से ज्यादा मुस्लिम देश गाजा के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं तो भारत क्या कर सकता है। क्या वो चाहती है कि भारत अपनी सेना भेजकर इजराइल पर हमला कर दे। मेरा मानना है कि सोनिया जी सिर्फ सरकार को इस मुद्दे पर घेरना चाहती हैं और अपने मुस्लिम मतदाताओं को खुश करना चाहती हैं। उन्होंने अंग्रेजी में लेख इसलिए लिखा है कि वो विदेशों में बैठे कांग्रेस के हितेषियों को बताना चाहती हैं कि इजराइल के खिलाफ वो अभियान चला रही हैं। यह भी समझना मुश्किल है कि मुस्लिम मतदाता तो पहले ही कांग्रेस के समर्थन में है तो उन्हें खुश करने की कोशिश क्यों कर रही हैं। मोदी सरकार को विपक्ष मुस्लिम विरोधी साबित कर चुका है, उनके पत्र की क्या जरूरत है।

इजराइल भारत का मित्र देश है लेकिन भारत का झुकाव फिलिस्तीन की तरफ रहा है। कारगिल युद्ध में इजराइल की मदद से ही भारत ने पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार भगाया था। अगर इजराइल मदद न करता तो भारतीय सेना को युद्ध जीतने के लिए और न जाने कितने वीर सैनिकों से हाथ धोना पड़ता। इजराइल की मदद के कारण भारत के सैकड़ों जवानों की जान बच गई। भारतीय सेना को मजबूत बनाने में इजराइल ने सक्रिय योगदान दिया है जबकि फिलिस्तीन ने कश्मीर के मुद्दे पर हमेशा पाकिस्तान का साथ दिया है। उन्होंने बांग्लादेश की बात की है. वो तो हमारा पड़ोसी देश है। जब पाकिस्तानी सेना वहां नरसंहार कर रही थी तो वहां से करोड़ो शरणार्थी भाग कर भारत आ गए थे। उन्हें वापिस भेजने के लिए भारत को कार्यवाही करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इजराइल हमारा पड़ोसी नहीं है. वो भारत से बहुत दूर है तो वहां जाकर भारत को दखल देने की क्या जरूरत है। जहां तक मानवीय मदद की बात है तो वो भारत इस संघर्ष के शुरू होने के बाद से करता आ रहा है। उनके यह कहने का क्या मतलब है कि भारत पिछले दो सालों से इस मामले पर तटस्थ है। उन्हें बताना चाहिए था कि भारत तटस्थ न रहे तो क्या करे।

एससीओ में भारत ने इजराइल के खिलाफ प्रस्ताव पास करवाया है जबकि कुछ महीने पहले ऑपरेशन सिंदूर में इजराइल ने हमारी बड़ी मदद की है। इसके बावजूद कि हमने गाजा में चार बार मानवीय मदद पहुंचाई है। दूसरी तरफ ऑपरेशन सिंदूर में इजराइल ने हमें जरूरी हथियार पहुंचाए हैं। मोदी सरकार जो कुछ भी कर रही है, वो पुरानी विदेश नीति के अनुसार ही कर रही है। ये अलग बात है कि मोदी सरकार मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति पर नहीं चलती है। सोनिया गांधी का लेख उनकी मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के आधार पर लिखा गया है। जब 50 मुस्लिम देश शांत हैं तो वो चाहती है कि भारत इजराइल के खिलाफ कुछ करे लेकिन क्या करे, वो ये नहीं बता रही हैं। पाकिस्तान को तुर्की, अजरबैजान और चीन ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद बदले की कार्यवाही करने में मदद की थी। ये सब लोग मिलकर इजराइल के खिलाफ क्यों कार्यवाही नहीं करते हैं। भारत और इजराइल दोस्त हैं लेकिन ये तो इजराइल के दोस्त भी नहीं हैं। जिस हमास का समर्थन किया जा रहा है, उसके लोग पीओके आकर भारत पर आतंकवादी हमले में मदद की बात कह चुके हैं।

मोदी नीति की विशेषता यह है कि वो देशहित से ऊपर किसी को नहीं मानती है। इजराइल के साथ रिश्ते हमारे देशहित में हैं तो मोदी सरकार का झुकाव उसकी ओर है। मोदी वैश्विक नेताओं से मित्रता सिर्फ देशहित के आधार पर ही करते हैं। यह कहना गलत है कि वो अपनी मित्रता के कारण इजराइल के मुद्दे पर चुप है। मोदी कई बार इस युद्ध को बंद करने की बात दोहरा चुके हैं। एक देश के रूप में भारत जो कर सकता है, वो कर रहा है। भारत की नीति रही है कि वो गलत को गलत कहता रहा है लेकिन इससे आगे भारत नहीं बढ़ सकता। अगर इजराइल हमास को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानता है तो वो भारत की बात क्यों सुनेगा। इस मुद्दे पर सोनिया जी ने अपने देश के प्रधानमंत्री और सरकार को बिना मतलब कटघरे में खड़ा करने की कोशिश की है। वो यह कोशिश किसको खुश करने के लिए कर रही हैं, ये वो ही बता सकती हैं।

लोथल में सिंधु सभ्यता के समुद्री ज्ञान और इंजीनियरिंग को सहेजने में जुटी मोदी सरकार

रामस्वरूप रावतसरे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 20 सितंबर को गुजरात का दौरे पर थे। इस दौरान उन्होंने अहमदाबाद जिले के लोथल में बन रहे नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स (एनएमएचसी) का जायजा लिया। पीएम मोदी ने निर्माण कार्य की प्रगति की समीक्षा की और परियोजना से जुड़ी बैठक भी की।

गुजरात के लोथल में बन रहा नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स (एनएमएचसी) मोदी सरकार की एक पहल बताया जा रहा है। इसका उद्देश्य सिंधु-सरस्वती सभ्यता यानी इंडस वैली सिविलाइज़ेशन की समुद्री और इंजीनियरिंग उपलब्धियों को सम्मान देना है। करीब 2400 ईसा पूर्व लोथल इस सभ्यता का एक अहम बंदरगाह शहर था। गुजरात सरकार द्वारा आवंटित 400 एकड़ जमीन पर 4,500 कोड़ रुपए की लागत से तैयार हो रहा यह प्रोजेक्ट लोथल की ऐतिहासिक धरोहर को सहेजने, पर्यटन को बढ़ावा देने और आने वाली पीढ़ियों के लिए शिक्षा का केंद्र बनाने की दिशा में काम करेगा।

जानकारी के अनुसार अक्टूबर 2024 में केंद्र सरकार ने सागरमाला कार्यक्रम के तहत नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स (एनएमएचसी) को मंजूरी दी थी। इसका मकसद प्राचीन समुद्री इंजीनियरिंग की इस अनोखी धरोहर को दुनिया के सामने लाना है। यह परियोजना विकास और विरासत संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के साथ-साथ भारत के प्राचीन समुद्री व्यापार को नई पहचान देने पर भी जोर देती है।

यह कॉम्प्लेक्स दो चरणों में विकसित किया जा रहा है और इसमें नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज म्यूज़ियम शामिल है जिसमें भारत के समुद्री इतिहास को इंडस वैली सिविलाइज़ेशन से आधुनिक समय तक दिखाने वाली 14 गैलरी होंगी। फेज 1ए का काम 60 प्रतिषत से अधिक पूरा हो चुका है और यह साल के अंत तक खुलने के लिए तैयार है। इसमें छह गैलरी शामिल हैं, जिनमें इंडियन नेवी और कोस्ट गार्ड की प्रदर्शनी भी है, जिसमें आइरएनएस निशंक मिसाइल बोट, सी हैरियर विमान और यूएच-3 हेलिकॉप्टर जैसे ऐतिहासिक वस्त्र और मॉडल दिखाए जाएँगे। इसके अलावा इसमें लोथल का पुनर्निर्मित टाउनशिप और जेट्टी वॉकवे भी मौजूद हैं।

फेज 1बी में आठ और गैलरी जोड़ी जाएँगी, साथ ही 77 मीटर ऊँचा लाइटहाउस म्यूजियम बनेगा, जो दुनिया का सबसे ऊँचा म्यूज़ियम होने की योजना में है। इसमें 5डी डोम थिएटर और बागीचा कॉम्प्लेक्स भी शामिल होगा, जिसमें 1500 वाहनों के लिए पार्किंग, फ़ूड कॉर्ट और मेडिकल सुविधाएँ होना बताया जा रहा है।

फेज 2, जिसे पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के माध्यम से आर्थिक साहियोग किया जाएगा जिसमें तटीय राज्यों के पवेलियन, ईको-रिज़ॉर्ट्स, लोथल शहर का पूरी तरह से पुनर्निर्मित मॉडल, एक मैरीटाइम इंस्टिट्यूट और चार थीम पार्क शामिल होंगे। ये थीम पार्क समुद्री इतिहास, जलवायु परिवर्तन, स्मारक और एडवेंचर पर केंद्रित होंगे।

जानकारी के अनुसार इस परियोजना को बंदरगाह, शिपिंग और वाटरवे मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय का समर्थन प्राप्त है। इसके लिए फंडिंग मुख्य बंदरगाहों, रक्षा मंत्रालय, नेशनल कल्चर फंड और 3,000 करोड़ रुपए के निजी निवेश से की जा रही है। वहीं, लाइटहाउस म्यूज़ियम का वित्तपोषण डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ लाइटहाउस और लाइटशिप्स (डीजीएलएल) करेगा। आर्थिक दृष्टि से, नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज

कॉम्प्लेक्स (एनएमएचसी) रोज़ाना 25,000 पर्यटकों को आकर्षित करने की उम्मीद बताई जा रही है। इससे सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से 22,000 नौकरियाँ पैदा होंगी और क्षेत्र की स्थानीय उद्योगों को भी बढ़ावा मिलेगा। इसका उद्देश्य लोथल को भारत के प्रमुख हेरिटेज पर्यटन स्थलों के बराबर एक बड़ा पर्यटन केंद्र बनाना है।

लोथल सिंधु-सरस्वती सभ्यता का एक प्रमुख स्थल रहा है। यह दिखाता है कि प्राचीन भारतीय सभ्यता कैसे सिंधु नदी से फैलकर सरस्वती के किनारे फली-फूली और उत्तर-पश्चिम भारत तक विकसित हुई। इस सभ्यता ने व्यापार, शिल्पकला, नगर योजना और संस्कृति में अपनी विरासत की निरंतरता को बनाए रखा। लोथल, गुजरात के भाल क्षेत्र में खंभात की खाड़ी के पास स्थित है और यहाँ दुनिया का सबसे पुराना मानव निर्मित डॉकयार्ड है। इसमें 214 मीटर लंबा और 36 मीटर चौड़ा ट्रैपेज़ॉइडल बेसिन है, जिसकी लंबवत ईंट की दीवारें हैं और यह साबरमती नदी से इनलेट और आउटलेट चौनलों के जरिए जुड़ा हुआ है। सिंधु-सरस्वती सभ्यता के लोग जल प्रबंधन और योजना बनाने में अत्यंत कुशल थे। लोथल का डॉकयार्ड क्षेत्र में उच्च ज्वार-भाटा को नियंत्रित करने के लिए बनाया गया था और इसमें सिल्ट जमाव को रोकने के लिए स्पिल चैनल भी बनाया गया था।

लोथल में प्रारंभिक उत्खनन 1955 से 1962 के बीच किए गए थे। इस उत्खनन परियोजना का नेतृत्व एस आर राव ने किया था जिन्हें अपने जीवन में 30 हड़प्पा स्थलों की खोज करने का श्रेय दिया जाता है। राव ने लोथल के महत्व को बताते हुए इसे पेन म्यूज़ीअम एक्सपिडिशन मैगजीन में लिखा था। हड़प्पावासियों द्वारा निर्मित पकी हुई ईंटों की अब तक की सबसे बड़ी संरचना लोथल में रखी गई थी, जिसका उपयोग जहाजों को खड़ा करने और माल को संभालने के लिए बर्थ के रूप में किया जाता था.. मूल रूप से, गोदी को 18 मीटर से 20 मीटर लंबे और 4 से 6 मीटर चौड़े जहाजों को जलद्वार में डालने के लिए डिज़ाइन किया गया था.. कम से कम दो जहाज एक साथ प्रवेश द्वार से गुजर सकते थे।

आईआईटी गाँधी नगर के अध्ययन, प्रोफेसर वी एन प्रभाकर, प्रोफेसर विक्रांत जैन और एकता गुप्ता द्वारा किया गया, राव की लिखी बातों की पुष्टि करता है। साबरमती की पुरानी नहरों का प्रवाह लोथल को भूगोलिक दृष्टि से सुविधाजनक स्थान प्रदान करता था जो सक्रिय व्यापार नेटवर्क के केंद्र में था। यह नेटवर्क अरब सागर के भारतीय बंदरगाहों, खासकर खंभात की खाड़ी, से शुरू होकर प्राचीन मेसोपोटामिया तक फैला हुआ था।

इस थ्योरी को लोथल और आसपास के क्षेत्र से मिले प्राचीन मुहरों की संख्या भी समर्थन देती है। रिपोर्ट के अनुसार, यह संख्या सौराष्ट्र के किसी भी अन्य स्थल से अधिक है। इन मुहरों का इस्तेमाल माल ढोने के पैकेज, व्यापार दस्तावेज और पत्रों पर चिह्न लगाने के लिए किया जाता था। लोथल में कई चरणों में आबादी और पुनर्स्थापनाएँ हुईं। इस क्षेत्र का धीरे-धीरे पतन मुख्य रूप से साबरमती नदी के विनाशकारी बाढ़ और नदी के मार्ग बदलने के कारण हुआ, जिससे डॉकयार्ड सूख गया। एस आर राव के अनुसार लगभग 2000 ईसा पूर्व की एक बड़ी बाढ़ के बाद यह फलता-फूलता शहर तबाह हो गया था और बचे रह गए केवल कुछ लोग और असंगठित गाँव। फिर 1900 ईसा पूर्व एक और बड़ी बाढ़ ने इस स्थल को स्थायी रूप से नष्ट कर दिया।

जानकारों के अनुसार नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स इंडस वैली सभ्यता की समुद्री और इंजीनियरिंग क्षमताओं की विरासत को संरक्षित करेगा, साथ ही आर्थिक विकास और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देगा। उन लोगों के लिए, जो अपनी समुद्री विरासत से दूर हो गए हैं, एनएमएचसी हमारी शिपबिल्डिंग और समुद्री व्यापार की समृद्ध परंपरा तक पहुँच का माध्यम बनेगा। उन्नत तकनीक और सोच-समझकर डिजाइन के जरिए एनएमएचसी सुनिश्चित करेगा कि लोथल का ऐतिहासिक महत्व भविष्य की पीढ़ियों तक सुलभ और जीवंत रहे।

संतुलित विकास में हरा सोना है बांस

विजय गर्ग

चीन के बाद भारत दूसरा बड़ा बांस उत्पादक देश है। मगर निर्यात के मामले में चीन हमसे अब भी बहुत आगे है। वह भारत, वियतनाम, जर्मनी, नीदरलैंड और तुर्की जैसे देशों में बांस का सर्वाधिक निर्यात करता है। एक दौर में ब्रिटिश हुकूमत ने बांस को एक पौधे की श्रेणी में रखते हुए इसकी खेती और कटाई पर प्रतिबंधात्मक शर्तें लगाई थीं। दशकों तक इन दमनकारी नियमों के कारण बांस के बहुउपयोग पर कभी ध्यान दिया ही नहीं गया। बांस को खेती के रूप में स्थापित किए जाने, इससे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने और पर्यावरण संरक्षण में इसके महत्त्व को देखते हुए वर्ष 2017 में भारत में बांस को घास के रूप में दोबारा वर्गीकृत किया गया। इसका बड़ा लाभ यह हुआ भर में बांस को प्रतिबंधात्मक नियमों से मुक्ति मिल गई। किसानों को आसानी से इसकी कटाई और परिवहन की अनुमति मिलने लगी। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों ने इसका लाभ उठाते हुए बांस विभिन्न तरह की वस्तुएं बनाने बनाने की दिशा में पहल की और देश से इनके निर्यात की संभावनाएं भी तेजी से बढ़ीं।

बांस की खेती बहुउपयोगी है। इससे अपशिष्ट जल का उपचार ही नहीं होता, बल्कि हवा भी शुद्ध होती है और मिट्टी का कटाव भी कम होता है। बांस तेजी से बढ़ने वाला पौधा है। यह वातावरण से कार्बन डाई आक्साइड अवशोषित करने में मदद करता है। इसे कम लागत में अधिक उपज देने वाली घास कहा जा सकता है। जंगलों के साथ- साथ शुष्क क्षेत्रों में यह उगाया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार,

बांस आमतौर पर तीन से चार वर्ष में कटाई के लिए तैयार हो जाता है। एक बार लगाने के बाद यह चालीस-पचास साल तक पैदावार दे सकता है। कटाई के बाद यह फिर से बढ़ना शुरू कर देता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा और प्राकृतिक दवाओं में भी इसका इस्तेमाल होता रहा है। बांस के पाउडर का इस्तेमाल खांसी और अस्थमा जैसे रोगों के लिए किया जाता है। आयुर्वेद में इसके रस का उपयोग बुखार और गर्मी कम करने के लिए किया जाता है।

दुनियाभर में कप, प्लेट, टूथब्रश, कंघे और कूड़ेदान आदि के निर्माण में बांस का उपयोगी से बढ़ रहा है। रहा है। बांस के रेशे प्राकृतिक रूप से जीवाणुरोधी होने के साथ ही नमी अवशोषित कर त्वचा को सुरक्षित और आरामदेह रखते हैं। इसलिए इसका उपयोग कपड़ा उद्योग में भी किया जा रहा है। यह बल्ली, सीढ़ी, टोकरी और चटाई आदि बनाने में तो काम आता आता ही है, इससे बनने वाले फर्नीचर भी विविध रूपों में बाजार लगे हैं। खिलौने, कृषि यंत्र और कागज बनाने सहित अन्य साज-सज्जा का समान बनाने में बांस के बढ़ते उपयोग से महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में इसकी खेती कारगर साबित हो रही है। देश- विदेश में बांस का उपयोग जैविक ईंधन तैयार करने के लिए भी किया जाने लगा है। बांस से निर्मित चारकोल का उपयोग पानी एवं वायु शोधन यंत्रों, दवाइयों और सौंदर्य प्रसाधन सामग्री में किया जा रहा है।

राष्ट्रीय बांस मिशन के अंतर्गत बांस के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से प्रोत्साहन दिया जा रहा है। महाराष्ट्र सरकार ने मनरेगा के तहत बांस की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों को प्रति हेक्टेयर सात लाख रुपए तक की अनुदान राशि देने की पहल की है। सतत विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से बांस भविष्य में भारत के लिए हरा सोना साबित हो सकता है। अभी महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और दक्षिण के कुछ क्षेत्रों में ही बांस की खेती बड़े स्तर पर होती है।

देश में इसकी खेती के प्रसार के लिए केंद्र सरकार ने वर्ष 2017 में भारतीय वन अधिनियम 1927 में संशोधन कर बांस को पेड़ों की श्रेणी से हटा कर घास की श्रेणी में वर्गीकृत किया था। विषम परिस्थितियों में भी उग सकने वाले बांस की लगभग 136 प्रजातियां हैं, मगर इसकी बहु किस्मों के बारे में जानकारी नहीं होने के कारण इसका व्यावसायिक उपयोग भारत में अभी सीमित है। बड़े भूमि क्षेत्र पर उगने के बावजूद इसके निर्यात का लाभ हमें नहीं मिल रहा है। जबकि बांस ऐसा पौधा है, जिसके हर एक भाग का उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए अलग-अलग से किया जा सकता है। प्रशिक्षण के साथ इस संबंध में जागरू प्रकार से किसानों की आय वृद्धि में यह महती भूमिका निभा सकता है। तुलना में बांस का पौधा वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि दूसरे पौधों की तैंतीस फीसद अधिक कार्बन डाईडाक्साइड अवशोषित करता है और पैंतीस फीसद अधिक आक्सीजन प्रदान करता है। चीन में वर्ष वह में वर्ष 1980 के दशक में बांस की खेती के प्रयासों को गति मिली और आज इससे रहा है। वहां पचास लाख हेक्टेयर भूमि सर्वाधिक आर्थिक लाभ ले रहा लगड हेक्टेयर क्षेत्र पर बांस की खेती हो रही है, जबकि भारत में भारत में एक करोड़ बांस की खेती होने बावजूद इसकी विविधता और उपयोगिता लेकर जागरूकता का अभाव और विपणन में दिक्कतों के कारण हमें इसका यथोचित आर्थिक लाभ नहीं मिल रहा है। । हालांकि जब सरकार ने बांस को घास के रूप में अधिसूचित किया है, तब से महाराष्ट्र में बांस की पैदावार को लेकर प्रभावी प्रयास हुए हैं। इससे बड़ी संख्या में किसानों का रुझान बांस की खेती की ओर हुआ है। वहां बांस से होटल उद्योग और दूसरे उद्योगों के सौंदर्यीकरण की दिशा में भी प्रयास हुए हैं। ऐसे ही प्रयास अगर दूसरे राज्यों में भी होते हैं, तो भविष्य में इसके सकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं। बांस की खेती के के लिए उष्ण और आर्द्र जलवायु उपयुक्त होती है। राष्ट्रीय बांस मिशन के तहत बांस की कई किस्मों के उत्पादन को देशभर में प्रोत्साहन के साथ यदि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और कृषि विश्वविद्यालयों की प्रसार शिक्षा के तहत बांस उत्पादन प्रशिक्षण वृहद स्तर पर आयोजित हों, तो किसानों के आर्थिक सशक्तीकरण में भी बांस अहम योगदान दे सकता है। राजस्थान के राजसमंद जिले के पिपलांत्री गांव में चारागाह भूमि पर बांस लगाने और बांस उत्पादन में विविधता पर काफी काम हुआ है। राजस्थान का यह ऐसा गांव है जहां बांस की कई किस्में एक साथ उगाई जाती हैं। यहां बांस की खेती में अभिनव प्रयोग भी हुए हैं।

प्लास्टिक के बजाय बांस के पर्यावरण अनुकूल उत्पादों को यदि बंजर और चारागाह भूमि पर उगाने को बढ़ावा दिया जाता है, तो इसके बहुत अच्छे परिणाम भविष्य में मिल सकते हैं। किसानों के लिए आर्थिक लाभ के साथ बांस की खेती पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी बहुत अहम है। ग्रामीण आजीविका सृजन में बांस के उपयोग के लिए वातावरण बनाने की जरूरत है। चीन की तर्ज पर बांस की खेती और इससे जुड़े उद्योगों को पारिस्थितिकी पर्यावरण संरक्षण से जोड़ते हुए हमारे यहां बड़े स्तर पर उपलब्ध बंजर भूमि को पुनर्स्थापित करने, कटाव और मरुस्थलों से निपटने तथा ग्रामीण समुदायों की आय में सुधार के लिए बांस की खेती महत्त्वपूर्ण है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

नवरात्र का स्वरूप

शिवानन्द मिश्रा

नवरात्र की परम्परा भारतीय तन्त्र एवं पुराण साहित्य में अत्यन्त विस्तृत रूप से वर्णित है। देवी की उपासना कालानुसार, क्षेत्रानुसार एवं सम्प्रदायानुसार भिन्न भिन्न स्वरूप धारण करती है। शास्त्रों में यह स्पष्ट कहा गया है कि प्रत्येक कल्प में भगवती किसी विशेष रूप से अवतीर्ण होकर दैत्य का वध करती है और उसी कल्प की परम्परा के अनुसार नवरात्र का विधान प्रचलित हो जाता है। इस प्रकार कल्पभेद के कारण भगवती की नवदुर्गा-मालिका भी भिन्न भिन्न दिखाई देती है।

श्वेतवाराहकल्प में भगवती ने कात्यायनी रूप धारण कर महिषासुर का संहार किया। इसी कारण इस कल्प में प्रतिपदा के दिन घटस्थापन कर नवरात्र का प्रारम्भ होता है और शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी तथा सिद्धिदात्री—ये नवदुर्गा रूप पूजनीय माने जाते हैं। नीललोहितकल्प में देवी भद्रकाली रूपिणी, षोडशभुजासम्पन्ना, प्रकट होकर असुर का वध करती हैं। इस कल्प की विशेषता यह है कि नवरात्र का प्रारम्भ प्रतिपदा से न होकर आश्विन कृष्णपक्ष की एकादशी से होता है। एकादशी को उपवास, द्वादशी को एकभुक्त, त्रयोदशी को नक्तभोजन और चतुर्दशी को प्रबोधन, ततः अमावस्या को भगवतीपूजन कर पुनः प्रतिपदा में घटस्थापन की परम्परा है। रम्भकल्प में देवी अष्टादशभुजा उग्रचण्डा के रूप में प्रकट होती हैं और महिषासुर का उद्धार करती हैं। इस कल्प में भी प्रतिपदा में घटस्थापन होता है, किन्तु नवदुर्गा स्वरूप सर्वथा भिन्न—रुद्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डवती, चण्डरूपा, अतिचण्डिका और उग्रचण्डा—इनकी पूजा विधान में प्रकट होती है। इस कल्प की विशेषता यह है कि नवमी के मध्याह्न में देवी का प्रबोधन सम्पन्न होता है।

इन कल्पभेदों के अतिरिक्त नवरात्र का स्वरूप विभिन्न सम्प्रदायों में भी वैविध्यमय है। वैष्णव परम्परा, जिसे नारायणकल्प भी कहा जाता है, में देवी को श्रीलक्ष्मी का रूप मानकर पूजते हैं और नवरात्र का विधान लक्ष्मीनारायण की एकीकृत आराधना के रूप में सम्पन्न होता है। यहाँ पद्मा, श्रियः, धेनुः, चक्रिणी, वैष्णवी, माधवी, जनार्दनी, विष्णुप्रिया और महालक्ष्मी—ये नवदुर्गा मानी जाती हैं। गाणपत्य मार्ग, जिसे विनायककल्प कहा जाता है में भगवती को विनायकी अथवा गणपति पत्नी रूप से आराध्य माना गया है। यहाँ सिद्धिविनायकी, बुद्धिदायिनी, गजप्रिया, विघ्ननाशिनी, ऋद्धिप्रदा, सम्पत्तिदायिनी, सुखदा, मोक्षप्रदा और विनायकी दुर्गा की आराधना की जाती है।

दक्षिण भारत की परम्पराओं में शाक्तमार्ग का एक विशेष रूप मिलता है, जिसे कभी कभी "सौर प्रक्रिया" भी कहा जाता है किन्तु यह "कल्प" नहीं है, केवल एक विधि है। इसमें भगवती के नवदुर्गा स्वरूप, वनदुर्गा, शूलिनी, जातवेदा, शान्ति, शबरी, ज्वालामालिनी, लवणा, आसुरी और दीपदुर्गा स्वीकृत हैं। ये रूप अरण्य, अग्नि, शान्ति, तपस्या, ज्योति, समुद्र, उग्रता और प्रकाश के प्रतीक माने जाते हैं। इसी प्रकार सौरसम्प्रदाय में भगवती को आदित्यतेजःस्वरूपिणी मानकर उपासना की जाती है और वहाँ सूर्यप्रभा, मिहिरा, भानुमती, आदित्या, रश्मिप्रिया, मार्तण्डेश्वरी, विवस्वती, प्रभामाया और ज्योत्स्ना, ये नवदुर्गा प्रतिष्ठित हैं। यह प्रक्रिया चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, जो सूर्यनवसंवत्सर का आरम्भ है, उसी दिन से घटस्थापन द्वारा प्रारम्भ होती है और दशमी को तेजःसिद्धि तथा आरोग्यसंपत्ति का विधान है।

कार्य-संस्कृति या वर्क कल्चर

विजय गर्ग

कार्य-संस्कृति या वर्क कल्चर की अवधारणा जिस 18वीं 19वीं सदी की औद्योगिक क्रांति से जन्मी है, क्या अब वह अपने विकास का सफर पूरा कर चुकी है? इन दिनों दुनिया के औद्योगिक और कारोबारी शहरों में जिस हाईब्रिड वर्क कल्चर ने डेरा जमाया हुआ है, क्या वह कुछ-कुछ दशकों बाद बार-बार बदलने वाली वर्क कल्चर का आखिरी पड़ाव है? सवाल है कि क्या हाईब्रिड वर्क कल्चर वास्तव में कामकाजी मनुष्य की अल्टीमेट कार्य-संस्कृति है या फिर जैसे औद्योगिक क्रांति के बाद 20वीं सदी में टेलीफोन-टाइपराइटर वर्क कल्चर ने फैक्टरी वर्क कल्चर को गायब होने के लिए मजबूर कर दिया था। फिर टेलीफोन टाइपराइटर कार्य-संस्कृति को कंप्यूटर ऑफिस वर्क की संस्कृति खा गई थी। वह बाद में इंटरनेट और आईटी बूम के बाद गायब हुई और रिमोट वर्क कल्चर ने जन्म लिया। उसके बाद आयी कोविड महामारी में वर्क फ्रॉम होम की परिणति हाईब्रिड वर्क कल्चर में हुई। तो क्या कार्य-संस्कृति का यह लंबा सफर अब खत्म हो चुका है या इसके बाद भी हमें अभी कई कार्य-संस्कृतियां देखने को मिलेंगी?

काम का लचीला और उत्पादक तरीका

अगर विशेषज्ञों की मानें तो यह हाइब्रिड वर्क कल्चर यानी आंशिक रूप से ऑफिस और आंशिक रूप से घर से रिमोट तरीके से किया जाने वाला ऑफिस का काम अंतिम दफ्तरी कार्य-संस्कृति नहीं है। हालांकि फिलहाल इसे भविष्य की वर्क कल्चर के रूप में पेश किया हुआ है। इस संतुलन में बहुत कुछ ऐसा है जैसा अभी तक की कार्य-संस्कृतियों में नहीं था। मसलन यह लचीली कार्य-संस्कृति है। कर्मचारियों को कहीं से भी काम करने की आजादी होती है। साथ ही जरूरी सहयोग

यानी कोलेबरेशन मीटिंग्स के लिए ये सब लोग दफ्तरों में भी हाजिर हैं। उत्पादकता के लिहाज से सबसे शानदार कार्य-संस्कृति है। क्योंकि घर से कर्मचारी दफ्तर के मुकाबले ज्यादा काम करते हैं।

ज्यादा प्रोडक्टिविटी और कम खर्च

हाईब्रिड कार्य-संस्कृति जहां कर्मचारियों को दफ्तर आने-जाने की आजादी देती है, वहीं एम्प्लॉयर को ज्यादा प्रोडक्टिविटी और कम खर्च की सुविधा मुहैया करवाती है। दफ्तरों को चलाने में बिल्कुल मामूली खर्च होता है और नियमित ऑफिस आने के मुकाबले इस तरीके में 15 से 20 फीसदी ज्यादा काम किया मिलता है, जिससे कंपनी की आय भी बढ़ती है। एंप्लॉयर इस तरीके से देश और दुनिया के किसी भी कोने में बैठे कर्मचारियों को अपने यहां रख सकते हैं। हाईब्रिड वर्क कल्चर वर्क-लाइफ बैलेंस में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे कर्मचारियों का निजी जीवन भी बेहतर होता है।

दूर नहीं नई वर्क कल्चर का आगमन

विशेषज्ञों के मुताबिक, इतनी सारी सुविधाओं या फायदों के भी यह दुनिया की आखिरी वर्क कल्चर नहीं है। वे मानते हैं कि बहुत ही जल्द एक नई वर्क कल्चर से दुनिया रूबरू होने जा रही है।

दरअसल वर्क कल्चर हमेशा समाज, टेक्नोलॉजी और अर्थव्यवस्था के हिसाब से बनती, बिगड़ती या बदलती रहती है। विशेषज्ञों के मुताबिक बहुत जल्द महज 2030 तक जिस नई वर्क कल्चर से दुनिया का सामना होने जा रहा है, वह है- फुली वर्चुअल वर्क कल्चर या मेटावर्स वर्कस्पेस। जी हां, थ्रीडी वर्चुअल रिएलिटी के जरिये लोग कहीं बिना यात्रा किये भी भविष्य के कामकाजी जीवन में इस तरह एक-दूसरे से मिलेंगे जैसे वे आमने-सामने बैठे हों। वर्क टास्क इंसानों की बजाय एआई पूरा करेगा और इंसान उसका सुपर विजन करेगा। बहस जारी है कि भविष्य का कार्य सप्ताह चार दिनों का हो या पांच दिनों का। इस तरह भविष्य में कामकाजी घंटे कम हो सकते हैं।

अब दिमागी कमांड से होगा काम!

इसलिए हाईब्रिड वर्क कल्चर को भी ट्राजिशनल स्टेज समझना चाहिए। भविष्य में तकनीकी, प्रगति, सामाजिक जरूरतें और तब के आर्थिक दबाव, नई नई तरह की कार्य-संस्कृतियों को जन्म देंगी। लेकिन फिलहाल किसी भी तरह की कार्य-संस्कृति भौतिक कार्य-संस्कृति ही है, जिसमें इंसान की मौजूदगी होती है और काम किये जाने से सम्पन्न होता है। लेकिन भविष्य में कल्पना की जा रही है कि बहुत से काम सिर्फ सोच लेने से या दिमागी कमांड दे देने से ही पूरे हो जाएंगे, जो जाहिर है आज के किसी भी वर्क कल्चर मॉडल से सूट नहीं करता। इसलिए भविष्य की कार्य-संस्कृति जल्द ही सामने आयेगी और वह इस हाईब्रिड वर्क कल्चर से भी इतनी ज्यादा भिन्न होगी कि हाईब्रिड वर्क कल्चर भी उसे अजनबियों की तरह देखती रह जायेगी। -इ.रि.सें.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

प्रकृति की संजीवनी : विजय गर्ग

मानव सभ्यता का जन्म प्रकृति की गोद में उस काल में हुआ जब हमारे पूर्वज जंगल, नदी, पहाड़ आदि क्षेत्रों के समीप रहते थे। मूल रूप से वे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर थे और कंद-मूल-फल सेवन करते हुए प्रकृति के नियमों के पालक भी थे। व्यक्ति अपने को प्रकृति का अनुयायी मानकर उसके हर मौसमी चक्र से अपने को आत्मसात करना अपनी निर्बाध नियति मानता था। प्राकृतिक रौद्र आज की अपेक्षा उस काल में काफी सीमित थे, क्योंकि लोग प्रकृति से संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता से भी जुड़े हुए थे। सभी मौसम अपने दायित्व संचालन में मानवीय आचरण के विभिन्न पहलुओं से तादात्म्य स्थापित किए हुए थे। अतिवृष्टि और अनावृष्टि की घटनाएं कम हुआ करती थीं, क्योंकि प्रकृति अपने संतान को दुख या विपदा देने की स्थिति से हरसंभव परहेज करती थी। यों कहें कि उस कालखंड में मानव और प्रकृति एक दूसरे के पूरक और सहयोगी माने जाते थे। क्रमशः कृषि के धरती पर आगमन ने मानव प्राणी को एक अलग परिधि से युक्त करते हुए उसकी भूख को कृषि संसाधनों के विविध आयाम से सामंजस्य बनाने में अहम भूमिका निभाई। कृषि के विभिन्न प्रकल्पों के चयन से अनेक किस्म के अनाजों के उत्पादन की विधा रची गई, जिसका मूल आधार प्रकृति प्रदत वर्षा के जल को स्वीकार किया गया।

धीरे-धीरे मानवीय सभ्यता के विकास की गति जब तेज हुई तो हम सबकी आवश्यकताओं में भी स्वाभाविक रूप में वृद्धि के द्वार खुलने लगे। धरती ने व्यक्ति को यह संदेश दिया कि तुम मुझे जो अंश हस्तगत करोगे, उसे मैं कई गुना की मात्रा में वापस कर दूंगी। यह प्रक्रिया आज भी शाश्वत है। एक मुट्ठी बीज रूपी अनाज की वापसी कई किलोग्राम के रूप में हमें धरती से होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश को विकास की दौड़ में आगे बढ़ने की चुनौती और आवश्यकता थी। मानवीय और वित्तीय संसाधनों की सीमा में देश ने अनेक . योजनाओं को शुरू करके विकास की पटकथा लिखना शुरू कर दिया, लेकिन चूक यह हुई कि प्रगति के लक्ष्य-बिंदु को शीघ्रता में स्पर्श करने की अदम्य प्यास ने हमें प्राकृतिक संसाधनों के असीमित भंडार में सेंध लगाने के दुस्साहस से भी लैस कर दिया। इस स्थिति में हम यह आकलन नहीं कर पाए कि विकास का अंतिम लक्ष्य क्या होगा, इसके योजना स्रोत कहीं हमारी प्राकृतिक संपदाओं में क्षरण तो नहीं ला रहे हैं!

अंतहीन विकास का घनघोर जुनून अभी भी हम पर सवार है कि हमारे कदम रुक नहीं पा रहे हैं। आर्थिक और तकनीकी रफ्तार यह मूल्यांकन करने से परहेज कर रहा है कि जिस दिशा में विकास के ध्वज लहराए जा रहे हैं, वे हमारे भविष्य एवं भावी संतति के लिए कितना उपयोगी हैं। वैज्ञानिक प्रयोग ने यह सिद्ध किया है कि हम जो जल पी रहे हैं, अनाज और अन्य खाद्यान्न सामग्री सेवन कर रहे हैं और जो आक्सीजन ले रहे हैं, उसकी बुनियादी क्षमता में तेजी से क्षरण हो रहा है, क्योंकि इसके मूल अस्तित्व के प्रति हमारी मानवीय और पारंपरिक संवेदनाएं एकपक्षीय तौर पर कठोर हो गई हैं। यही कारण है कि विगत कई माह से प्रकृति ने अपने स्वभाव में रूखेपन से यह चेतावनी जारी की है कि समय रहते हम चेत जाएं, अन्यथा उसके रौद्र में और अधिक भयावहता होगी।

हाल में हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर के पर्वतीय क्षेत्रों में जलचक्र के बदलाव के कारण बादल फटने के बाद हुई हृदयविदारक स्थितियां स्तब्ध करने वाली हैं। कभी ऐसे क्षेत्रों में मानवीय गतिविधियां न्यूनतम हुआ करती थीं, लेकिन विगत वर्षों में तथाकथित असंतुलित विकास कार्यों की कड़ी में हुई वृद्धि के कारण बड़ी संख्या में पेड़ों की कटाई, वनों में अग्नि प्रदाह और पर्यटन के लिए अविवेकपूर्ण निर्माण कार्यों ने स्थानीय पारिस्थितिकी को बुरी तरह अपनी चपेट में ले लिया है।

पहाड़ी क्षेत्र के नागरिकों की भी आधुनिक सुख-सुविधाएं और बुनियादी जरूरतें पूरी होनी चाहिए, लेकिन इन्हें मुहैया कराने के मूल्य पर इन क्षेत्रों की नाजुक पर्यावरणीय स्थितियों को भी ध्यान रखना आवश्यक है। विडंबना है कि पर्वतीय क्षेत्रों में वहां के नागरिकों की आवश्यकता से अधिक वहां जाने वाले पर्यटकों की सुविधा की प्राथमिकता हो गई है। नदी और पर्वतीय क्षेत्र को काटकर वहां आलीशान होटल, पनबिजली संयंत्रों, औद्योगिक इकाई आदि के निर्माण ने भारी संकट ला दिया है। वर्ष 2013 में केदारनाथ की घटना में कई हजार यात्री काल के गाल में समा गए थे और धराली की तरह कई गांव बह गए थे। चिंतनीय स्थिति यह है कि पूर्व की आपदा से हम कुछ सीखते नहीं, बल्कि आत्मघाती उदासीनता की चादर ओढ़ कर भाग्य भरोसे हो जाते हैं।

आपदाएं चाहे मानव निर्मित हो या प्राकृतिक, देश की प्रगति को काफी पीछे ले जाती हैं। बाढ़, भूकम्प, अकाल, चक्रवात, भूस्खलन, हिमस्खलन और कोरोना जैसी महामारी जन मानस को असीमित नुकसान पहुंचाते हुए राज्य की आधारभूत संरचनाओं को भी नष्ट कर देती हैं। प्रकृति ने मनुष्य के लिए मिट्टी, जल, हवा और वन संपदा मुहैया कराया है, लेकिन ये श्रृंखलाएं आज टूटती नजर आ रही हैं। जरूरत इस बात की है कि अभी भी हम प्रकृति के अस्तित्व को समझने और स्वीकारने की चेष्टा करें। अन्यथा जब प्रकृति नाराज होकर अपना रौद्र रूप धारण करेगी तो हम सबकी मुस्कान अंधेरे और विनाश में जाने को बाध्य होगी। प्रयास हो कि सुबह के भूले शाम को घर वापसी के तर्ज पर असामान्य होती जीवनशैली में सुधार करते हुए हम प्रकृति के विविध स्वरूपों को जीवन की संजीवनी बूटी की शक्ति के रूप में अपनाएं। स्वार्थ के सागर में भौतिक प्यास सदैव अधूरी ही रही है। सवाल बुनियादी है कि आखिर हम विनाश के दर्पण में विकास का प्रतिबिंब क्यों तलाशें!

वैश्विक पर्यटन केंद्र के रूप में उभर रहा है भारत

रमेश सर्राफ धमोरा

विश्व पर्यटन दिवस मानाने का उद्देश्य वैश्विक उद्योग के रूप में पर्यटन के महत्व तथा इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है। विश्व पर्यटन दिवस मनाने से हमें पर्यटन के हम पर और हमारे आसपास की दुनिया पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद मिलती है। इसमें दुनिया भर में इसके आर्थिक प्रभाव के साथ-साथ नैतिक, नैतिक और पशु कल्याण संबंधी विचार भी शामिल हैं।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) ने विश्व पर्यटन दिवस की स्थापना की। 1980 से हर साल 27 सितंबर को विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है। इसी दिन यूनाइटेड नेशंस वर्ल्ड टूरिज्म ऑर्गनाइजेशन के कानूनों को अपनाया गया था। हर साल विश्व पर्यटन दिवस एक विशेष थीम के साथ मनाया जाता है। 2025 का विषय ₹पर्यटन और हरित निवेश₹ है। यह थीम स्थायी पर्यटन अवसंरचना और परियोजनाओं में निवेश की तत्काल आवश्यकता पर ज़ोर देती है जो समुदायों और अर्थव्यवस्थाओं को समृद्ध बनाने के साथ-साथ हमारे ग्रह की रक्षा में भी मदद करें। हरित निवेश पर्यटन व्यवसायों और यात्रियों दोनों को ऐसे विकल्प चुनने के लिए प्रोत्साहित करता है जो उनके पर्यावरणीय प्रभाव को कम करें। नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दें और सभी के लिए बेहतर भविष्य का निर्माण करें।

विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद (डब्ल्यूटीटीसी) की नवीनतम आर्थिक प्रभाव प्रवृत्ति रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने 2025 में विश्व की सबसे बड़ी पर्यटन अर्थव्यवस्थाओं में अपने पिछले दसवें स्थान से 8वें स्थान पर एक महत्वपूर्ण छलांग लगाई है। रिपोर्ट में वैश्विक यात्रा क्षेत्र में भारत के बढ़ते कद पर प्रकाश डाला गया है और अनुमान है कि अगले दशक में यह चौथे स्थान पर होगा। भारत का पर्यटन क्षेत्र 2025 में 231.6 अरब डॉलर का योगदान देगा जो बुनियादी ढाँचे, विपणन और सेवा वितरण में मज़बूत वृद्धि और रणनीतिक विकास को दर्शाता है। यह बढ़ता रुझान एक वैश्विक पर्यटन केंद्र के रूप में भारत की क्षमता को रेखांकित करता है और आर्थिक विस्तार एवं रोज़गार को बढ़ावा देने में इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है।

देश के लिए बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की कमाई करने में पर्यटन उद्योग का अच्छा खासा महत्व है। पर्यटन जिसे चिमनी विभिन्न उद्योग के नाम से भी जाना जाता हैं। आज भी लाखों लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध करा रहा है। भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में से है जहां कलात्मक, धार्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर दर्शनीय स्थलों एवं कृतियों की कमी नहीं है। यही कारण है कि हजारों मील दूर रहने वाले विदेशी लोग भी पर्यटन के लिए यहां आने का लोभ छोड़ नहीं पाते हैं। यही नहीं देशी पर्यटक भी बड़ी तादाद में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैले देश के विभिन्न पर्यटन केंद्रों पर देखे जा सकते हैं।

यूरोपीय देश जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, इटली और स्पेन प्रमुख खिलाड़ी बने हुए हैं। वहीं हांगकांग एसएआर, मलेशिया और फिलीपींस जैसे एशियाई गंतव्य पर्यटन के प्रमुख केंद्र के रूप में तेज़ी से अपनी पहचान बना रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन खर्च में तीव्र वृद्धि देखने वाले देशों में सऊदी अरब

(+91.3%), तुर्की (+38.2%), केन्या (+33.3%), कोलंबिया (+29.1%), और मिस्र (+22.9%) शामिल हैं।

देश की अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर नजर रखने वाले अर्थशास्त्रियों और नीति निर्धारकों ने लगभग एकमत से स्वीकार किया है कि देश में उपलब्ध पर्यटन क्षमता का समुचित रूप से इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है। इस दिशा में अधिक प्रभावी व कारगर कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। इसी नीति के तहत विभिन्न पर्यटन केंद्रों को प्रमुख छोटे-बड़े शहरों से जोड़ने के लिए दूरसंचार, सड़क और वायु परिवहन की अधिकाधिक सुविधा उपलब्ध कराने के लिए भारी निवेश की व्यवस्था की जा रही है। इसके अलावा परंपरागत पर्यटक केंद्रों के आसपास बुनियादी सुविधाएं व नए पर्यटन केंद्रों को विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है। इस पूरे परिदृश्य से स्पष्ट होता है कि आगामी वर्षों में पर्यटन प्रबंधन तथा पर्यटक से जुड़े अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञों की बड़ी संख्या में मांग होगी। यह अवसर सरकारी से ज्यादा निजी क्षेत्रों में होने की अधिक संभावना जताई जा रही है।

विशेषज्ञों का मानना है कि आगामी दस वर्षों में पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था में भारत का स्थान विश्व में तीसरा हो जाएगा। देश में इस दौरान लगभग एक करोड़ नये रोजगार का इस क्षेत्र में सृजन होने की उम्मीद है। वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म कौंसिल द्वारा जारी रिपोर्ट में इस आशय की संभावनाओं की ओर इशारा किया गया है। अभी देश में लगभग चार करोड़ लोग टूर एंड टूरिज्म इंडस्ट्री के माध्यम से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर आजीविका हासिल कर रहे हैं।

भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है। जहां इसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 6.23 प्रतिशत और भारत के कुल रोजगार में 8.78 प्रतिशत योगदान है। भारत में वार्षिक तौर पर 50 लाख विदेशी पर्यटकों का आगमन और 56 करोड़ घरेलू पर्यटकों द्वारा भ्रमण परिलक्षित होता है। विश्व पर्यटन दिवस एक वार्षिक आयोजन है। जिसका उद्देश्य वैश्विक उद्योग के रूप में पर्यटन के महत्व तथा इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है।

देश में पर्यटन से जुड़े लगभग सभी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ग्रेजुएशन के बाद के स्तर के हैं। विश्वविद्यालयों में पर्यटन क्षेत्र के भावी विस्तार को भांपते हुए पर्यटन शिक्षा विभाग तेजी से विकसित हो रहे हैं। इनमें मास्टर आफ टूरिज्म एडमिनिस्ट्रेशन सरीखे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त निजी प्रशिक्षण संस्थानों में भी अंशकालिक, पूर्णकालिक डिप्लोमा प्रशिक्षण उपलब्ध है। पर्यटन डिप्लोमा डिग्री हासिल करने के बाद स्वरोजगार के क्षेत्र में पदार्पण करने के लिए राहें भी खुलती है। इसीलिए जरूरी नहीं कि लंबे अरसे तक नौकरी के लिए आवेदन भेज कर हाथ पर हाथ रखकर खाली बैठा जाए। टूर ऑपरेटर और ट्रैवल एजेंट जैसे काम बहुत कम पूंजी से शुरू किए जा सकते हैं। जिनमें स्थानीय साइट सीन, पर्यटक भ्रमण कार्यक्रम से लेकर तीर्थ यात्रा टूर, दूरदराज के पर्यटक स्थलों तक आदि मुख्य है।

अब तो विदेशों में स्वीटजरलैंड, पेरिस, थाईलैंड, हॉन्गकांग, सिंगापुर, लंदन, अमेरिका, कनाडा, मालदीप, नेपाल जैसी जगहों के लिए भी पैकेज टूर बनाए जाने लगे हैं। इनमें स्थानीय भ्रमण से लेकर हवाई यात्रा और होटल में ठहरने तक का समस्त खर्च सम्मिलित होता है। तमाम हवाई कंपनियों के अधिकृत टिकट विक्रेता एजेंट के रूप में भी बेची गई टिकटों पर निर्धारित प्रतिशत कमीशन की कमाई की जा सकती है।

आज अधिकांश सरकारी व निजी विश्वविद्यालयों में पर्यटन प्रशिक्षण के कोर्स चलाए जा रहे हैं। इसके अलावा भी देशभर में अनेकों निजी संस्थान पर्यटन के विभिन्न क्षेत्रों का प्रशिक्षण देती है। प्रशिक्षण के पश्चात सर्टिफिकेट भी दिए जाते हैं। राजस्थान पर्यटन विभाग समय-समय पर प्रदेश में गाइडों के प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता है। जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त कर चयनित गाइडों को विभाग द्वारा गाइड का प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है। देश के अन्य राज्यों में भी इसी तरह के विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। जहां अध्ययन व प्रशिक्षण प्राप्त कर व्यक्ति पर्यटन के क्षेत्र में अपना कैरियर बना सकता है।

आज के समय में जहां हर देश की पहली जरूरत अर्थव्यवस्था को मजबूत करना हैं वहीं आज पर्यटन के कारण कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन उद्योग के इर्द-गिर्द घूमती है। यूरोपिय देश, तटीय अफ्रीकी देश, पूर्वी एशियाई देश, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया आदि ऐसे देश है। जहां पर पर्यटन उद्योग से प्राप्त आय वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा क्षेत्र है। जो वैश्विक स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 11 प्रतिशत योगदान देता है।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

लोक प्रशासन विभाग ने 'आम साथी एकीकृत व्हाट्सएप' लॉन्च किया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : सभी सेवाएँ व्हाट्सएप नंबर 9437292000 पर उपलब्ध होंगी। 132 प्रकार की सरकारी सुविधाएँ एक क्लिक पर उपलब्ध होंगी। सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने की ज़रूरत नहीं, घर बैठे आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए लोक प्रशासन विभाग ने 'आम मैय्यप्पन एकीकृत सुविधा व्हाट्सएप' शुरू किया है।इसमें आय प्रमाण पत्र, जन्म और मृत्यु पंजीकरण, कानूनी उत्तराधिकार, निवास और ड्राइविंग लाइसेंस, उर्वरक लाइसेंस, अंतरजातीय विवाह से लाभ, एआरटीओ सेवाएं आदि शामिल होंगी।लोक प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव सुरेन्द्र कुमार ने इस संबंध में जानकारी दी है।

नमो भारत ट्रेन की सेवा होगी और स्मार्ट; ड्रोन, एआई और थर्मल सेंसर से होगी ओएचई की निगरानी

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने दिल्ली-गाज़ियाबाद-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर पर ड्रोन-आधारित ओएचई निगरानी प्रणाली शुरू की है। यह सुरक्षित रेल परिचालन के लिए ओवरहेड इक्विपमेंट (ओएचई) की नियमित निगरानी में सहायक है। हाई-रिजोल्यूशन कैमरों और एआइ-संचालित एनालिटिक्स से लैस ड्रोन से ओएचई की विस्तृत जांच होगी जिससे परिचालन दक्षता बढ़ेगी और यात्रियों के लिए निर्बाध सेवा सुनिश्चित होगी।

नई दिल्ली। सुरक्षित रेल परिचालन के लिए नियमित ओवरहेड इक्विपमेंट (ओएचई) की निगरानी आवश्यक है। इसके लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने दिल्ली-गाज़ियाबाद-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर पर ड्रोन-आधारित ओएचई मानिटरिंग प्रणाली की शुरुआत की है। इससे कम समय में बेहतर तरीके से ओएचई की जांच हो सकेगी। इससे पहले मैन्युअली ओएचई निरीक्षण किया जाता था। इस प्रक्रिया में अधिक समय लगने के साथ ही बड़ी संख्या में कर्मचारियों की भी आवश्यकता होती थी। इसके साथ ही इस प्रक्रिया के दौरान अक्सर ट्रेन परिचालन को रोकना या अस्थायी रूप से बंद करना पड़ता था, जिससे यात्रियों को परेशानी होती थी। अब हाई-रिजोल्यूशन कैमरों, थर्मल सेंसर और एआइ-संचालित एनालिटिक्स से लैस ड्रोन से यह काम शुरू किया गया है। ड्रोन ओवरहेड लाइन की विस्तृत तस्वीर लेते हैं। इससे सटीक और बिना किसी हस्तक्षेप के निरीक्षण किया जा सकता है। इससे ओएचई की ढीली फिटिंग, इन्सुलेशन संबंधी समस्याओं या हॉटस्पॉट जैसी समस्याओं के शुरुआती संकेतों का पता लगाया जा सकता है।

"मुख्यमंत्री मक्का मिशन योजना पर राज्य स्तरीय परामर्श कार्यशाला आयोजित"

- विपणन को सुदृढ़ बनाने हेतु दस किसान उत्पादक संगठनों और मक्का खरीदारों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर-: मुख्यमंत्री मक्का मिशन (एमएमएम) के अंतर्गत पहली "राज्य स्तरीय परामर्श कार्यशाला" आज कृषि भवन सभागार में आयोजित की गई। कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग के प्रधान सचिव डॉ. अरविंद कुमार पाढ़ी ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र में ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. पार्वती कुमार रावल, ओरमास के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री चक्रवर्ती सिंह राठौर, मिशन शक्ति की निदेशक सुश्री मोनिका प्रियदर्शिनी और कृषि एवं खाद्य उत्पादन की अतिरिक्त निदेशक सुश्री लिटी पटनायक ने भाग लिया। कृषि एवं खाद्य उत्पादन निदेशक श्री शुभम सक्सेना ने स्वागत भाषण दिया।

डॉ. अरविंद कुमार पाढ़ी ने मुख्यमंत्री मक्का मिशन की आवश्यकता एवं उद्देश्य की जानकारी देते हुए कहा कि धान के बाद मक्का राज्य की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण फसल मानी जाती है। वर्तमान में, मक्का मिशन 15 जिलों और 45 प्रखंडों में कार्यरत है। यह मिशन विभिन्न सरकारी विभागों जैसे कृषि एवं कृषक सशक्तिकरण, सहकारिता, मिशन शक्ति और ओरमास आदि के बीच सहयोग का एक बेहतरीन उदाहरण है। नियमित क्रेता-विक्रेता बैठकों का मक्का विपणन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नबरंगपुर में स्थापित मक्का आधारित स्टार्च उद्योग, विजयनगर बायो-टेक, राज्य में मक्का की खेती का एक प्रेरक स्रोत बनने जा रहा है।

ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पर्वतु कुमार रावल ने कहा कि राज्य सरकार की इथेनॉल मिश्रण नीति और स्वीट कॉर्न तथा रबेबी कॉर्न के उपयोग से मक्का की खेती के क्षेत्र में एक नया क्षितिज निर्मित हुआ है। भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, CIMMOIT और OUAT जैसे वैज्ञानिक संस्थान मक्का की खेती और मूल्य एकीकरण के लिए तकनीकी सहायता प्रदान कर रहे हैं। कृषि निदेशक श्री शुभम सक्सेना ने देश और हमारे राज्य में मक्का की खेती की स्थिति के बारे में बताया और बताया कि कैसे इस मिशन ने किसान उत्पादक संगठनों और क्लस्टर आधार पर किसानों को मक्का की खेती और विपणन में मदद की है। ओरमास के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री चक्रवर्ती सिंह राठौर ने कहा कि यह मिशन दो एकीकृत आवश्यकताओं, अर्थात् मक्का उत्पादन में वृद्धि और किसानों को बेहतर बाजार मूल्य प्रदान करने, को ध्यान में रखकर शुरू किया गया है। मिशन शक्ति की निदेशक डॉ. मोनिका प्रियदर्शिनी ने कहा कि इस मिशन का उद्देश्य राज्य में मक्का की खेती के क्षेत्र को मजबूत करना और मक्का की खेती के लिए एक मंच तैयार करना है। एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना।

इस अवसर पर, दस किसान उत्पादक संगठनों और मक्का खरीदारों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे मक्का के विपणन को बल मिला है। मिशन के तहत एफपीसी का जिलावार वितरण इस प्रकार है: जशीपुर एफपीसीएल (जशीपुर, मयूरभंज), रानी महास एफपीसीएल (कोमना, नुआपाड़ा), माता डांगरी एफपीसीएल (जूनागढ़, नबरंगपुर), सब्जिमा एफपीसीएल (वैपारीगुडा, कोरापुट), महेंद्रगिरी एफपीसीएल (नुआगढ़, गजपति), सीनेक्स्ट एफपीसीएल (चंपुआ, क्योंझर), सबरी सेतु एफपीसीएल (मैथिली, मलकानगिरी), गुम्पादार एफपीसीएल (के. नुआगांव, कंधमाल), घूमसर एफपीसीएल (जगन्नाथ प्रसाद, गंजम)। जिन दस समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए, उनमें ओडिशा के विभिन्न हिस्सों में संचालित पोल्ट्री फीड उद्योग और इथेनॉल उत्पादन कंपनियां शामिल हैं।

बंगाल के प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सुधारक, लेखक, की जयंती पर हुई गोष्ठी

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

गंजडुण्डवारा। शिक्षा विकास समिति द्वारा पूर्व माध्यमिक विद्यालय थाना रोड मै ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी की जयंती पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक मुहम्मद काशिफ नें चित्र पर माल्यार्पण किया। गोष्ठी मैं काशिफ ने बताया ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (२६ सितम्बर १८२० उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल के प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सुधारक, लेखक, अनुवादक, मुद्रक, प्रकाशक, उद्यमी और परोपकारी व्यक्ति थे। वे बंगाल के पुनर्जागरण के स्तम्भों में से एक थे। उनके बचपन का नाम ईश्वर चन्द्र बन्द्योपाध्याय था। संस्कृत भाषा और दर्शन में अगाध पाण्डित्य के कारण विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की थी। वे नारी शिक्षा के समर्थक थे। उनके प्रयास से ही कलकत्ता में एवं अन्य स्थानों में बहुत अधिक बालिका विद्यालयों की स्थापना हुई। उस समय हिन्दू समाज में विधवाओं की स्थिति बहुत ही शोचनीय थी। उन्होनें विधवा पुनर्विवाह के लिए लोकमत तैयार किया। उन्हीं के प्रयासों से 1856 ई. में विधवा-पुनर्विवाह कानून पारित हुआ। उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह एक विधवा से ही किया। उन्होंने बाल विवाह का भी विरोध किया। गोष्ठी मैं मुहम्मद काशिफ निसार अहमद सूर्यकान्त शर्मा ज्ञानेन्द्र सिंह आलोक पचौरी जितेन्द्र गोला सहित समस्त स्टॉफ मौजूद रहा।

जनकपुरी में पांच कन्याओं का कराया गया विवाह

कमेटी ने प्रत्येक कन्या को टीवी फ्रिज बैड सहित दिए आभूषण

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

गंजडुण्डवारा {अनिल राठौर} कस्बे में आयोजित राम बारात का दृश्य अविस्मरणीय बन गया। राजाराम चौराहे पर बनी जनकपुरी दुल्हन की तरह सजाई गई थी। विद्युत सज्जा, रंग-बिरंगी झालरों और फूलों की बहार से सजे दरबार में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ी। वातावरण ढोल-नगाड़ों और जय श्रीराम के जयघोष से गूंज उठा। जनकपुरी की इस भव्यता के बीच पांच जरूरतमंद कन्याओं का सामूहिक विवाह संपन्न कराया गया, जिसने महोत्सव की शोभा कई गुना बढ़ा दी। महोत्सव के अध्यक्ष अंकित भूषण व महामंत्री स्कंद महाजन व उनकी टीम की ओर से कन्याओं को टीवी, फ्रिज, बैड, बैटरी-इन्वर्टर, साइकिल, प्रेस समेत करीब दो लाख रुपये की लागत का घरेलू सामान और आभूषण भेंट किए गए। इस पुनीत कार्य से जनकपुरी श्रद्धा के साथ-साथ सामाजिक सरोकार का भी प्रतीक बन गई। श्री जनकपुरी महोत्सव का दीप प्रज्वलन कस्बा के पूर्व चेयरमैन संजीवन कुमार महाजन व उदघाटन प्रमुख समाजसेवी मंजीत सिंह राठौर के द्वारा किया गया। साथ ही कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अजय गुप्ता उपस्थित रहे। महोत्सव के अध्यक्ष अंकित भूषण व महामंत्री स्कंद महाजन ने सभी अतिथियों का स्वागत पटका पहना कर किया। राम बारात में पांच दूल्हों का स्वागत परंपरागत ढंग से ढोल-नगाड़ों के बीच हुआ। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की आरती उतारी गई और उनका सांकेतिक विवाह कराया गया। इसके साथ ही पांच कन्याओं का विवाह संपन्न हुआ। इस उत्सव में समस्त श्रद्धालुओं ने जमकर आनंद लिया। इस अवसर पर जनपुरी की भव्यता देखते ही बन रही थी।

बरेली में हुए लाठीचार्ज व आगामी त्यौहारों के मद्देनज़र पुलिस ने किया फ्लैग मार्च....

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

मुरादाबाद। बरेली में लाठीचार्ज और आगामी त्योहारों के मद्देनजर सुरक्षा व्यवस्था को लेकर एसएसपी सतपाल अंतील के नेतृत्व में मुख्य बाजारों में पुलिस का फ्लैग मार्च निकाला गया है, क्यूंकि मुरादाबाद भी संवेदनशील जिलों में से एक है लिहाजा पुलिस के द्वारा अतिरिक्त सावधानी बर्ती जा रही है, फ्लैग मार्च के दौरान पुलिस ने लोगों से शांति व्यवस्था और आपसी भाईचारा बनाए रखने की अपील भी की है तथा अफवाह फैलाने वालों पर कड़ी कार्रवाई करने की चेतावनी भी दी गई है।

फ्लैग मार्च के दौरान की गई अपीलें: *

- शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील
- आपसी भाईचारा बनाए रखने की अपील
- अफवाह फैलाने वालों पर कड़ी कार्रवाई करने की चेतावनी

उत्तर प्रदेश में हाई अलर्ट के मद्देनजर पुलिसकर्मियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। डीजीपी ने पहले से ही त्योहारों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रदेश के सभी जिलों में पुलिस बल की भारी तैनाती का निर्देश दिया है, किसी भी सूरत में लॉ एंड आर्डर कायम रखना पुलिस का पहला प्रयास हैं...

सपा नेताओं को मिली जमानत, जुगेंद्र सिंह यादव जेल से रिहा: पूर्व विधायक रामेश्वर यादव और जुगेंद्र सिंह को हाईकोर्ट से मिली राहत

रिपोर्ट अंकित गुप्ता एटा

समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक रामेश्वर सिंह यादव और उनके भाई जुगेंद्र सिंह यादव को हाईकोर्ट से जमानत मिल गई है। एटा जिला कारागार में बंद मौजूदा जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रेखा यादव के पति पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जुगेंद्र सिंह यादव शुक्रवार को जेल से रिहा हो गए। वह करीब तीन वर्ष से एटा जिला कारागार में बंद थे। उन्हें लूट, जमीन कब्जाने, दुष्कर्म और गैंगस्टर सहित सात मुकदमों में उच्च न्यायालय से जमानत मिली है। जमानत मिलने के बाद हजारों की संख्या में समर्थक जेल और न्यायालय के बाहर जमा हो गए। जेल से रिहा होने के बाद जुगेंद्र सिंह यादव जिला पंचायत सभागार पहुंचे। जहां उन्होंने अपने समर्थकों, शुभचिंतक कार्यकर्ताओं, और मीडिया कर्मियों से विनम्र निवेदन करते हुए कहा कि लंबे समय बाद आज में आप सभी के सामने हूँ। लेकिन आज मैं आप सब के सवालों के परिप्रेक्ष्य में कुछ नहीं कहूंगा। इसके लिए जल्द ही आपको प्रेस कॉन्फ्रेंस में बुलाकर जो भी आपके सवाल होंगे, उनका में जवाब दूँगा। इस दौरान पूर्व चेयरमैन व एसपी जिलाध्यक्ष रहे अशरफ हुसैन, जहीर अहमद, इंतजार अली, डॉ ओमेन्द्र सिंह, राम बृजेश यादव, छोटू यादव जिला पंचायत सदस्य, नगर पालिका सभासद सुनील यादव, जिला पंचायत सदस्य नेम सिंह राजपूत सहित सैंकड़ों की संख्या में समर्थकों की भीड़ जिला पंचायत कैम्पस में देर तक ज़मी रही।

एटा के पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष सपा नेता जुगेन्द्र सिंह यादव की एटा जेल से हुई रिहाई...

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

जेल से निकलने के बाद मीडिया से बोले जुगेन्द्र सिंह यादव...

ये जनता की दुआएं हैं,और न्यायालय को मैं धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने न्याय किया है ये असत्य पर सत्य की जीत हुई है...

24 सितंबर 2025 को इलाहबाद की एम पी, एमएलए कोर्ट से गैंगस्टर और एससीएसटी एक्ट सहित 4 मुक़दमों मे हुई थी सपा नेता जुगेन्द्र सिंह की जमानत मंजूर...

9 मार्च 2023 को मथुरा से हुई थी सपा नेता जुगेन्द्र यादव की गिरफ़्तारी...

पुलिस अधीक्षक कासगंज द्वारा जनपद में कानून एवं शान्ति व्यवस्था को और अधिक सुदृण बनाने हेतु थाना कासगंज क्षेत्रान्तर्गत पुलिस बल के साथ किया गया पैदल गश्त

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

जनपद-कासगंज। पुलिस अधीक्षक कासगंज द्वारा जनपद में कानून एवं शान्ति व्यवस्था को और अधिक सुदृण बनाने हेतु थाना कासगंज क्षेत्रान्तर्गत पुलिस बल के साथ किया गया पैदल गश्त ।

अवगत कराना है कि आज दिनांक 26-09.2025 को पुलिस अधीक्षक कासंगज सुश्री अंकिता शर्मा द्वारा जनपद में कानून एवं शान्ति व्यवस्था, जुमे की नमाज, शारदीय नवरात्रि पर्व एवं आगामी त्यौहारों के दृष्टिगत कस्बा कासगंज में पुलिस बल के साथ पैदल गश्त किया गया । इस दौरान महोदया द्वारा सभी जनपद वासियों से अपील की गयी कि त्यौहारों को शान्ति एवं शौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाये, साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म (एक्स, फेसबुक, इन्स्टांग्राम, यू ट्यूब आदि) पर किसी भी प्रकार की अफवाह ना फैलायें।जनपदीय पुलिस टीम द्वारा 24*7 सोशल मीडिया की सतत निगरानी की जा रही है । अफवाह फैलाने वालों के विरुद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही अमल में लायी जायेगी। इस दौरान क्षेत्राधिकारी नगर सुश्री आँचल चौहान एवं प्रभारी निरीक्षक कासगंज व प्रभारी महिला थाना मय पुलिस बल के मौजूद रहे ।

इसी क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक कासगंज श्री सुशील कुमार द्वारा क्षेत्राधिकारी पटियाली श्री संदीप वर्मा संग थाना गंजडुण्डवारा क्षेत्रान्तर्गत कानून एवं शान्ति व्यवस्था के दृष्टिगत पुलिस बल के साथ पैदल गश्त किया गया । इस दौरान प्रभारी निरीक्षक गंजडुण्डवारा एवं अन्य पुलिस अधिकारी/ कर्मचारीगण आदि मौजूद रहे ।

जिस दुर्गा की तलवारें अंग्रेजों को युनियन जैक फहराने नहीं दी उसी देवी मां बेघर हैं आज सरायकेला में

राजा से लेकर ओड़िया खंड़ायतों की अराध्या देवी सरायकेला में घोर उपेक्षित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

ये वही राजा है जिनके पूर्वज शाक्तेय भी रहे तथा 16 दिनो तक शारदीय पूजा ओडिशा के तर्ज पर करते आ रहे हैं सैकड़ों वर्षों से । उनके पूर्वज स्वतंत्र भारत वर्ष मे अपना राज्य विधिवत विलय ओडिशा में रखने हेतु किया । जहां मुगल, मराठा, अंग्रेजों का यूनियन जैक कभी नहीं फहरा सका , कारण उसके सैन्यकर्मी उत्कलीय खड़ायत रहे सरायकेला में ।यहां ओडिशा की भांती उनके घरों में भी खंडा धुआ उत्सव दुर्गा पूजा में मनता । आज पाइक अखाड़े, ढाल तलवार को देश ढूंढ रहा पर वे किस कदर उपेक्षित यह सरायकेला में सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता ।

यहां सभी राजा से लेकर प्रजा ,सैन्य परिवारों मजबूर है माता वनदुर्गा को नाली एवं सड़क पर पूजन कर अपने राजा को आवाहन करते देख । क्योकि सरायकेला स्थित वनदुर्गा का आवासीय स्थली को 1972-75 के बीच तत्कालीन बिहार सरकार के अधिकारियों ने पेयजलापूर्ति विभाग को अधिग्रहित करा कर पक्की दीवार के हाते में लिया ठीक उसी प्रकार भूल गया जिस प्रकार 1847 के एक बर्ष बाद उसे सरायकेला को बिहार सरकार को लौटाना था । यह जगह वही रहा जहां कभी उसी दुर्गा देवी की माली के घर निकट हुआ करता था ,माली इसलिए कि माताराणी माली से फुल पहनती थी । पर निकट माता की उक्त वन स्थली जहां वह रहती थी अब स्थली को पी एच डी ने अपने कब्जे मे ले रखा हुआ है ।

ऐसा इसलिए हुआ कारण सरायकेला का विधिवत विलय 15 दिसंबर 1947 को ओडिशा में रखे जाने हेतु कटक में सरदार पटेल के समक्ष होता है ।जिस पर बिहार सरकार के कद्दावर नेताओं ऐवं तत्कालीन केंद्रीय नेताओं षड्यंत्र के जरिये ठीक उसके एक पखवाड़े के बाद

एक ऐसी घटना निकट खरसावां में सुनियोजित तरीके से अंजाम दी गयी थी जो आज भी प्रासंगिक हैं ।जिसपर आजतक नतो कोई आयोग बैठ पाया है न ही एफ आई आर किसी ने देखा है । परिणाम यह होता है कि इलाका बिहार में रह जाता । जब चंद वर्ष बाद इसकी सच्चाई सरदार वल्लभ भाई पटेल को होती हो वे बिहार सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह को तलब करने नही चुकते । यह दुर्भाग्य सरायकेला का रहा कि पटेल शीघ्र ही इस जहां से विदा ले लेते हैं ।जिससे बिहार सरकार को रोक टोक करने वाला ऊपर में कोई नहीं रह जाते है । नतीजा यह होता है

जहां आज आम जनता तो क्या उनकी देवियां की जमीन एवं पूजा स्थल , पूजा अर्चना तार तार हुई है ।

गत वर्ष 2017मे ठीक इसके पास विभाग ने एक सैफ्टी टैंक बनवा दी किसी स्थानीय से विमर्श किये वगैर । तब कार्यपालिक अभियंता मिश्रा जी रहे जो पुरे चाईबासा को लुटके यहां आये थे और हजारो शिकायतों के बाद उनकी पीठ वरीय अधिकारी, उपायुक्त आदि थपथपाते रहे न जाने किनका वरद हस्त उनपर था !!

विजया दशमी के दिन राजा माता दुर्गा को पुनः यहीं ला कर छोड़ देगें कर कारण यह उनका रहने का आवास है पर वास्तविक स्थिती कुछ और है ।, जब शक्ति संपन्ना दुर्गा ही मजबूर हो इंसान के मल मे जीने को तो आप सहज अंदाजा लगा सकते स्थानीय ओड़िया भाषियों का क्या कद्र रह गयी 1947 के बाद बिहार फिर झारखंड में आज ।

आज भी जरुरत है निराकरण की, कारण यह विलय दस्तावेज में स्पष्ट लिखा है स्थानीय वासियों के भावनाओं को उनके सामाजिक, सांस्कृतिक रिवाजों को अक्षुण बनाते रखने के लिए । उस विलय दस्तावेज की हैसियत इनती ऊची है जिसे संवैधानिक रूप से कोर्ट में चैलेंज नहीं किया जा सकता, कारण उन 562 देशी रियासतों एवं अंग्रेज भारत का भारतीय अधिराज्य मे विलय के बंद एक गणतांत्रिक राष्ट्र जो बना । जहां आज का अपना संविधान सर्वोपरि है ।

सरायकेला में16दिनों का दुर्गा पूजा आज भी जारी है जो ओडिआओं का गजपतिय रियासती देवी पूजन की संस्कृति है , बिहार से लेकर अब झारखंड में तार तार होते देखा जा सकता है इसे । बात यहीं नहीं खत्म होती जिस उत्कल का पाइक सैन्य परंपरा ऐतिहासिक रही है । जगन्नाथ एवं विमला समेत सभी उत्कलीय 26 रियासतों का धरोहर है उसे स्थानीय तलवार धारक खंडायत भी ठीक उसी प्रकार खंडाधुआ मनाते हैं सरायकेला स्टेट में ।आज उनकी बात जानने वाला महज इसलिये कोई नहीं रह गया कारण इतिहास के गर्त में छुपा सच्चाई कहीं सामने न जाय ।

सरहद पार से नशीले पदार्थ और हथियारों की तस्करी में शामिल छह व्यक्ति 4 किलो हेरोइन और दो पिस्तौल सहित गिरफ्तार

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों के ज़रिए पाकिस्तान के हैंडलर शाह के संपर्क में थे गिरफ्तार किये गए आरोपी

पाकिस्तानी तस्करों द्वारा खेमकरण और फिरोज़पुर सेक्टरों में ड्रोन के माध्यम से भेजी जा रही थी हेरोइन और हथियारों की खेप : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, 26 सितंबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के दिशा-निर्देशों के तहत पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए चल रहे अभियान के दौरान गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने सरहद पार से चल रहे बड़े नशा और हथियार तस्करी नेटवर्क के छह सदस्यों को 4.03 किलो हेरोइन और 2 अत्याधुनिक पिस्तौल के साथ गिरफ्तार कर गिरोह को निष्क्रिय कर दिया है। यह जानकारी पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने आज यहां दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान फिरोज़पुर के गांव मुल्ला रहीमा उतार निवासी जगीर सिंह उर्फ सुच्चा (35), फिरोज़पुर के गांव चाह बोहरिया निवासी अंग्रेज़ सिंह (20), तरनतारन के मस्तगढ़ निवासी गुरप्रीत सिंह (30), तरनतारन के मस्तगढ़ निवासी पलविंदर सिंह (35), फिरोज़पुर की घिननीवाला कैनाल कॉलोनी निवासी लखविंदर सिंह उर्फ लक्की (24) और फिरोज़पुर की नौरंग के स्याल कैनाल कॉलोनी निवासी बलजिंदर सिंह (42) के रूप में हुई है। बरामद पिस्तौलों में एक 9 एमएम ग्लॉक और एक .30 बोर पिस्तौल शामिल है।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि गिरफ्तार आरोपी सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों के माध्यम से पाकिस्तान स्थित हैंडलर शाह के संपर्क में थे। उन्होंने कहा कि आरोपी खेमकरण और फिरोज़पुर क्षेत्रों में पाकिस्तानी तस्करों द्वारा ड्रोन से भेजी गई हेरोइन और हथियारों की खेप प्राप्त करते थे, जिन्हें आगे अमृतसर क्षेत्र में सप्लाई किया जाता था।

डीजीपी ने कहा कि इस मामले में पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश करने और अगले-पिछले संबंधों को उजागर करने के लिए और जांच की जा रही है।

ऑपरेशन संबंधी विवरण साझा करते हुए पुलिस आयुक्त (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए संदेहास्पद जगीर और अंग्रेज़ - जो चचेरे भाई हैं और फिरोज़पुर में एक ढाबा चलाते हैं - को पहले 220 ग्राम हेरोइन और एक ग्लॉक पिस्तौल के साथ गिरफ्तार किया गया। उन्होंने कहा कि इन दोनों से पूछताछ और खुलासे के बाद आरोपियों गुरप्रीत, पलविंदर, लखविंदर और बलजिंदर को नामज़द कर गिरफ्तार किया गया।

सीपी ने कहा कि जगीर, पलविंदर और गुरप्रीत के खुलासे पर एक .30 बोर पिस्तौल समेत 2.813 किलो हेरोइन बरामद की गई। गिरफ्तार आरोपियों लखविंदर और बलजिंदर से पूछताछ करने पर 1 किलो हेरोइन और बरामद हुई, जिससे कुल बरामदगी 4.03 किलो हो गई है। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां और बरामदगियां होने की संभावना है।

इस संबंध में पुलिस थाना गेट इस्लामाबाद अमृतसर में धारा 21(बी)(सी) और 29 एनडीपीएस एक्ट तथा आर्म्स एक्ट की धारा 25(1) के तहत एफआईआर नंबर 286 दिनांक 21.09.2025 दर्ज किया गया है।

बालू स्टॉक यार्ड संचालकों के साथ उपायुक्त की अध्यक्षता में बैठक संपन्न बैठक में हुई पुलिस की शिक़ायत ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, समाहरणालय सभा कक्ष में उपायुक्त नितिश कुमार सिंह की अध्यक्षता में जिले के बालू स्टॉक यार्ड संचालकों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी, खान निरीक्षक समीर कुमार ओझा एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित रहें।

बैठक में स्टॉक यार्ड संचालकों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं, उनके समाधान तथा विधिसम्मत बालू उठाव एवं विक्रय से संबंधित सुझावों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।

ईचागढ़ क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न बालू स्टॉक यार्ड संचालकों ने अवगत कराया कि विधिसम्मत परमिट रहने के बावजूद थाना स्तर पर अनावश्यक रूप से वाहनों को रोका जाता है, जिससे वाहन मालिकों एवं चालकों के बीच असुरक्षा एवं भय की स्थिति उत्पन्न होती है।

इस पर उपायुक्त ने संचालकों को आश्वस्त किया कि उठाई गई समस्याओं का शीघ्र समाधान किया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि विधिसम्मत बालू उठाव एवं परिवहन को बढ़ावा देने के लिए जिला प्रशासन पूर्णतः प्रतिबद्ध है। साथ ही यह भी निर्देश दिया गया कि स्टॉक यार्ड संचालक आमजन को बालू की उपलब्धता सुगम एवं उचित दरों पर सुनिश्चित करें, ताकि जिलेवासियों को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े।

उपायुक्त ने उपस्थित बालू स्टॉक यार्ड संचालकों को यह भी निर्देश दिया कि भविष्य में यदि किसी प्रकार की समस्या या परिस्थिति उत्पन्न होती है तो वे तत्काल जिला खनन पदाधिकारी अथवा जिला खनन टोल फ्री नंबर – 1800-345-6532 पर सूचना दें, ताकि जिला स्तर से शीघ्र निराकरण की दिशा में आवश्यक कार्रवाई की जा सके।

सवाल आता है आखिर पुलिस की क्यो हुई शिक़ायत ? क्या यहां बालू की अवैध परिवहन या स्टोकिगं होता है यहां । इलाका अति संवेदनशील है यहां माओवादियों द्वारा पांच पुलिस की हत्या तक हुई थी पांच साल पहले । यह इलाका बंगाल से सटा हुआ बताया जाता है जहां से अयोध्या हील के रास्ते बालू माफिया सक्रिय भागीदारी निभाते आये हैं, पुलिस की कार्यप्रणाली जायज या नाजायज इसे देखेगा कौन । वैसे जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी ईमानदारी बरतें हुए है पर उनके के पास पर्याप्त मानव संसाधन की घोर अभाव होने के साथ वहां के मूल निवासी व्यवसाई कितने है, कितने बाहरी। किनके इशारे ऐसे करते हैं यह बडे नेताओं का विषयवस्तु है छोटों की नहीं । हां इलाके में विना पुलिस इजाजत के एक ट्रेक्टर तक नहीं चलता चाहे जायज चले या नाजायज ! आगे बात आती है परिवहन विभाग की भूमिका की ....

आयु कोई बाधा नहीं, हर उम्र में प्रतिभा खिल सकती है" –ममता सोनी

राजधानी में 40 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लिए राष्ट्रीय टैलेंट प्रतियोगिता आयोजित

डॉ. शंभू पंवार

नई दिल्ली। राजधानी में "एक्सक्लूसिव एंड एक्स्ट्राऑर्डिनरी" इवेंट्स में 40 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग के पुरुषों व महिलाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर की प्रतिभा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में देशभर से आए आईपीएस अधिकारी, डॉक्टर, उद्यमी, सेवानिवृत्त कर्नल, कलाकार एवं जानी-मानी हस्तियों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध लेखिका, ग़ज़लकारा एवं कला भारती फाउंडेशन की संस्थापक ममता सोनी ने कहा—आयु केवल एक संख्या है, यह कभी भी प्रतिभा के मार्ग में रुकावट नहीं बन सकती। अक्सर हम जीवन की आपाधापी, करियर की दौड़ और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ तले अपने भीतर छिपी कला और रचनात्मकता को दबा देते हैं। परंतु जब जीवन के इस पड़ाव पर हमें स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है, तो आत्मविश्वास कई गुना बढ़ जाता है। सोनी ने कहा यह मंच उन सभी के लिए एक नई शुरुआत है, जिन्होंने कभी अपने सपनों को अधूरा छोड़ दिया था। यहाँ आकर न केवल वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सके, बल्कि समाज के सामने यह संदेश भी दे सके कि हर उम्र में जीवन को नए रंगों से सजाया जा सकता है।

इस तरह के आयोजन न केवल आत्म-अभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं, बल्कि सामुदायिक सहयोग, प्रेरणा और सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण भी निर्मित करते हैं। मेरा विश्वास है कि आज यहाँ से जो ऊर्जा और उत्साह प्रतिभागियों को मिला है, वह उनके जीवन की आने वाली यात्रा को और अधिक सार्थक और प्रेरणादायी बनाएगा। उन्होंने इस उत्कृष्ट आयोजन के लिए आयोजक सन्ना सैनी का हार्दिक आभार व्यक्त किया और कहा कि ऐसे प्रयास समाज के लिए एक प्रेरक मिसाल हैं।प्रतियोगिता में विजेता इस प्रकार रहे –40 वर्ष से अधिक पुरुष वर्ग : डॉ. अजीत अटकर (विजेता), राजरत्न अंबेडकर (प्रथम उपविजेता), विनोद कुमार (द्वितीय उपविजेता),50 वर्ष से अधिक पुरुष वर्ग : राम मनोहर मिश्रा (विजेता), कर्नल गौरव चंद्रा (प्रथम उपविजेता), देवेंद्र जैन (द्वितीय उपविजेता),60 वर्ष से अधिक पुरुष वर्ग : डॉ. रामकी रॉकी (विजेता) रहे। इस राष्ट्रीय आयोजन ने अनेक प्रतिभागियों के जीवन में नया उत्साह, आत्मविश्वास और प्रेरणा का संचार किया।

डॉ. शम्भू पंवार (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक

सहायक प्राध्यापक, चिकित्सक, दंत चिकित्सकों को मुख्यमंत्री ने सौंपा नियुक्ति पत्र

आपकी नियुक्ति भगवान के रूप में हो रही है :हेमंत सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। धरती पर 'भगवान' के रूप में आपकी नियुक्ति हो रही है। आपसे इस राज्य की गरीब, कमजोर और असहाय जनता को काफी आशा और उम्मीदें हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप अपनी सेवा भावना से यहां की स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत और बेहतर करेंगे। मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन आज झारखंड मंत्रालय में स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग की ओर से आयोजित नियुक्ति पत्र वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे । इस अवसर पर उन्होंने 160 सहायक प्राध्यापकों, दन्त चिकित्सकों एवं चिकित्सा पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र सौंपा। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की स्वास्थ्य संरचना मजबूत करने की दिशा में चिकित्सा पदाधिकारियों की नियुक्ति एक बड़ा कदम है।

मुख्यमंत्री ने नवनियुक्त चिकित्सा पदाधिकारियों से कहा कि आपने अपने कैरियर के रूप में स्वास्थ्य के क्षेत्र को चुना है। आपको बेहतर भविष्य बनाने के लिए आगे भी कई अवसर मिलेंगे। मेरा मानना है कि स्वास्थ्य एक ऐसा क्षेत्र है, जहां आपकी सेवाएं काफी मायने रखती है। आप जिस सोच के साथ इस क्षेत्र में आए हैं , वैसे में यहां की गरीब और असहाय जनता के प्रति आपकी संवेदनाएं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे पास संसाधन सीमित है। लेकिन, इन सीमित संसाधनों के बीच भी करने के लिए काफी कुछ है , मुख्यमंत्री ने कहा कि मरीजों को जितना इलाज की जरूरत है, उतना ही आपकी संवेदना और सेवा की भी । आप अपने व्यवहार और प्रभाव से मरीजों को काफी हद तक बेहतर माहौल दे सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र में नित्य नई चुनौतियां आ रही हैं। इसके लिए चिकित्सा के क्षेत्र बेहतर करने के लिए निरंतर अनुसंधान भी हो रहे हैं। इस दिशा में चिकित्सकों की काफी अहम भूमिका है। सरकार ने भी एक ऐसी व्यवस्था बनाई है, जिसमें आप सभी का सहयोग लेकर स्वास्थ्य संरचना को मजबूत करना है, ताकि लोगों को बेहतर इलाज के लिए संसाधन और सुविधाएं मिल सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज नई-नई बीमारियां सामने आ रही हैं। लोग अलग-अलग बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। मेरा मानना है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में ऐसी समस्याएं मनुष्य द्वारा ही पैदा की जा रही है। ऐसे में इसका समाधान भी हम सभी को मिलकर करना है। मुख्यमंत्री ने इस सिलसिले में कोविड-19 का जिक्र किया ।चिकित्सकों के कार्यों और सेवाओं का आकलन कर बेहतर कार्य करने वालों को सम्मानित किए जाने की परंपरा शुरू करे। इससे उनका मनोबल बढ़ेगा और वे अपना बेहतर देने के लिए प्रेरित ।

मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य विभाग के नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में 160 चिकित्सकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। इनमें जेपीएससी द्वारा नियुक्त 54 सहायक प्राध्यापक, एनएचएम के द्वारा अनुबंध पर नियुक्त 55 विशेषज्ञ चिकित्सा पदाधिकारी, 38 चिकित्सा पदाधिकारी तथा 13 दंत चिकित्सक शामिल हैं।

इस बैठक में स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह, अभियान निदेशक , एनएचएम शशि प्रकाश झा, एमडी , जेएमएचआईडीपी अबु इमरान एवं स्वास्थ्य विभाग की विशेष सचिव डॉ नेहा अरोड़ा मौजूद थी।

युवक सेवाएँ विभाग ने रेड रिबन क्लबों की एडवोकेसी मीटिंग आयोजित की

- अब ज़िले के 25 कॉलेजों में चलेंगे रेड रिबन क्लब -मुख्यालय से प्राप्त अनुदान का क्लबों को वितरण

–प्रत्येक रेड रिबन क्लब को कम से कम एक रक्तदान शिविर और नशा मुक्ति जागरूकता शिविर अवश्य आयोजित करना चाहिए : प्रीत कोहली

अमृतसर, 26 सितंबर (साहिल बेरी)

युवा सेवा विभाग अमृतसर के सहायक निदेशक, प्रीत कोहली ने ज़िले के सभी रेड रिबन क्लबों के कार्यक्रम अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रत्येक संस्था सत्र 2025-26 के दौरान कम से कम एक रक्तदान शिविर अवश्य आयोजित करे। वे आज स्थानीय खालसा कॉलेज अमृतसर में रेड रिबन क्लबों की एडवोकेसी मीटिंग को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान, मुख्यालय से प्राप्त अनुदान भी सभी रेड रिबन क्लबों के कार्यक्रम अधिकारियों और प्रतिनिधियों को वितरित किया गया और ज़िले के रेड रिबन क्लबों को 2025-26 के दौरान किए जाने वाले कार्यों से अवगत कराया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत खालसा कॉलेज अमृतसर के कॉलेज शबद से हुई। कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. आत्म सिंह रंधावा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि खालसा कॉलेज ऐसे कार्यों के लिए सदैव तत्पर रहता है और जब भी हमें अवसर मिलेगा, हम विभाग की मदद के लिए तत्पर रहेंगे। उनके साथ डीन अकादमिक मामले डॉ. तमिंदर सिंह और रजिस्ट्रार डॉ. दविंदर सिंह भी उपस्थित थे। उन्होंने भी अपने विचार साझा किए।

सहायक निदेशक युवा सेवाएं ने सत्र 2024-25 के दौरान आयोजित ग्राम गतिविधियों की समीक्षा की, साथ ही वर्ष 2025-26 के दौरान रेड रिबन क्लबों के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी भी दी। इस कार्यक्रम के दौरान अमृतसर जिले के 25 रेड रिबन नोडल अधिकारियों के अलावा विभिन्न कॉलेजों के 52 से अधिक सहकर्मी शिक्षक भी उपस्थित थे।

सहायक निदेशक प्रीत कोहली ने कहा कि इन क्लबों के संचालन से जिले के कॉलेजों, नर्सिंग कॉलेजों, पॉलिटेक्निक कॉलेजों के साथ सीधा संपर्क स्थापित हुआ है और विभाग की अन्य गतिविधियाँ भी इन संस्थानों में अच्छे तरीके से संचालित हो रही हैं। प्रीत कोहली ने बताया कि 19 सितंबर 2025 को 5 किलोमीटर की जिला स्तरीय मिनी मैराथन का आयोजन किया गया था और उस मैराथन में सबसे अधिक प्रतिभागियों को भेजने के लिए डॉ. अमरिंदर सिंह गुरु नानक देव विश्वविद्यालय परिसर अमृतसर को प्रथम स्थान और प्रो. रणदीप सिंह कॉलेज अमृतसर को द्वितीय स्थान के लिए सम्मानित किया गया।

इसके अलावा, वर्ष 2024-25 के कार्यों के आधार पर जिले के 5 सर्वश्रेष्ठ रेड रिबन क्लबों का चयन किया गया, जिन्होंने पिछले सत्र के दौरान शानदार गतिविधियाँ आयोजित कीं, जिनमें प्रो. मुस्कान सास कॉलेज ऑफ कॉमर्स, डॉ. बिंदु शर्मा खालसा कॉलेज ऑफ एजुकेशन अमृतसर, प्रो. सोनिका ठाकुर जीएनडीयू कॉलेज वेरका, साक्षी शर्मा आनंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, प्रो. नवनीत कौर सिडाना इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन को विशेष सम्मान और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

इस अवसर पर जिला एड्स नियंत्रण अधिकारी राज कुमार ने अपनी टीम के सहयोग से नोडल अधिकारियों को एचआईवी और नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया। उन्होंने सभी कॉलेजों से छात्रों को अपने-अपने कॉलेजों में इस तरह के सेमिनार आयोजित करने के लिए प्रेरित करने को कहा।

इस कार्यक्रम के दूसरे वक्ता, प्रीत कोहली ने छात्रों के साथ रक्तदान, नेत्रदान और अंगदान पर चर्चा की। अपने संक्षिप्त और महत्वपूर्ण भाषण के दौरान, उन्होंने छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया और उनमें मानवता की भावना जागृत की।

इस अवसर पर, रेड रिबन क्लब खालसा कॉलेज अमृतसर के नोडल अधिकारी डॉ. रणदीप सिंह और डॉ. किरणदीप कौर ने सभी अतिथियों का सम्मान किया। इस अवसर पर जिले के सभी कॉलेजों के नोडल अधिकारियों के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

'पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के जन्मदिन पर सांसद गुरजीत सिंह औजला ने किया 'नमन

कहा – हर साल उनके जन्मदिन और पुण्यतिथी पर करवाए जाएं स्कूलों में समारोह

डा .मनमोहन सिंह की जीवनी पर फैलोशिप के लिए अमृतसर की हरसिमरन कौर सिलेक्ट हुई

अमृतसर 26 सितंबर (साहिल बेरी)

अमृतसर। सांसद गुरजीत सिंह औजला ने आज अपने कार्यालय में देश के पूर्व प्रधानमंत्री डा.मनमोहन सिंह को उनके जन्मदिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि वे भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन 2004 से 2014 तक पीएम रहे मनमोहन सिंह को देश के लिए उनके योगदान और उनके विनम्र स्वभाव को लोग आज भी याद करते हैं। इस दौरान सांसद औजला ने यह भी बताया कि डा.मनमोहन सिंह के जीवन पर कांग्रेस की ओर से करवाई जा रही फैलोशिप के लिए देश से 50 लोग, पंजाब से 3 सिलेक्ट किए गए हैं जिसमें से अमृतसर की हरसिमनरन कोहली को भी सिलेक्ट किया गया। ऐसे विद्वान डा.मनमोहन सिंह के जीवन को और भी गहराइयों से रिसर्च करेंगे और दुनियां के सामने रखेंगे।

सांसद औजला ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री और अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. मनमोहन सिंह के जन्मदिन के अवसर पर आज विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों में उनके जीवन और कार्यों पर व्याख्यान तथा प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। जो कि बेहद खुशी की बात है। उन्होंने ने कहा कि युवा पीढ़ी को उनके योगदान से अवगत कराना आज का सबसे बड़ा कर्तव्य है और यही वजह है कि आयोजनों को केवल एक-दिन के समारोह तक सीमित न रखें — बल्कि हर वर्ष उनके जन्मदिन 26 सितंबर और उनकी पुण्यतिथि 26 दिसंबर को नियमित रूप से मनाया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक विद्यालय और कॉलेज अपने स्तर पर डॉ. सिंह की जीवनगाथा, उनके अर्थशास्त्रीय योगदान और नीति-निर्माण के पहलुओं को पढ़ाई और समारोह का हिस्सा बनाएँ — ताकि बच्चों में विचारशील नेतृत्व के गुण विकसित हों। उन्होंने कहा कि इससे आने वाले समय में कई मनमोहन सिंह बनकर निकलेंगे और देश तरक्की करेगा।

कांग्रेस सांसद गुरजीत सिंह औजला ने सभा को संबोधित करते हुए केंद्र सरकार पर पक्षपात के आरोप लगाए और कहा कि Dr. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार में व्यवहार उचित नहीं था। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार को उनके आवास को संरक्षित करने और उनकी उपलब्धियों को सार्वजनिक रूप से सम्मानित करने के साथ-साथ उनके जीवन और दृष्टि को देश के युवा वर्ग तक पहुँचाने में भूमिका निभानी चाहिए।

औजला ने प्रवासियों, क़ानून-व्यवस्था और समुदाय के बीच की ज़िम्मेदारियों पर भी जोर दिया — कहा कि अपराध करने वालों को व्यक्तिगत रूप से दंडित किया जाना चाहिए, पूरे समुदाय को दोषी ठहराना ठीक नहीं। वे बोले कि पंजाब की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता का सम्मान होना चाहिए और किसी भी प्रकार की नफ़रत या समुदाय-विशेष को निशाना बनाकर समाज को विभाजित नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने पुलिस क्लीयरेंस और अन्यों प्रशासनिक सुधारों की भी वकालत की ताकि सामाजिक जवाबदेही और इंसाफ़ सुनिश्चित हो सके।

सांसद गुरजीत सिंह औजला ने पंजाब सरकार से भी कहा कि वे डॉ. मनमोहन सिंह के नाम पर शैक्षिक कार्यक्रम, स्मृति दिवस तथा उनके आवास का संरक्षण सुनिश्चित कराएँ, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ एक दूरदर्शी, शांतचित्त और देशहितैषी नेता के आदर्शों से प्रेरित हो सकें।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**